मासिक
जय हाटकेश वाणी
जून 2014 | वर्ष : 9 अंक : 1
jaihaatkeshvani.com
विशेष :
दक्षिण भारत नागर परिवार
विवरण एवं निर्देशिका
मूल्य ₹10

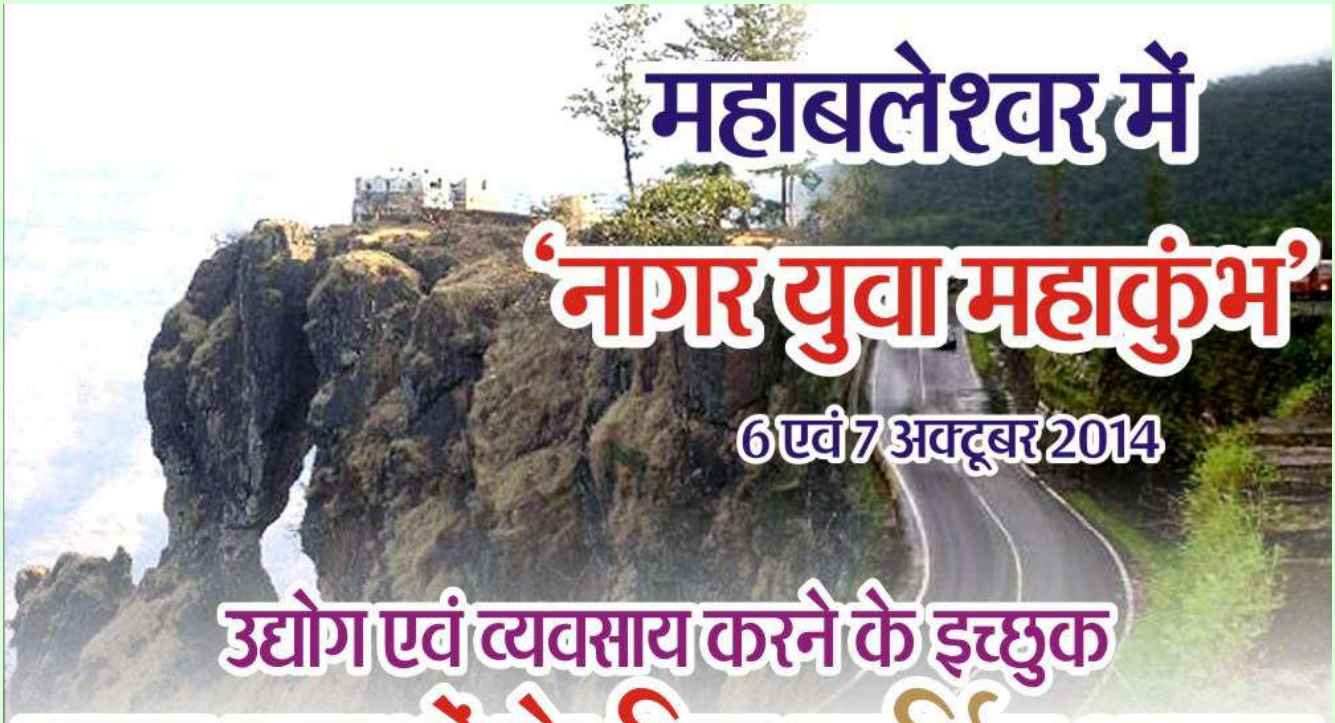

महाबलेश्वर में
'नागर युवा महाकुंभ'

6 एवं 7 अक्टूबर 2014

उद्योग एवं व्यवसाय करने के इच्छुक
नागर युवाओं के लिए स्वर्णिम अवसर

विशेष आकर्षण

सम्पूर्ण भारत से एकत्र नागर युवाओं (युवक-युवती) का समागम, मेल-मिलाप, सफल नागर उद्योगपतियों, व्यवसायियों के साथ विभिन्न विषयों पर परिचर्चा एवं मार्गदर्शन। परस्पर व्यावसायिक एवं औद्योगिक साझेदारी की संभावनाओं पर विचार विमर्श। सांस्कृतिक संध्या। महाबलेश्वर भ्रमण।

सहयोग राशि सिर्फ 4100/- रुपए
दो रात्रि, तीन दिन
स्टार केटेगरी होटल में ठहरना,
भ्रमण एवं भोजन सहित
(आयु समूह-25 से 45 वर्ष)

इच्छुक समाजबंधु संपर्क करें

दीपक शर्मा : 094250 63129

देवांग नागर : 074980 45153

संस्थापक

श्री शिवप्रसादजी शर्मा श्रीमती प्रभा शर्मा

प्रेरणा स्त्रोत

श्री गोवर्धनलालजी मेहता

श्री विष्णुप्रसादजी नागर

संरक्षक

पं. श्री कमलकिशोरजी नागर, सेमली मालवा
पं.श्री आर.के. झा, कोलकाता
पं.श्री रवीन्द्रजी नागर, नईदिल्ली
पं.श्री पुरुषोत्तमजी (परेश) पी.नागर, मुंबई
पं.श्री महेन्द्रजी नागर, बैंगलोर
पं.श्री नवरत्नजी व्यास, हैदराबाद
पं.श्री हरिप्रसादजी नागर, अकलेरा (राज.)
पं.श्री नरेशजी राजा, अहमदाबाद
पं.श्री सुभाषजी व्यास, भोपाल
पं.श्री ओमप्रकाशजी मेहता, भोपाल
पं.श्री प्रेमनारायणजी नागर, शिवपुरी
पं.श्री सुनीलजी मेहता, मन्दसौर
पं.श्री कांताप्रसादजी नागर, दास्ताखेड़ी
पं.श्री सुरेन्द्रजी मेहता (सुमन), उज्जैन
पं.श्री दिनेशजी शर्मा, इटावा (तराना)
पं.श्री कृष्णानंदजी मेहता, खण्डवा

प्रधान सम्पादक
सौ.संगीता दीपक शर्मा
सम्पादक
सौ.दिव्या अमिताभ मंडलोई
सौ. दमिता नवीन झा
विज्ञापन एवं वितरण
सौ. सीमा मनीष शर्मा
मो.99265 63129

सम्पादक वाणी...

कर्म ही महान है...

विगत माह मई 2014 में प्रकाशित लेख वडनगर का नाम श्रीनगर भी था के अनुसार नागर ब्राह्मण बंधन हारा... बंधारा या श्रीनगरा हमारे ही भाई है। नागर ब्राह्मण समाज के लिए यह चिंतन का विषय होना चाहिए कि जब समाज के युवक-युवती अंतरजातीय विवाह धड़ल्ले से कर रहे हैं तब भी हमारे समाज के घड़े एक क्यों नहीं हो रहे हैं? श्रेष्ठता और अश्रेष्ठता का द्वंद्व कब खत्म होगा? अखिल भारतीय नागर परिषद ने बंधनहारा नागर ब्राह्मण समाज का पूर्ण इतिहास खंगाल लिया है तथा उन्हें नागर ब्राह्मण समाज के अन्य वर्गों की तरह मान्यता दे दी है। तब भी समग्र गुजरात का एक संगठन युवक-युवती परिचय सम्मेलन में उनकी प्रविष्टियां क्यों सम्मिलित नहीं कर रहा है? आज के परिप्रेक्ष्य में मैं सबसे बड़ा समाजसेवी उसे कहूंगी, जो रूढ़ियों और गलत परम्पराओं को तोड़ रहा है और इसी कलम-कागज के द्वारा मैं जसवंतपुरा के मूल निवासी एवं व्यवसाय के सिलसिले में बैंगलोर में बसे श्री महेन्द्र भाई नागर एवं उनके पूरे परिवार का अभिनंदन-वंदन करती हूं। उन्होंने अपनी बेटी का विवाह गुजराती नागर समाज के पंडित परिवार में किया। यह बात सही है कि जो भी व्यक्ति परम्पराओं को तोड़ेगा उसकी आलोचना जरूर होगी, परन्तु समाज में सुधार भी तो तभी होगा। आज जरूरत इस बात की है कि हम सब नागर वर्ग एक हों तथा आपस में विवाह सम्बन्धों को प्राथमिकता दें। इस मायने में जय हाटकेश वाणी एक कदम आगे बढ़कर सभी नागर वर्गों को संगठित कर रही है। बंधन हारा नागर परिवारों को भी पत्रिका में पूर्ण महत्व दिया जाता है, उनके लेख एवं रचनाएं तो प्रकाशित होते ही है, विवाह योग्य युवक-युवतियों के परिचय भी प्रकाशित किए जाते हैं और हम गर्व से कह सकते हैं कि हमने एक कदम बढ़ाया तो श्रीनगरा नागर जिनके 1100 से अधिक परिवार पूरे भारतवर्ष में है, उन्होंने हमें स्वीकार किया बल्कि अपने दिल में जगह दी। मनुष्य जन्म से नहीं कर्म से महान बनता है तथा बंधारा नागर समाज ने यह प्रमाणित कर दिखाया है। अपने परिश्रम, संस्कार एवं दृढ़ इच्छा शक्ति से इस समुदाय ने अपने आपको स्थापित किया है। मेरा निवेदन है आप सब नागरजनों से कि हम सब संगठित हो, आपस में प्रेम बढ़ाए, रिश्ते बनाएं तथा अपने समाज को भारतवर्ष ही नहीं पूरे विश्व में गौरव दिलाएं। बंधनहारा नागर समाज के बारे में विस्तृत विवरण हेतु आप "दक्षिण भारत में नागर ब्राह्मण समाज का विस्तार" लेख भी अवश्य पढ़ें।

– संगीता दीपक शर्मा

जय हाटकेश वाणी

सम्पर्क : अवन्तिका परिसर, 20, जूनी कसेरा बाखल (खजूरी बाजार), इन्दौर-452002
फोन : 0731-2450018, मो.94250-63129, 98260-95995, 99262-85002
Website : www.jaihaatkeshvani.com, / E-mail : jayhotkeshvani@gmail.com / manibhaisharma@gmail.com

RYDAK®

(RED)

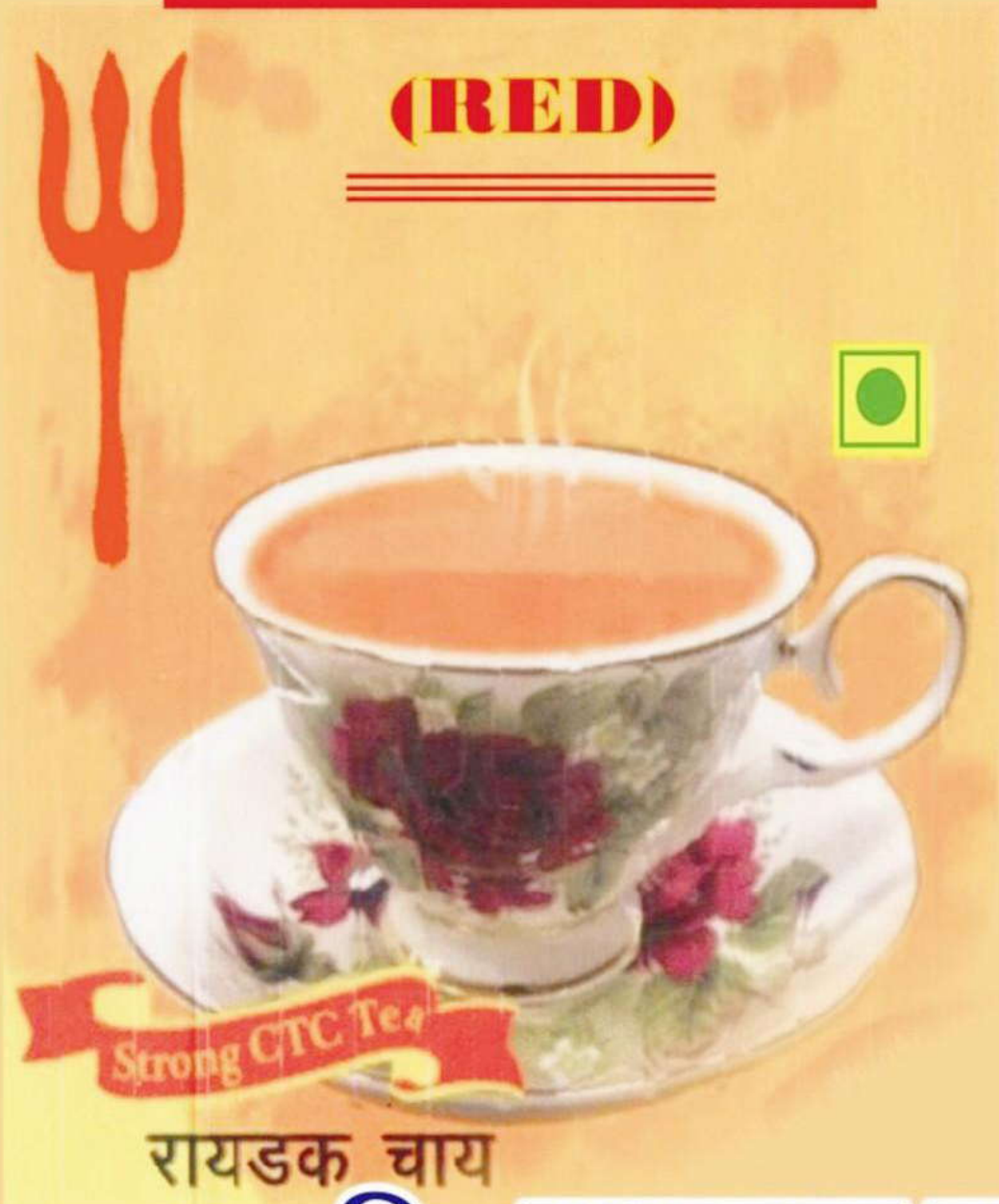

रायडक चाय

कड़क स्वादिष्ट रायडक चाय

Marketed By : KANT & COMPANY LTD.

75, DR. RAJENDRA PRASAD SARANI, KOLKATA - 700001, PH.NO. 22309925

Local Address-

KANT & COMPANY LIMITED

306, Nariman Point, 96, Maharani Road, INDORE Mo.9300126194

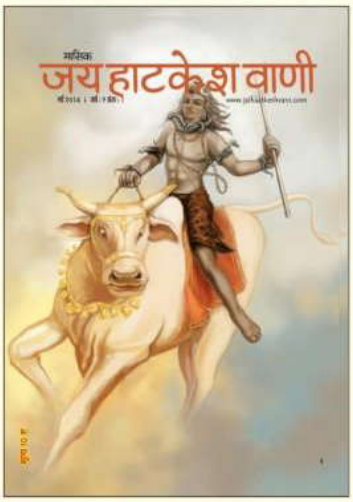

व्यक्तिगत समाजसेवा निषेध है?

मैं जोर देकर यह बात कहूंगी कि आज के दौर में बड़ी समाजसेवा रूढियों एवं परम्पराओं को तोड़ना है। नागर समाज के अखिल भारतीय संगठन जिनमें एक दिल्ली से तथा दूसरा अहमदाबाद से हो रहे हैं। संयोग से इनके नेतृत्वकर्ता उच्च समृद्ध परिवारों से सम्बद्ध है, अत: वे नागर समाज के पिछड़े एवं गांव में बसे परिवारों की जरूरतें नहीं समझ सकते। मध्य प्रदेश को लो या अन्य राज्यों को, ज्यादातर नागर परिवार गुजरात से आने के बाद गांवों में बसे, वे बाद में शिक्षित होने के पश्चात शहरों में आए तथा अपने आपको आर्थिक रूप से स्थापित किया। समाज में व्यवसायी, उद्योगपति एवं समृद्ध परिवार तो आज भी उंगलियों पर ही गिने जा सकते हैं। नतीजतन समृद्ध नेतृत्वकर्ता इन समाजजनों की जरूरतें, आशाएं तथा वास्तविकता समझ ही नहीं सकते। दूसरी तरफ अपने कारोबार में व्यस्तता के चलते वरिष्ठ पद लेने के बावजूद अपने गृह नगर से वे बाहर नहीं निकल सकते। जिसके कारण सामाजिक संगठनों के माध्यम से समाजोत्थान के कार्य में गतिरोध सा आ गया है। प्रादेशिक स्तर पर यदि देखा जाए तो कई प्रदेश या शहरों में अनेकानेक संगठन काम कर रहे हैं तो कई प्रदेश बिल्कुल खाली पड़े हैं। उदाहरण के लिए राजस्थान उत्तर प्रदेश में बड़ी संख्या में नागर परिवार होने के बावजूद कोई संगठन ही नहीं है। तथा मुंबई-अहमदाबाद जैसे महानगरों में अनेकानेक संगठन सक्रिय हैं। ऐसी स्थिति में समाज को संगठित कर उसे राष्ट्रीय मानचित्र पर अंकित करने का काम कौन करेगा? समाज में कुछेक संगठन ऐसे भी हैं जो एकाध तयशुदा कार्यक्रम साल में करवाकर अपनी पहचान बनाए हुए हैं लेकिन इनकी कार्यप्रणाली समाज को जोड़ने की नहीं है। अखिल भारतीय नागर परिषद हो या राष्ट्रीय नागर ब्राह्मण प्रतिष्ठान इन्हें ऐसा नेतृत्वकर्ता चाहिए जो सभी नागर बहुल शहरों में जाकर समाज को संगठित कर सके वहां की इकाइयों को सक्रिय कर सके। केवल कार्यक्रमों में जाकर भाषण बाजी से काम नहीं चलेगा।

मासिक जय हाटकेश वाणी आज देशभर में प्रसारित सामाजिक पत्रिका है, तथा समाज को संगठित करने के साथ विवाह संबंध जोड़ने, चिकित्सा एवं शिक्षा कोष चलाने, सामाजिक आयोजनों को सक्रिय सहयोग देने के कार्य में लगी है, इस पत्रिका के बारे में यह प्रचार करना हैं कि यह व्यक्तिगत है, पारिवारिक है। यह फैसला समाजजनों को करना पड़ेगा कि समाज के संगठन अधिक कारगर है या यह पत्रिका, जिसका उद्देश्य है समाजजनों को येन-केन-प्रकारेण लाभान्वित करनाा। मैं तो वास्तविक समाजसेवी उसी को कहूंगी जो परम्पराओं को तोड़ दे, नए आयाम दें... आलोचना से न घबराएं तथा समाजजनों से दिल से जुड़े। **-सम्पादक**

सदस्यता/नवीनीकरण आवेदन पत्र

मै _____

डाक का पूरा पता (पिनकोड सहित) _____

_____

मासिक जय हाटकेश वाणी का आजीवन सदस्य बनना चाहता हूँ। जिसके लिए निर्धारित आजीवन सदस्यता शुल्क 550 रु. नगद/चैक/ड्राफ्ट या आपके बैंक अकाउंट द्वारा निम्नलिखित पते पर भेज रहा हूँ। मैंने यह शुल्क आपके खाते 'जय हाटकेश वाणी' केनरा बैंक शाखा गोराकुण्ड, एम.जी. रोड, इन्दौर में खाता क्रमांक-0325201004027 में जमा किया है।

संपर्क-**जय हाटकेश वाणी**, 20, जूनी कसेरा बाखल (खजूरी बाजार) इन्दौर-452002

फोन-0731-2450018/मो.99262 85002/99265 63129

www.haatkeshvani.com/ Email : jayhotkeshvani@gmail.com/manibhaisharma@gmail.com

|| श्री गणेशाय नमः ||

पूज्य पिताश्री स्व. जोईतारामजी

ओउम् भूर्भुवः स्वः
तत्स वितुर्वरेण्यम
भर्गो देवस्य धीमहिः
धियोयोनः प्रचोदयात्

पूज्य मातुश्री स्व. पार्वती देवी

Sri Radhe International

Wholesale Dealers in :
Self Adhesive Tapes Foam Tapes & Office Stationery

891, "Nanda Gokula Complex" (Jatka Stend),
Nagarthpet Main Road, BENGALURU-560 002.
Ph. 080-22225035, 40971926, Mo. 09480071000 / 09480073000 (Hitesh)
Email : sriradhe3333@gmail.com

Shubham Fashions

A House of
Designer Saree,
Chudi &
Westerns Wears

O.B.S. Road, Gangavathi-583227 (KA)
Mo. 8867406351 (Nitesh)

स्व. पार्वती देवी स्व. जोईतारामजी नागर परिवार उम्मेदाबाद (जालोर) राजस्थान

Pradeep Naagar 93425-33174
Ashwin Naagar 97311-63164

PRADEEP DISTRIBUTORS

Dealers :

VAMA CREAM (INDORE) & Pharmaceulticals, Generics, Cosmetics, Surgical and General Items

STOCKIST FOR :

BERTOLLI OLIVE OIL & FIGARO EXTA VIRGIN OLIVE OIL

"SRI MANJUNATHA KRUPA", NO.48/4, 1ST FLOOR, RAGHAVENDRA COLONY, 5TH MAIN ROAD, CHAMARAJPET, BANGALORE-560 018

Bheru Mehta 99640 20642
Dashrath 93438 33656

Sheetal Exports

Wholesale Dealers in Surplus Fabrics

No.82/9, 6th Cross, 2nd Main Road,
R.C. Puram, Bangalore-560021

NAGAR FAMILY

KARTHIK JEWELLERS
NAGAR FINANCE

Old Post Office Road Chitradurga-577501

HARI DARSHAN FINANCE

Tulsi kunj, Raghvendra Swamy Muth Road
Chitradurga 577501

CHAGANLALJI NAGAR, 9449279271
RAJENDAR NAGAR, 9972477542
ARJUN NAGAR, 9945679882

केले में भी फांस

वाणी के मई 14 के अंक में प्रकाशित स्ववाणी हां हम हैं व्यापारी पढ़कर बड़ी पीड़ा पहुंची। लोग केले में भी फांस बताते हैं। एक अच्छे कार्य के प्रति भी अपनी ओछी मानसिकता का परिचय देते हैं। क्या संकीर्ण भावना है, अविवेकी दृष्टिकोण है कि समाज सेवा के नाम से व्यवसाय कर रहे हैं, लाखों रुपए कमाकर ऐश कर रहे हैं। इन्हें क्या कहें। कितने शब्दों से नवाजे। धिक्कार है, ओछे विचारों से जीना जीवन का अपमान है। यह केंकड़ा वृत्ति नहीं तो और क्या है?

सब अच्छे से जानते हैं हाटकेश वाणी ने समाज को क्या दिया है? एक स्वस्थ सुन्दर अभिव्यक्ति का मंच, समाज को जोड़ने का अनुपम प्रयास, सामाजिक गतिविधियों के संचालन व प्रकाशन का माध्यम, ट्रस्ट के माध्यम से रोगग्रस्त लोगों को आर्थिक सहायता, समाज की प्रतिभाओं का यशोगान, स्वस्थ वैचारिक सद्विचारों को प्रोत्साहन, सामाजिक परम्पराओं का निर्वहन, सामूहिक विवाह योग्य युवक-युवतियों का परिचय, सामूहिक यज्ञोपवित संस्कार, उज्जैन में धर्मशाला व मंदिर निर्माण हेतु निमित्त बनना आदि एक शब्द में कहूं तो हाटकेशवाणी आज हमारे समाज का दर्पण है। फिर यह वैचारिक दरिद्रता, कुंठित मानसिकता वाणी के प्रति विच्छेषता नहीं तो ओर क्या है।

अरे नागर एक जाति नहीं, एक परम्परा है, प्रतिभाओं का पिटारा है। चतुर, सभ्य शिष्ट व्यक्तित्व अर्थात भला आदमी। यहीं तो हमारी पहचान है। नागरों में धरती जैसा धैर्य अग्नि जैसा तेज, वायु जैसा वेग, जल जैसी शीतलता व चंचलता और आकाश जैसी विराटता होती ही है। हमारा अतीत देख लो या आज के समय में हर क्षेत्र में हमारा डंका बजता हुआ सुन लो। कोई प्रतिभाओं किसी भी क्षेत्र में किसी से कम नहीं है। ब्रह्म तेज, मेधा, प्रज्ञा, विवेक, प्रतिभा गौरव और गरिमा यही तो नागरों के महान गुण हैं।

जिसकी आलोचना होती है समझो वे उन्नति कर रहे हैं। आलोचना हो पर स्वस्थ, स्वच्छ व वास्तविक ताकि बल मिले। देखो न श्रीराम को नहीं छोड़ा, भक्त नरसिंह मेहता का कई-कई बार अपमान, अरे ओर छोड़ो मेरे पूज्य पं. कमलकिशोर जी नागर (सेमली आश्रम) जैसे विद्वान प्रतिभा की निन्दा मैंने खुद मेरे कानों से सुनी है। किन्तु प्रतिभा किसी की मोहताज नहीं होती। रात दिन एक करना, सुख की कामना का त्याग, कड़ी मेहनत लगन निष्ठा के साथ कर्तव्यनिष्ठा, समाज सेवा की भावना सबका हित, लेकर ही उच्च शिखर पाया जा सकता है। बाधाओं से रुके नहीं, संकटों से झुके नहीं निन्दाओं से विचलित न हों, बढ़े चलें। पूरा समाज आपके साथ है। भरपूर सहयोग है राय परामर्श हेतु तत्पर हैं। सुधी व प्रबुद्ध पाठकों की दुआएं सदा आपके साथ है। जय हाटकेशवाणी खूब चले, खूब बढ़े, खूब पढ़ें और खूब प्रगति करें। मेरी हृदय से बार-बार ढेर सारी शुभकामनाएं।

– रमेश रावल
डेलची, माकड़ोन

हां मैंने भी कमाया है जय हाटकेश वाणी से लाभ

जय हाटकेश वाणी के माध्यम से समाज को देश-विदेश में निवासरत नागर परिवार एवं सामाजिक, धार्मिक एवं पारिवारिक गतिविधियों की जानकारी प्राप्त हो सके। प्रदेश, देश एवं विदेश में निवासरत नागर समाज का एकीकरण होकर अपनी शक्ति का प्रदर्शन करें।

इसी उद्देश्य को लेकर जय हाटकेश वाणी का प्रकाशन आदरणीया प्रभा देवी (बेन) द्वारा इसी उद्देश्य से किया गया था। धन कमाने हेतु नहीं।

जिसे श्री दीपक शर्मा, श्री पवन शर्मा, श्री मनीष शर्मा ने पूरे परिवार के साथ अथक प्रयासों से 6 वर्षों के अल्प समय में अन्तराष्ट्रीय पत्रिका का दर्जा प्राप्त करवाकर पूरा किया है।

नागर समाज झाबुआ का एक सीमित दायरा था, (थान्दला, पेटलावद, झाबुआ, पिटोल) 2009 में जय हाटकेश वाणी से मेरा सम्पर्क हुआ, झाबुआ जिले में पत्रिका के प्रचार-प्रसार हेतु तत्कालीन कोषाध्यक्ष श्री सुभाष नागर ने भी मेरे साथ जिले का भ्रमण कर सदस्यता अभियान में सहयोग दिया।

जय हाटकेशवाणी के माध्यम से मेरा भी परिचय इन्दौर, शाजापुर, भोपाल, उज्जैन, मन्दसौर, नीमच, अहमदाबाद, अम्बाजी, जुनागढ़, राजकोट, मुम्बई, दिल्ली, इलाहाबाद, राजस्थान, दक्षिण भारत, उत्तर प्रदेश एवं अन्य प्रान्तों के समाजजनों एवं समाज प्रमुखों से परिचय प्राप्त कर आनंद का अनुभव हुआ।

जय हाटकेश वाणी को सादर धन्यवाद...

जय हाटकेश वाणी से आप भी लाभ कमाएं आलोचना कर विघ्नसंतोषी बनने से बचें।

मैंने भी कमाया है यह लाभ-
अनजाने शहरों में मिलता है, अपनापन और आदर सत्कार।
हां यह कमाया है, मैंने जय हाटकेश वाणी से लाभ।।

– राजेश नागर झाबुआ 94251-02276

Ph. : 08194-223553
Keerthi : 94491-77053
Mahendra : 94481-23074

Shandilya Distributors

Wholesale Dealers:
Surat Sarees,
Banaras,
Calcutta,
Mumbai
all types of Sarees & Dress Materials

Ph. : 08194-223051
Vishnu : 94489-48607
Babulal Nagar : 94499-73910

Hari Handlooms

Wholesale Dealers:
Mill Goods,
Handlooms &
all Hosiery Items

MKV Plaza, Fort Road, CHITRADURGA-577 501

Dhanraj 9483990766
Lalith 9036519447

HARIKRUPA Distributors

Wholesale Dealers in Kolkatta, Delhi, Ludhiyana, Bombay & All Types Readymade Garments

HARI DARSHAN
Wholesale Shuting Sharting

Sairam Complex, M.G. Circle, CHITRADURGA-577 501

दक्षिण भारत में नागर ब्राह्मण समाज का विस्तार

राजस्थान के जालोर, सिरोही एवं पाली जिले से बाहर निकलकर सबसे ज्यादा अहमदाबाद एवं देश के अन्य हिस्सों में फैले श्रीनगर नागर ब्राह्मण समाज के परिवारों में आज भी अनेक विशेष्ताएं मौजूद हैं। दक्षिण भारत में (मुंबई को छोड़कर) लगभग 100 परिवार, कर्नाटक, तमिलनाडु एवं आंध्रप्रदेश में निवास कर रहे हैं। बताया जाता है कि कई वर्षों पूर्व इनमें से कुछ परिवारों के पूर्वज जैन या अन्य समाज के लोगों के साथ भोजन बनाने के लिए दक्षिण भारत के विभिन्न स्थानों पर आए थे। समय के साथ-साथ इन्होंने अपने स्वयं के व्यवसाय खड़े किए फिर अपने परिवार या रिश्तेदारों को भी यहां बुलवा लिया। आज इस क्षेत्र में कई नागरजनों ने अपने आपको स्थापित कर लिया है या यह कहा जाए कि उनकी धाक है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। इन्होंने अपना व्यवसाय जमाने के साथ ही अभाव के कारण पढ़ाई न कर पाने के बदले अपनी सन्तानों को पढ़ाने एवं उच्च शिक्षा दिलाने पर जोर दिया। नतीजतन आज नई पीढी में डॉक्टर सीए एवं उच्च शिक्षित युवाओं की बड़ी संख्या है। इन समाज बंधुओं ने महानगरों में बसने के बावजूद संस्कारों को जीवित रखा और अपनी जड़ नहीं छोड़ी। अर्थात गांव में स्थित अपने मकानों को छोड़ा नहीं, समृद्धि के साथ मकानों का जीर्णोद्धार करवा लिया तथा कोई भी मांगलिक आयोजन वे अपने गांव जाकर ही करना पसंद करते हैं सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि गांव में आयोजित कार्यक्रम में देशभर में फैले रिश्तेदार खुशी के साथ सम्मिलित होते हैं। ये सब सामाजिक कार्यक्रम भी समय-समय पर आयोजित करते हैं तथा उसमें दूर-दूर से आकर सब सम्मिलित होते हैं। नागर परिवार के सभी वरिष्ठ सदस्य पूर्ण मर्यादा के साथ घर में रहते हैं तथा गृहणियां घूंघट प्रथा का आज भी पालन कर रही है, उसी परम्परा अनुसार युवा पीढ़ी भी सुसंस्कारित हैं तथा पढ़ाई या नौकरी के सिलसिले में दूसरे शहरों में रहने के बावजूद परिवार की मयार्दाओं का पालन करते हैं। सभी परिवार धार्मिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों में तन-मन-धन से हिस्सा लेते हैं। खासकर हवन-पूजन में विशेष रूचि रहती है तथा समाज के विशेष मंदिरों तथा कुलदेवी-देवताओं के स्थान पर जाकर धार्मिक आयोजन हवन करते रहते हैं, इन पर चूंकि जैन समाज की संस्कृति का प्रभाव है अत: धार्मिक आयोजन के विशेष अवसरों की बोली लगाई जाती है। अपने राजस्थान स्थित गांव से बाहर आकर अन्य शहरों में बस जाने या अपने सीमित संख्यक होने कोई भी कारण हो, ये आपस में सम्पर्क में बने रहते हैं। महानगरों में दूर-दूर रहने के बावजूद ये आधुनिक संचार साधनों से आपस में जुड़े रहते हैं। दक्षिण भारत के तीन राज्यों में बसे नागर ब्राह्मण समाज ने स्नेह एवं निकटता बढ़ाने के उद्देश्य से 22 मार्च 2006 को होली मिलन समारोह का प्रथम आयोजन जागेश्वर महादेव मंदिर अलसूर में किया था, जहां भगवान शंकर का रूद्राभिषेक किया गया तथा समाजेत्थान के बारे में चर्चा की गई। इस कार्यक्रम में अ.भा. नागर परिषद के श्री दिलीप भाई मांकड एवं श्री जयकांत भाई छाया ने भी उपस्थिति दर्ज कराई थी।

समाज को आगे बढ़ाने तथा आपस में विचार-विमर्श का सिलसिला चलते रहना चाहिए। इसी विचार के मद्देनजर दक्षिण भारत नागर ब्राह्मण समाज ने पुन: द्वितीय स्नेह मिलन कार्यक्रम 20-21 एवं 22 जून 2014 को तिरूपति बालाजी में आयोजित किया। उपरोक्त आयोजन की रूपरेखा बनाने से लेकर उसे मूर्त रूप देने हेतु समाजजनों ने तन-मन-धन से सहयोग दिया। अत: आप सभी का आभार।

महाप्रसादी के सहयोगी

श्री आरासणा अम्बाजी, जय श्री कृष्ण

स्व. श्रीमती जमना देवी देशमल जी खुशालजी

पुत्र-पौत्र: मांगीलाल जी, श्यामलालजी, चेतनकुमार, जगदीशकुमार, विशाल पृथ्वी, रिषभ वाघेला परिवार (बरलूट) चित्रदुर्ग, श्रीमान छगनलालजी पूनमचंदजी, बेटा पोता श्री राजेन्द्रकुमार, अर्जुन, युगराज, अनीषकुमार, एकलव्य शान्डीलिया परिवार (मण्डवारिया) चित्रदुर्ग, श्रीमान अमीचंद जी प्रागाजी बेटा पोता पुखराज, डायालाल, लक्ष्मण, दिनेश, राकेश, भावेश, तरूण, मिथुन, पवन, हर्षद, निखिल, महेश, हर्षिल शान्डीलिया परिवार (मण्डवारिया) चित्रदुर्ग, सोहनलालजी पूनमजी बेटा पोता कनैयालाल, दशरथकुमार, भरतकुमार, अशोककुमार, जगदीशकुमार, लक्षित, किर्तन, निलेश, आदित्य, केशव शान्डीलिया परिवार (मण्डवारिया) चित्रदुर्ग, प्रतापचंदजी, प्रवीणकुमार, किरणकुमार, चेतनकुमार, अरुण, जुशान्त बेटा पोता स्व. श्री ओटमलजी वजाजी शान्डीलिया परिवार (बरलूट) चित्रदुर्ग, स्व. श्रीमती गंगादेवी ओटमलजी आवला परिवार (जालोर) बेंगलोर

अल्पाहार के सहयोगी

श्रीमान मोहनलालजी हुकमीचंदजी, हिम्मतमलजी, महेन्द्रकुमारजी, सचिन, तुशार, गिरीश, संजय, पंकज, विवेक, रोनक, आदित्य बेटा पोता श्रीमती केसीदेवी, जीवराजजी आसोटिया (जालोर) चित्रदुर्ग, श्रीमान सावलचंदजी, नारायणलाजी, उत्तमचंद, मदनगोपाल, मुकेश, नवीन, विपुल, अक्षय, यश, धीरज, हर्षित, दिशान्त, बेटा पोता स्व. श्री शंकरलालजी प्रागाजी शान्डीलिया परिवार (मण्डवारिया) चित्रदुर्ग, लक्ष्मणकुमारजी, हस्तीमलजी, देवीचंदजी, श्रवणकुमारजी, बेटा पोता स्व. श्री खासाजी (जावाल) काटगी

अल्पाहार के सहयोगी

श्रीमान प्रताचंदजी, प्रवीणकुमार, किरणकुमार, चेतनकुमार, अरुण, जुशान्त बेटा पोता स्व. श्री ओटमलजी वजाजी शान्डीलिया परिवार (बरलूट) चित्रदुर्ग श्रीमान वेदमित्र, कमलेश, पनकुमार बेटा पोता स्व. श्री नेनमलजी मनाजी (वराडा) सिन्दनुर, गंगाधरजी,

स्व. श्री पिताम्बरलालजी उदयरामजी

स्व. श्रीमती मीराबाई पिताम्बरलालजी

जसवंतपुरा (जिला जालोर)

चि. वैभव नागर

(सुपुत्र-सौ. गीतादेवी-श्री मदनलाल (महेन्द्र) नागर)

बैगलौर द्वारा एमबीबीएस परीक्षा सर्वोत्तम अंकों से उत्तीर्ण कर प्री पीजी परीक्षा की तैयारी हेतु अध्ययनरत है। वैभव की इस उपलब्धि से परिवार एवं समाज गौरवान्वित हुआ है।

बधाई...

शुभकामना...

शुभाशीर्वाद...

मासिक जय हाटकेश वाणी परिवार...

प्रतिष्ठान- विष्णुप्रसाद मदनलाल
गोविंदलाल नागर
मो. 076651 47511
जसवंतपुरा (राज.)

मारवल इंटरनेशनल, बैंगलोर
मदनलाल नागर (महेंद्र भाई)
मो. 093428 16914
विनोद कुमार नागर
मो. 094499 74791

मयुर मार्केटिंग प्रा.लि. मुंबई
पुरुषोत्तमलाल (परेश भाई)
मो. 093225 13091
रमेश नागर
मो. 093221 36600

परमेश्वर ओवरसीज, दिल्ली
ललित नागर
मो. 093138 32046
भरत नागर
मो. 093121 27757

नन्दकिशोरजी, जितेन्द्रकुमारजी, दिव्यांग, शाहिल, जेनीथ, बेटा पोता श्री वगताजी गिरधारीमलजी (दासपा) मदुराई

आयोजन के सहयोगी स्वजन (रु. 11101/-)

मोहनलाल जी खंगारजी बेटा, मितेशकुमार, मनीष कुमार, पौत्र दक्ष, लक्ष्मण (जालोर) तिरुनुलवेली

भीमरावजी भावेश कुमार बेटा पोता स्व. श्री मोतीलालजी (नारलाई) बेंगलोर

जीवराज जी, रामचंद्र जी बेटा पोता स्व. श्री पदमाजी हेमाजी (धाणसा) बेंगलोर

भोगिलालजी, महेन्द्रजी, जिगर, सार्थक, जेनिथ, दर्शील बेटा पोता स्व. श्री नवलमलजी केरिंगजी (बरलूट) बेंगलोर

दशरथकुमारजी, ललीतकुमारजी, अर्जुन कुमारजी, तन्य, लक्ष, बेटा पोता श्री लालचंदजी आईदानजी (भीनमाल) बेंगलोर

कांतीलाल, तिलोकचंद, दिनेश कुमार, प्रकाशकुमार, महेशकुमार बेटा पोता श्री रिखबचंदजी पन्नालाल जी (बरलूट) मद्रास

श्रीमान श्रेणीकजी पुखराजजी, सुपुत्र : युवी (खुडाला) बेंगलोर

श्रीमती नंदादेवी सुरतीगजी, सुपुत्र: बंसीलाल, दलीचंद, हस्तीमल, प्रकाश, अमृत, आसोटिया परिवार (पोमावा), विशाखापट्टनम्

श्रीरामभरोसे जय अम्बे

स्व. श्रीमती पार्वतीदेवी जोयतारामजी (उम्मेदाबाद) बेंगलोर श्री नेमीचंदजी, संजयकुमारजी, यश, कुशाल, निकील, कृष्णा बेटा पोता स्व. श्री डायालालजी रूपाजी (भीनमाल) बेंगलोर

आयोजन के सहयोगी स्वजन (रु. 5001/-)

दलीचंदजी, घनश्यामकुमार, हर्षद, प्रेम, बेटा पोता स्व. श्री हकमाजी (जावाल) चित्रदुर्ग

कन्हैयालालजी, आकाशकुमार, हर्षदकुमार, बेटा पोता स्व. श्री गोविंदरामजी एवं जसरामजी, चंदाजी (जावाल) होसपेट

कांतिलालजी, जगदीशजी, चम्पालालजी, बेटा श्री जेठमलजी नरसाजी (सरत) बेंगलोर

सुरेशकुमार, अशोककुमार, दिनेशकुमार, बेटा पोता श्रीशंकरजी मनाजी (वराडा) सीरवार

देवीचंद, धनराज, ललीतकुमार, प्रीतम, राहुल, हर्ष, दिक्षीत, विनीत, जय बेटा पोता स्व. श्री भुरमलजी पुनमाजी (मण्डवारिया) चित्रदुर्ग

चंद्रप्रकाशजी, मदनलालजी (सेवाड़ी) बेंगलोर

लक्ष्णजी शंकरजी (भीनमाल) गंगावती

आपसे आग्रह है कि सहपरिवार समय पर पधारकर सम्मेलन के सफल आयोजन में अपना अभुतपूर्व योगदान प्रदान करें।

।। जय श्री कृष्ण।।

बांसवाड़ा के प्रवासी नागरों ने अहमदाबाद में मनाई हाटकेश्वर जयंती

बांसवाड़ा के वडनगरा नागर बड़ी संख्या में अहमदाबाद में कार्यरत होकर वहीं बस गए हैं, उन्होंने मिलकर 14 अप्रैल 2014 को सपरिवार श्री हाटकेश्वर पाटोत्सव जयंती वेजलपुर में स्थित श्री बैजनाथ महादेव मंदिर परिसर में प्रात: यथाधार्मिक विधियों से एवं रात्रि में महाप्रसाद आयोजित कर मनाई।

आजकल जबकि नागर नवयुवकों की उच्च शिक्षा, योग्यता प्राप्त होने के बावजूद शासकीय नौकरी से वंचित रहना पड़ता है तो वे अच्छी नौकरियों के लिए बाहर निकल रहे हैं। उन्हें अहमदाबाद की उन्नत एवं आधुनिक अर्थव्यवस्था में बहुत अच्छे रोजगार प्राप्त हो रहे हैं। महत्वपूर्ण यह है कि वे यहां भी अपने धार्मिक एवं सामाजिक संस्कारों के अनुसार सपरिवार आयोजनों में हिस्सा ले रहे हैं। इस बार हाटकेश्वर जयंती के दिन रविवार का अवकाश होने से शानदार उपस्थिति रही। पं. श्री नयन झा के आचार्यत्व में रुद्राभिषेक, महापूजा का आयोजन किया गया। सायंकाल भजनों का कार्यक्रम किया गया। जिसमें श्री कमल याज्ञिक, श्री गजेन्द्र पंड्या, श्री नरेन्द्र पंड्या, श्री दीपक याज्ञिक ने भक्ति रस से सराबोर किया। रात्रि में पुन: आरती की गई तथा महिलाओं ने गरबा नृत्य का आनन्द लिया। सहभोज में सभी सपरिवार उपस्थित हुए। कार्यक्रम व्यवस्था में श्री अनंत याज्ञिक, पीयुष झा एवं श्री नवीन पंड्या ने विशेष सहयोग किया।

खबर मिली है कि प्रवासी बांसवाडा नागर युवकों ने यह उत्सव विदेश में भी मनाया, खासकर ह्युस्टन (टेक्सास राज्य) अमरिका एवं आस्ट्रेलिया में मेलबोर्न, केनवरा में त्यौहार मनाया गया। उपरोक्त देशों में यह उत्सव प्राय: रविवार को मनाया जाता है जो इस तिथि के पूर्व या पश्चात होता है।

प्रस्तुति-
नटवर लाल झा
2, सेन्ट्रल बैंक ऑफ सोसायटी
वैजलपुर अहमदाबाद (गुज.)

With Best Wishes :

Pratap Chand Otaji Nagar
Barloot Sirohi (Raj.)

KIRAN KUMAR PRATAPCHAND

JEWELLERS & PAWN BROKERS

DEALERS IN : GOLD & SILVER

Old Post Office Road, Near Merchants Bank Chitradurga-577501,
Mob. : 9845034650 / 9008736552

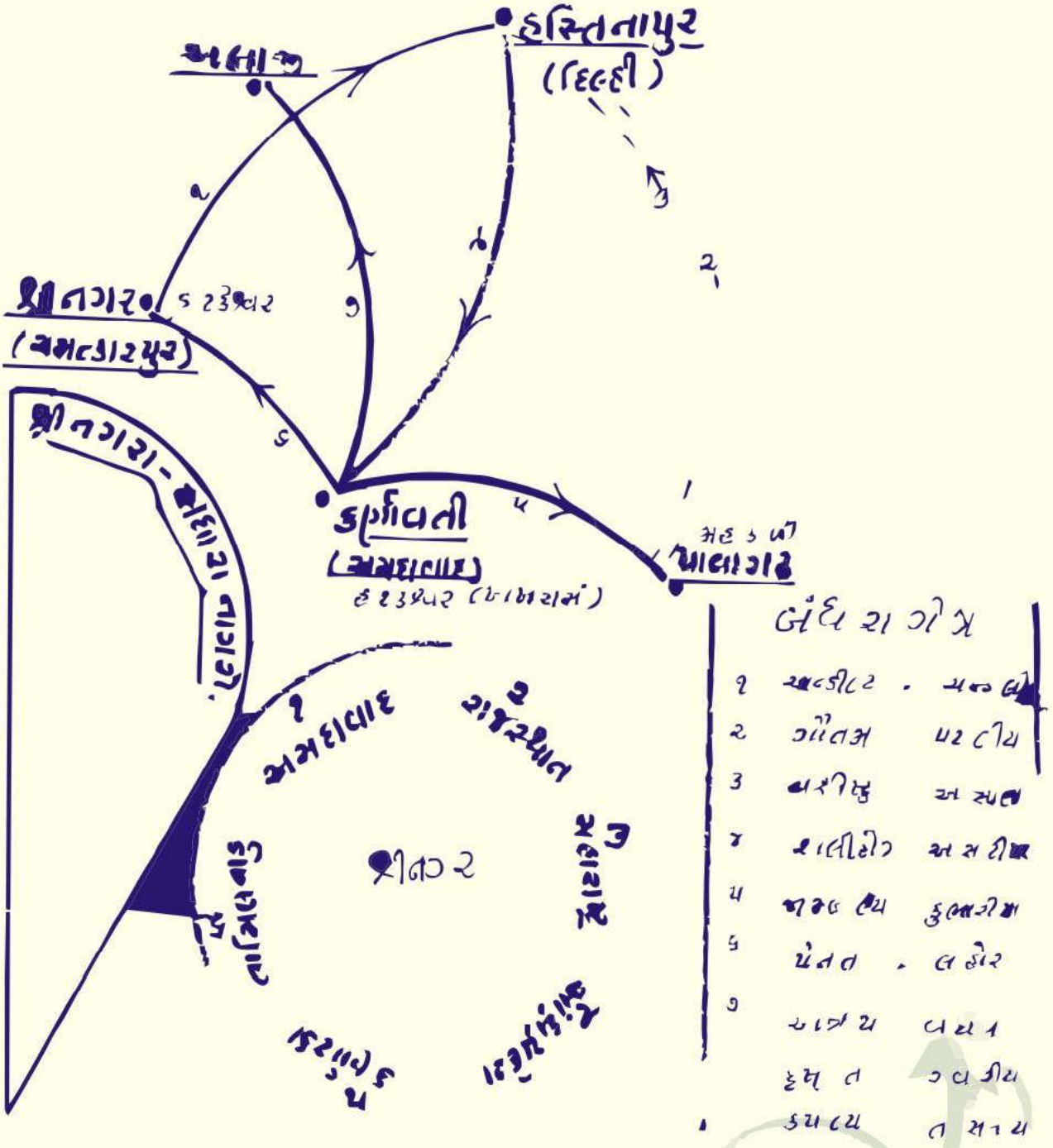

अखिल भारतीय नागर परिषद ने बंधारा नागर ब्राह्मण समाज का इतिहास प्राप्त किया है तथा उपलब्ध मानचित्र एवं दस्तावेज यह प्रमाणित करते हैं कि वडनगर (गुज.) जिसका नाम चमत्कारपुर भी रहा, तथा श्रीनगर भी। ये सब श्रीनगर से ही विस्थापित होकर विभिन्न स्थानों से होते हुए तीन जिलों पाली, जालोर, सिरोही में बसे तथा वहां से कई परिवार बाद में गुजरात, महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु तक विस्तारित हुए।
कई परिवार आज भी उपरोक्त तीन जिलों जालोर, सिरोही और पाली में बसे हुए हैं। इनमें से कुछ परिवारों की कुलदेवी अंबाजी और कुलदेवता भगवान हाटकेश्वर हैं, कुछ परिवारों की कुलदेवी पावागढ़ वाली मां महाकाली है। अ.भा. नागर परिषद के पूर्व अध्यक्ष श्री दिलीप भाई मांकड़ ने इतिहास की खंगाल कर प्रमाणित किया है कि बंधारा नागर भी नागर ब्राह्मण समाज का घटक हैं। बंधारा नागर समाज के वे बंधु बधाई एवं आभार के पात्र हैं, जिन्होंने समग्र गुजराती नागर ब्राह्मणों से जुड़ने की पहल की तथा मासिक जय हाटकेश वाणी ने इस सद्प्रयास को आगे बढ़ाया। यह बहुत बड़ी उपलब्धि है।

SALEM STEEL AGENCIES

DEARLERS IN:

FERROUS & NON FERROUS METALS

NEW.No.392 (OLD.No.177) WALL TAX ROAD OPP, TO RASAPPA CHETTY STREET,
CHENNAI - 600 003. CONTACT NO: 044-23468290 EMAIL ID: ssametal@gmail.com
CONTACT PERSON : BHUPEND'RA.NAGAR (9840419285) RAHUL (9841254260)

MAHENDRA METAL CORPORATION

STAINLESS STEEL *IMPORTERS*STOCKIST & SUPPLIER

NO.347, WALL TAX ROAD, (RICE MILL COMPOUND), (NEAR PADMANABHA THEATER), CHENNAI-600 079.
CONTACT PERSON : MURLIDHAR NAGAR (9381025810) CONTACT NO: 044-23463589,3590,3591
EMAIL ID: salemsteel@airtelmail.in /Salemsteell984@gmail.com/WEBSITE: www.mahendrametalcorporation.com

SHRI SIDHI VINAYAK METALS

DEALERS IN : STAINLESS STEEL SHEET, COILS,
CIRCLES, WIRES, RODS, PIPES, SCRAPS ETC.,

NO. 10, PONNAPPA CHETTY STREET, CHENNAI-600 003.
CONTACT PERSON : NARESH NAGAR 9840069694
CONTACT NO: 044 - 23468361

MARUTHI IMPEX

DEALERS IN :
TAILORING MATERIAL &
PACKING MATERIAL SUPPLIERS

G.K. TEMPLE STREET, CHICKPET CROSS,BANGALORE-600 053.
CONTACT PERSON : : MANGILAL NAGAR,
MAHESH CONTACT NO: 9590137236, 9019143354.

ભારતમાં શ્રીનગરા-બંદોરા નાગર પરિવારો

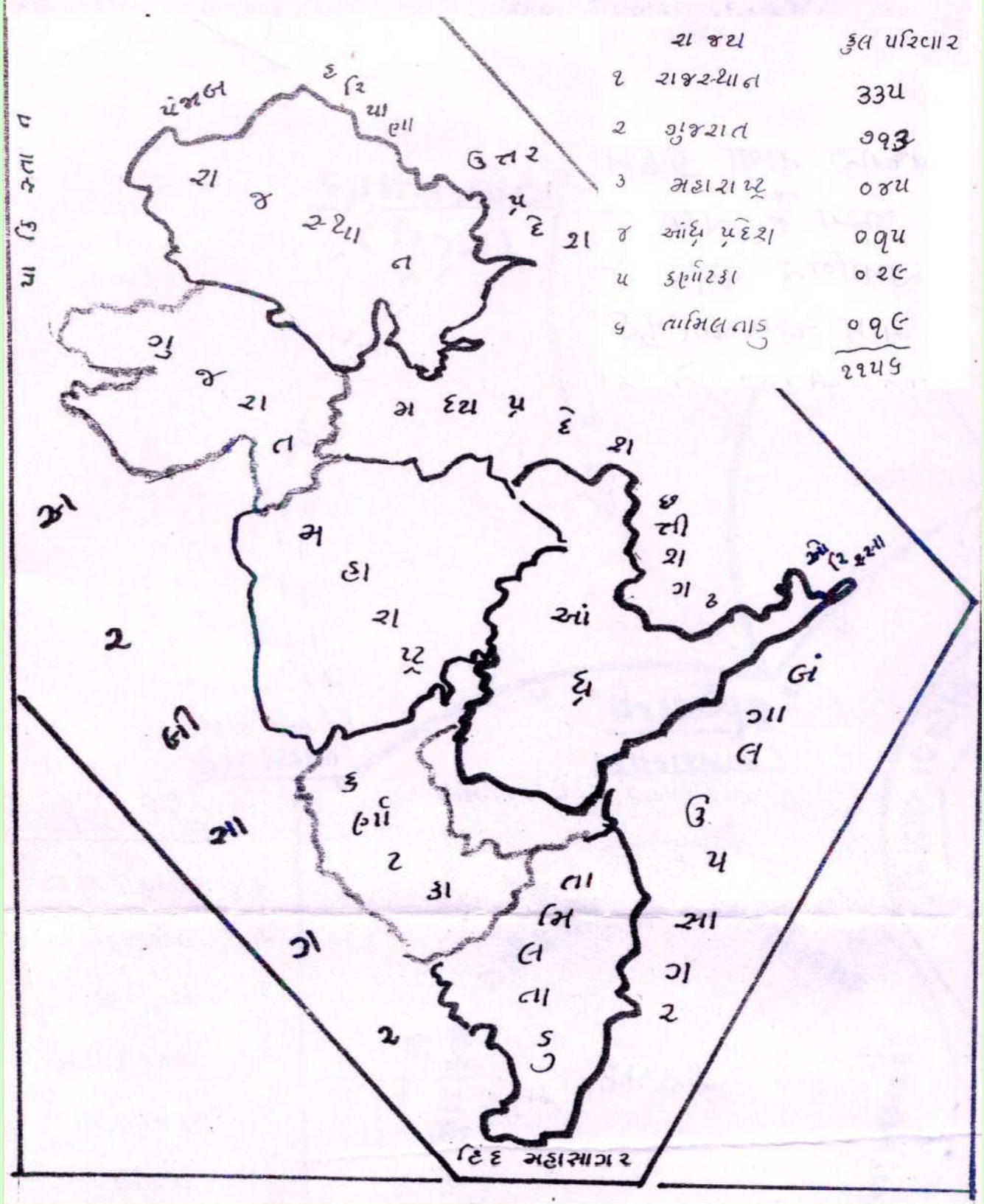

ક્રમ	રાજ્ય	કુલ પરિવાર
૧	રાજસ્થાન	૩૩૫
૨	ગુજરાત	૭૧૩
૩	મહારાષ્ટ્ર	૦૪૫
૪	આંધ્ર પ્રદેશ	૦૧૫
૫	કર્ણાટક	૦૨૯
૬	તામિલનાડુ	૦૧૯
		૧૧૫૬

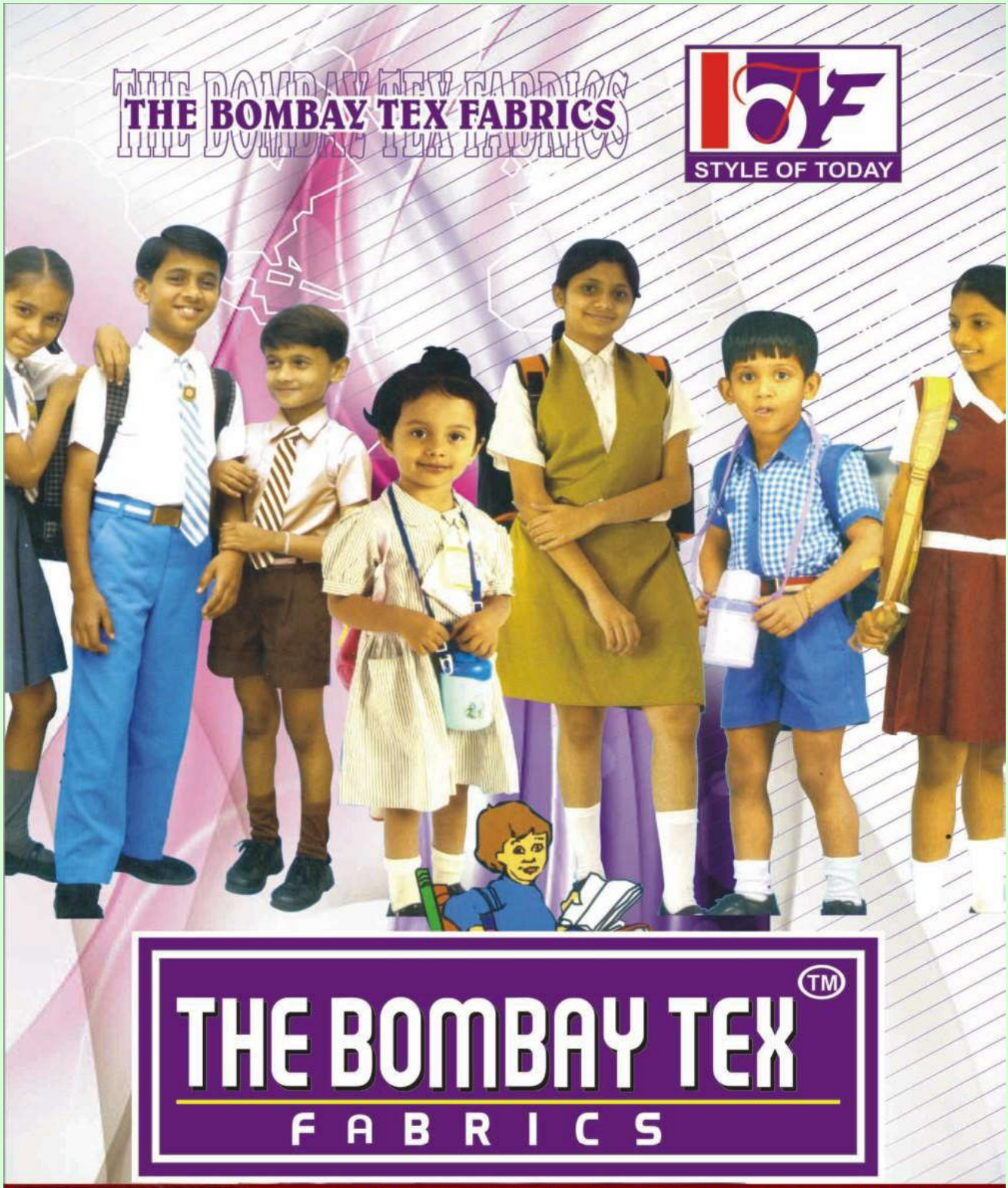

BTF
STYLE OF TODAY

BOMBAY MARKETING
HUKMICHAND SHANTILAL

Mfg. of Shirting & Uniform Specialist

62/64, Brindavan Building, 1st Floor, Dadiseth Agiary Lane, Kalbadevi Road MUMBAI-400 002

Phone-2201 5138/3240 3605, Shantilal-9322642197, Hukmichand-9323787623, Rangraj-9323513595, Govind-0820349414

दक्षिण भारत नागर परिवार-2014

हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)

1- अशोक कुमार लक्ष्मणलाल जी नागर
4-8-552 राम मन्दिर के पास
गोवालगुड़ा (व्यापार) मो. 09291957921

2- मुकेश कुमार जीवराजजी नागर
अशोक बाजार पहली मंजिल
(व्यापार) मो. 0998925972

(कडपा आंध्र प्रदेश)

3- जयंतीलाल जेतमलजी नागर
शा ललित कुमार चुन्नीलालजी
13/111 वी.के. एम स्ट्रीट
09490986707
09982981138

(विजयवाड़ा आंध्रप्रदेश)

4- रणछोड़लाल पन्नालाल जी नागर
डी/नं. 11-63-25 हार्मन स्ट्रीट
(बुद्धावरी मंदिर के सामने)
(नौकरी) मो. 09440438915

विजय नगरम (आंध्रप्रदेश)

5- कैलाश कुमार बंशीलाल जी नागर
5-1-8 चिन्ना विधी
वस्त्र भवन के सामने
(व्यापार) मो- 09848138022,
09948607517

विशाखापट्टनम (आंध्रप्रदेश)

6- प्रकाशचंद्र सुरतिंग जी नागर
डी/नं 33.29.1 यथापेटा रोड
अलीपुरम (व्यापार)
फोन - 09848460345

बैंगलोर (कर्नाटक)

7- बंशीलाल जी ओटमलजी नागर
नं- 57, 3 का मेन सेकंड ब्लॉक
अयप्पा नगर, के.आर. पुरम
(व्यापार) मो- 09880391116
09535237121

8- भीमराज मोतीलाल जी नागर
6/6, फर्स्ट फ्लोर सदाशिव
मुदलियार स्ट्रीट, हल्लासुरू,
(व्यापार) 08088422951

9- चंद्रप्रकाश मदनलाल जी नागर
23, सेकंड क्रॉस 27 मेन
वीजी.एस. ले आऊट
इंजीपुर, विवेक नगर पोस्ट (सर्विस) मो.
09901066992

10- दशरथ लीलचंद नागर
12/90 पहली मंजिल, पहली मेन रोड, पांचवा
क्रॉस न्यू कलप्पा, ब्लॉक आर.सी. पुरम
(व्यापार शीतल एक्सपोर्ट) मो.
09343833655

11- हितेष जोयंतारामजी नागर
नं.6, पहली एफ क्रॉस
माउथीनगर मेन रोड
(स्टेशनरी व्यापार)
मो. 09916752717

12- जगदीश मोनाजी नागर
नं. 146/4 पहली मंजिल छठा क्रॉस, पांचवा
मुख्य रास्ता
चामराज पेट (नौकरी)
मो. 09686073281

13- जीवराज पदमचंद जी नागर
नं. 27, शुभ्रमन्या लेन,
अक्कीपेट क्रॉस
(व्यापार) मो. 09886326706

14- जगदीश जेठमलजी नागर
नं. 18 पहली मंजिल, चौथा क्रास मगड़ी रोड
मो. 08095108415

15- कांतिलाल जेठमलजी नागर
25/2 पंचाला अनकाने लेन
मानवर्त पेठ (नौकरी)
मो. 09036594663

16-मदनलाल (महेन्द्र)पीतांबरलालजी नागर
19/1, 1.सी., फर्स्ट मेन मनुवाना
आदिचुनचुन गिरी मठ
विजय नगर (व्यापार)
मो.- 09342816914

17- महेन्द्र नवलमालजी नागर
नं. 16/1 सेकंड फ्लोर, आठवां क्रास, लेफ्ट साइड
मरियम्मा टेम्पल स्ट्रीट मागड़ी रोड (नौकरी)
मो. 09740381503

18- मांगीलाल मिश्रीमल नागर
52/3, थर्ड फ्लोर सिक्स क्रास, मागड़ी रोड
(व्यापार) मो. 09901053727

19- मोहनलाल ओटमलजी नागर
नं. 7 जे-उमा, सेकंड ब्लॉक, सेकंड क्रास,
सेकंड मेन रोड
अयप्पा नगर, के.आर पुरम
(व्यापार) मो. 09845292618

20- नारायण मिश्रीमलजी नागर
7 फर्स्ट फ्लोर सेकंड क्रास
मांगड़ी रोड, (व्यापार)
मो. 09945826900

21- नारायणलाल धर्माजी नागर
द कर्नाटका मेटल इंडस्ट्रीज
नं. 849, नागरथ पेठ
मेन रोड (नौकरी)
मो. 09035883750

22- नरेश दयाराम नागर
नं. 13/1, कहवां क्रास विनायक टेम्पल रोड
बेन्द्रेनगर, कानदर हल्ली बीएसके सेकंड स्टेज
(नौकरी) मो. 09738307897

23- संजय डायालालजी नागर
सेकंड फ्लोर, अल्लमपल्ली मेंशन

Sri Sathyanarayan Swamy Prasanna

With best wishes from

S.S. Jewellers

SPECIALIST IN ALL TYPES OF FANCY NOSE PINS

Old Post Office Road, Chitradurga-577 501 Ph : 08194-224908

Cell : +9194484-68416, +9194489-48665

नागर ज्वेलर्स

ओल्ड पोस्ट ऑफिस रोड़, चित्रदुर्गा (कर्नाटक)

सुलतान पेठ (व्यापार)
मो. 07259525025

24- पुरूषोत्तमलाल मगाजी नागर
1058/1 धर्माया स्वामी टेम्पल स्ट्रीट
नेक्स्ट टू चारण को ऑप बैंक
नागर पेठ क्रास (व्यापार) मो.
09342544416

25- रामचंद्र पदमा जी नागर
नं. 5, 8वां क्रास गणपति नगर होसकेरे मेन रोड
(व्यापार) मो. 09535291198

26- रमेश कुमार ओटमलजी नागर
नं. 545, बीसवां मेन रोड
24वां क्रसि, चौथा टी ब्लॉक
जया नगर (व्यापार) मो. 09342529736

27- शांतिलाल गोपालजी नागर
गेहलोद भवन, सेकंड फ्लोर मंजूनाथ
ले.आउट देवसन्द्रा
मेन रोड के.आर. पुरम (व्यापार)
मो. 09036997278

28- श्रेणिक पुखराज जी नागर
नं. 2/1, थर्ड फ्लोर कीन टेलर के पास
कुब्बोन पेठ (नौकरी)
मो. 09341962412

29- विनोद कुमार पिताम्बरलालजी नागर
19/1 सी क्रास, पहला मेन मनुवाना
आदिचुनचुनगिरी मठ, विजय नगर (व्यापार)
मो. 09449974791

चित्रदुर्ग (कर्नाटक)

30- बाबूलाल पूनमचंदजी नागर
दुशीगेमा मंदिर के पास, चिकपेठ हरी निवास
(व्यापार-कपड़े) मो. 09449973910

31- छगनलाल पूनमचंद जी नागर
ओल्ड पोस्ट ऑफिस रोड
(ज्वेलर्स- सोना-चांदी)
मो. 09972477542

32- दलीचंद इकमाजी नागर
अकाउंटेड भुजीर्नाथट्टी
(व्यापार) मो. 08453263863

33- डायालाल अमीचंद जी नागर
ओल्ड पोस्ट ऑफिस रोड
(व्यापार) मो. 09449421513

34- देवीचंद मोरमलजी नागर
धर्मशाला रोड, हिन्दी पार्श्वनाथ हिन्दी स्कूल
(व्यापार-रेडीमेड वस्त्र)
मो. 09741184458

35- हुकमीचंद जीवराज जी नागर
सी-1, विनायका सेल्स
बी.डी. रोड, चित्रदुर्गा
(व्यापार) मो. 09448070386

36- प्रताचंद्र ओटजी नागर
एच.एल.के. रोड, शांतिपेठ
नीलकंठेश्वर बडवानी (व्यापार-सोना चांदी)
मो. 09008736552

37- अमीचंद जी नागर
ओल्ड पोस्ट ऑफिस रोड
नीयर मर्चेन्ट बैंक हेड ऑफिस
(व्यापार) मो. 0990140209

38- शंकरलाल जी नागर
क्रांति टेक्सवर्धल, बी.डी रोड
पहला क्रास (विजय बैंक के पास)
(व्यापार) मो. 0986440646

39- श्यामलाल देशमलजी नागर
चिक पेठ के पास एन्नै बाग्लु
(व्यापार) मो. 09448295767

40- सोहनलाल पुनमचंदजी नागर
कोटे अंजनया स्वामी
भुरतेनहट्टी (व्यापार-कपड़े)
मो. 08971083295

गंगावटी जिला कोप्पल (कर्नाटक)
41- भीमचंद मन्नालालजी नागर
संगम सिल्क हाऊस
गांधी चौक (व्यापार)
मो. 09986922410

42- गोविंदलाल मन्नालाल जी नागर
संजना साडीज महावीर सर्कल
(व्यापार) मो. 09844580281

43- नीतेश जांयतामल जी नागर
संगम सिल्क हाऊस गांधी चौक
(व्यापार) मो. 09886013124

हॉस्पेट (कर्नाटक)

44- कन्हैयालाल गोविन्दजी नागर
केलगड़ी शंकरअमता टेम्पल अक्सवान
मो. 09886228753

काराटेगी जिला कोप्पल (कर्नाटक)
45- देवीचंद खासाजी नागर
संगीता सिलेक्शन बैक साइड
(व्यापार) मो. 09449152847

46- हस्तीमल खासाजी नागर
श्री गजेन्द्र क्लाथ एम्पोरियम
बैंक साइड काराटेगी जिला-कोप्पल
(व्यापार) मो. 09449625361

सिंधानुर (कर्नाटक)

47- मैनमल मन्नालाल जी नागर
त्वेतराज कॉलोनी
(व्यापार) मो. 09886414489

सिखार जिला रायचूर (कर्नाटक)

48- अशोक कुमार शंकरलाल जी नागर
शंकरलाल नागर, कारवा काल्टेन मेन रोड
(व्यापार) मो. 09945908453

Mfg.Mkt.Of High Quality ladies Inner Wears

IMAGE

LINGERIE

RICH N IMAGE

millennium

WITH BEST COMPLIMENTS FROM

M.L. APPARELS

No. 10 (New No.19) Vengu Street, Kondithope
CHENNAI-600079
Ph. : 044-25203084, 25208389

Sisters Concern

Bhanushree Creations

Ahmedabad
(RAMESH KUMAR 9444088300)

R.D. Sales Corporation

Chennai
(JAGDISH KUMAR 9884835784)

Srisundha Creations

Chennai
(NARESH KUMAR 9600068087)

Sundhashri Apparels

Chennai
(LAXMAN LAL 9444963540)

M.L. Fashions

Chennai
(LAXMAN LAL 25208389)

चेन्नई (तमिलनाडु)

49- अचल चंद गिरधारी लाल नागर
1/3 नालाना लेन (अन्ना पिल्लई स्ट्रीट के पास) सवकारपेट
(व्यापार) मो. 09840002245

50- जगदीश कुमार वालचंद जी नागर
नं. 7/4 राथिना मुदाली स्ट्रीट, कोडीथोप
(व्यापार-रेडीमेड गारमेन्ट्स)
मो. 09884835784

51- कांतिलाल खिबरिचंदजी नागर
त्यागराजा पिल्लई स्ट्रीट
सेवन वाल्स
मो. 09444467321

52- ललित कुमार मिट्ठालाल जी नागर
56, मेडवक्कम सेकंड लाइन, फर्स्ट फ्लोर
केलीस, केलीपुक
(व्यापार) मो. 09884111132

53- महेन्द्र कुमार नारायण लाल जी नागर
नं. 10, रंगापिल्लई गार्डन स्ट्रीट कोंडीटॉप
(व्यापार- बॉम्बे फैन्सी ज्वेलरी)
मो. 09380609537

54- मोतीलाल खिमाजी नागर
13, हुसैन साहिब लेन, एन.एस.सी. बॉस रोड पार्क टाऊन
(व्यापार-ओरियन्टल ट्रेडिंग कं.)
मो. 09840406040

55- मुरलीधर मिश्रीमलजी नागर
नं. 123-125, ब्रिकिंयन रोड
(अरिहंत) वेकुंठ अपार्टमेंट फर्स्ट ब्लॉक, 6 डी पुरास्वाल्कम
(व्यापार-सेलम स्टील) मो. 09381025810

56- नैनमल वालचंद जी नागर
नं.7, कोंडाल स्ट्रीट, कोन्डीथोप
(व्यापार) मो. 09600068087

57- रमेश कुमार मिश्रीमलजी नागर
नं. 16 रवानियर स्ट्रीट
(गुजराती अस्पताल के पास)
(व्यापार) मो. 09840069694

58- रमेश कुमार वालचंदजी नागर
43 मिंट स्ट्रीट (व्यापार-अंडर गारमेन्ट्स)
मो. 09444088300

59- लक्ष्मणलाल वालचंद्रजी नागर
11/23, रंगा गार्डन स्ट्रीट
कोंडीथोप (व्यापार)
मो. 09444963540

67- विक्रम अचलचंद जी नागर
202 सी ब्लॉक, विद्यासागर ओसवाल गार्डन फ्लेट कोरूकोपीट
मो. 09840002245

68- गोविंदराम मोतीलाल नागर
श्रीराम स्टील सेन्टर
18, परम शिवा स्ट्रीट पार्क टाउन
(व्यापार-स्टील) मो. 09840153816

69- हेमंत कुमार कन्हैयालाल नागर
स्टडी-केन्द्रीय इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी
बी.ई (इले. सेकंड ईयर)
मो. 09341286926

(कुंडालुर तमिलनाडू)

60- कन्हैयालाल घेवरचंद जी नागर
ब्रह्मा निनम्मा फेंसी स्टोर्स
नं. 41/21 कार स्ट्रीट
(व्यापार) मो. 04142223020

61- मांगीलाल दीपचंदजी नागर
भारती नगर, कुटप्पाकम मेन रोड
मो. 09840314761

इरोड (तमिलनाडु)

62- त्रिलोकचंद रिखबचंदजी नागर
विजय लक्ष्मी ट्रेडर्स
सी.एम. ले आऊट एस.के.सी. रोड
मे. 09364114979

63- अचलाजी नरसा जी नागर
सेकंड फ्लोर, एम.आर. टॉवर
(अडापडी गोडाउन के पास)
मो. 0424-2220212

मदुराई (तमिलनाडु)

64- नंदकिशोर वगताजी नागर
238/28, नाईकेर न्यू स्ट्रीट सेकंड फ्लोर
(व्यापार) मो. 09789791342

तीरूनवेली (तमिलनाडु)

65- मोहनलाल खंगारजी नागर
कालटिटी स्ट्रीट, तीरूनवेली टाउन
(व्यापार) मो. 0462232938

विशेष :-

दक्षिण भारत नागर परिवार की नवीनतम सूचनाओं के आधार पर यह डायरेक्टरी तैयार की गई है। समाजजनों से आग्रह है कि डायरेक्टरी में प्रकाशित नंबरों को बदलें नहीं, पूर्ण सावधानी के बावजूद यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो हम क्षमाप्रार्थी है। कोई भी परिवर्तन हो तो सूचना दें।

- सम्पादक

समय के साथ बदलना पड़ेगा समाज को...

(अतिथि सम्पादक)
कु. प्रेरणा नागर, उज्जैन

प्रसिद्ध वैज्ञानिक चार्ल्स डार्विन ने कहा था -'कि जो भी सभ्यता या समाज स्वयं को वातावरण के अनुसार नही बदलती है, समय के साथ विलुप्त हो जाती है। और शनैः-शनैः विनाश की ओर गर्त में चली जाती है।'

आज का युग कम्प्यूटर की नई-नई टैक्नोलॉजी का युग है, फेसबुक, वॉटसअप, ट्वीटर एवं अन्य मैसेजिंग सर्विसेस हमारी रोजमर्रा जिंदगी का हिस्सा बन चुके है। जिसका उपयोग संपूर्ण देश में ही नही अपितु विश्व में बच्चों बड़े सहित सभी वर्ग के लोगों के द्वारा किया जा रहा है। हमारे समाज जन भी इस तकनीक से भलीभांति अवगत है तथा व्यक्तिगत रूप से इसका उपयोग कर रहे है। परन्तु फिर भी इन मैसेजिंग सर्विसेस का उपयोग उचित एवं सार्थक ढंग से करने की आवश्यकता है।

कुछ गिने-चुने लोगों को छोड़कर इस तकनीक का उपयोग अधिकांशतः अपने व्यक्तिगत, पारिवारिक फोटो, इमेज एवं अनावश्यक गैर जरूरी सूचनाओं के आदान-प्रदान तक ही सीमित है, जो केवल एक शौक, आदत की प्रवृत्ति बनकर सामाजिक स्टेटस का रूप ले चुकी है कई शेयर की गई पोस्ट एवं सूचनां पर कोई कमेंटस उचित नही मानकर कोई लेना देना न होने से इग्नोर की जाती है। इसकी सार्थकता तभी सिद्ध होगी जब समाज के किसी आयोजन की सूचना जैसे आयोजन का उद्देश्य, स्थान, समय आदि की जानकारी डालकर शेयर की जाये तो यह सूचना अधिक से अधिक लोगों तक पहुंच सकेगी। इसमें इस बात का भी ध्यान रखा जा सकता है कि यह सूचना किस वर्ग या समूह से संबंधित है ग्रुप क्रियेट कर संरक्षित की जा सकती है। यह सूचना केवल उपयोगी ग्रुप तक ही सीमित रहे। ऐसी सूचनाऐं समय-समय पर अपडेट भी होती रहे। सभी समाजजनों से विशेष आग्रह है कि यदि ऐसी सूचनाऐं डालकर उपयोगी ग्रुप तक शेयर किये जाये ताकि वह सभी तक पहुंच सकें। यदि हम चाहे तो मोबाईल मैसेज के द्वारा भी इस प्रकार की सूचनाऐं प्रसारित कर सकते है क्योंकि सभी के पास इंटरनेट की सुविधा नही होती है। कुछ शहरी क्षेत्र के समाजजनों के द्वारा मोबाईल मैसेज का उपयोग शोक सभा तथा अन्य स्थानीय आयोजन की सूचना देने हेतु किया जाता है। जो कि प्रशंसनीय है। यह सेवा जल्द से जल्द अन्य शहरों के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों के द्वारा भी उपयोग में लायी जाना चाहिए। जिससे शीघ्र एवं समय पर सभी को सूचना मिल सकें। इसके लिए समाज के युवा वर्ग को आगे आकर इसमें कुछ ज्ञानवर्धक, रोजगार संबंधी, गृह उपयोगी एवं स्वास्थ्य संबंधी विषयों को जोड़कर उसे अधिक समाज उपयोगी एवं रोचक बनाने की उपयोगी बनाने की आवश्यकता है तभी इस तकनीक की समाजहित में सार्थकता सिद्ध होगी।

ये दुनिया कांटों का भंवर है

1. बाईबिल में लिखा है- तुम फूलों की क्यारी मां

ईश्वर हर जगह मौजूद नहीं रह सकता। इसलिए उसने अपने प्रतिनिधि के रूप में मां बनायी। मां सच्चे अर्थों में ईश्वर दूत है, देवदूत है। वो देखने समझने में सामान्य इंसान जान पड़ती है परंतु वो स्वयं देव प्रतिनिधि है उसका सीधा संपर्क उस सर्व शक्तिमान से है।

2. वो कभी अपने बच्चों को बद्दुआ नहीं देती। लेकिन उसके साथ किये गये प्रत्येक सद्व्यवहार अथवा दुर्व्यवहार का लेखा जोखा ईश्वर रखता है। जबकि मां सिर्फ शुभाशीष ही देती है किन्तु बुरे बर्ताव पर आप प्रभु के चाबुक से नहीं बच सकते। क्योंकि मां देवदूत है और अपने दूत से किए गए बुरे बर्ताव देव कभी माफ नहीं करते परिणामतः अच्छे बर्ताव पर तो सुख एवं संपन्नता मिलती है। अतः जो बात सर्वश्रेष्ठ धर्मग्रंथों में लिखी है उसे मानें। मां की महानता समझे। उसके विराट व्यक्तित्व को पहचाने। भूलकर भी ईश्वर दूत अपनी मां का दिल न दुखाये। उससे प्रेम करे उसकी पूजा करे। देव कहें तुम्हें देवदूत पर तुम हो बच्चों को प्यारी मां।

ये दुनिया कांटों का भंवर है तुम फूलों की क्यारी मां।।

बच्चे मां को भूल जाते है, सताते हैं, रूलाते हैं, परेशान करते हैं मां फिर भी उनका भला ही सोचती है, वो कुछ और सोच ही नहीं सकती। साक्षात् ईश्वर का रूप होती है मां।

संकलन-
जितेन्द्र नागर
देवास

हाटकेश्वर जयंती समारोह धूमधाम से मनाया गया

स्थानीय नागर समाज द्वारा 14 अप्रैल को हाटकेश्वर जयंती का समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया। प्रातः 9.00 बजे से चल समारोह नगर के हाटकेश्वर वार्ड स्थित मंदिर से आरंभ होकर जैन मंदिर, रामगंज, बुधवारा केवलराम चौराहा, बाम्बे बाजार, नगर निगम, खड़कपुरा, हरीगंज, सराफा होते हुए पुनः मंदिर में आरती प्रसाद के पश्चात समाप्त हुआ। इस अवसर पर दीपक जोशी, मनोज मंडलोई, अभिलाष दीवान एवं नागर युवा मित्र मंडल द्वारा स्वागत किया। चल समारोह में पुरूष सफेद कुर्ता-पायजामा एवं महिलाएं केशरिया साड़ी की पोषाक में थीं। दोपहर बाद में श्री अश्विन रामलाल दीक्षित द्वारा हवन पूजन, आरती प्रसाद एवं रात्रि में सहभोज-भण्डारा श्री अश्विन दीक्षित एवं परिवार द्वारा सम्पन्न किया गया।

- सरोज कुमार जोशी, खण्डवा

श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रधानमंत्री बनने पर शत : शत : अभिनंदन

भगवान हाटकेश्वर के आशीर्वाद से अब चलेगा देश

बनारस लोकसभा सीट से अपना नामांकन दाखिल करते समय काशी विश्वनाथ बाबा का स्मरण व नमन करते हुए कहा था मैं वड़नगर गुजरात का रहने वाला हूँ जहां भोलेनाथ हाटकेश्वर विराजित है तथा अधिकांशत: वहां नागर कम्युनिटी निवास करती है। इस तरह भगवान हाटकेश्वर व नागर समुदाय का श्री मोदी जी ने मान बढ़ाया। अत: जय हाटकेशवाणी के माध्यम से हम सब नागर जन श्री मोदी जी के पी.एम. बनने पर शत : शत : अभिनंदन करते हैं।

विगत वर्षों के कुशासन के कारण देश में भयंकर महंगाई भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, अस्थिरता का वातावरण होकर जनमानस त्रस्त हो गया था। देश बदलाव चाहता था। ये देश का सौभाग्य है कि श्री नरेन्द्र मोदी सूत्रधार के रूप में सबके सामने आए। सबको आशा की किरणें दिखाई दी। जनता ने भरोसा करके उनकी पार्टी को बहुमत प्रदान कर सत्ता की बागडोर सौंपी।

कांग्रेस का (क) जहां उसके लिए अभिशाप बना वही कमल का (क) भाजपा हेतु वरदान साबित हुआ और इतना ही नहीं कांग्रेस के (क) केसाथ कोयला घोटाला, कनि मोझी, कोड़ा, ए.के. राजा, कलमाड़ी आदि ने कांग्रेस को डुबाने में मददगार हुए। एक मां की महत्वाकांक्षा पुत्र प्रेम की, उसे ले डूबी।

देश की जनता ने अपना फैसला सुनाकर देश के परिपक्व होने का सबूत दिया है। उसने यह साबित कर दिया है कि अब उसे झूठी उम्मीदें दिखाकर बेवकूफ नहीं बनाया जा सकता है।

ये सत्य भी हमें स्वीकार करना पड़ेगा कि मोदी के सर पर कांटों का ताज है, क्योंकि देश के सामने ढेर सारी समस्याएं विकराल रूप में हिमालय की तरह खड़ी है। समय कम है और काम ज्यादा। श्री मोदी जी को बड़ी सूझ बूझ और दूरदर्शिता से बिना किसी दबाव के कार्य करना है।

देश में जो एकता और विकास के प्रति कटिबद्धता का माहौल बना है वह दूध के उबाल की तरह नहीं रहना चाहिए। ये निश्चित है कि मोदी जी के पास हनुमान जैसी शक्ति है। उनकी पूरी टीम को अंगद के समान अपनी एकता के पांव जमा कर रखना है।

पूरे देश में जागरण की बेला नई राहों के इंतजार में है। अत: जब वर्तमान प्रशासन को आरोप प्रत्यारोप की राजनीति व गढ़े मुर्दे उखाड़ने के चक्कर में नहीं पड़ना चाहिए। पीछे मुड़कर देखने का समय नहीं है। अपना पूरा ध्यान-गुजरात माडल को सामने रखकर देश से किए गए वादों को पूरा करने में खरा उतरना है।

निश्चित रूप से श्री मोदी अपने अभियान में सफल होंगे, क्योंकि उनके साथ बाबा काशी विश्वनाथ और बड़नगर को स्थापित हाटकेश्वर का आशीर्वाद है। ईश्वर से यही प्रार्थना है कि देश के लाड़ले व दबंग प्रधानमंत्री श्री मोदी जी को स्वस्थ्य एवं चिरायु रखें।

जय हिंद।

सुरेश दवे (मामा)
शाजापुर म.प्र. 9424027500

नि:शुल्क छाछ वितरण कार्यक्रम

स्विफ्ट साल्यूशन्स के 20वें स्थापना दिवस आखातीज 2 मई 2014 को संस्थान के डायरेक्टर एवं नागर सोशल ग्रुप के चेयरमेन राकेश भाई व्यास द्वारा रांगोली कॉम्पलेक्स वी.एस. हॉस्पीटल के सामने पार्किंग क्षेत्र में सुन्दर मंडप लगा कर समाजजनों एवं मित्रों की उपस्थिति में नि:शुल्क छाछ वितरण का कार्यक्रम रखा गया। जो इस गर्मी में प्रतिदिन 12 से 3 बजे तक जनसेवा के लिए खुला रहेगा। इसमें लगभग रोजाना 200 लीटर छाछ का वितरण होगा। भगवान श्री हाटकेश दादा राकेश भाई को ऐसे सद्कार्य करने के लिए शक्ति एवं सामर्थ्य प्रदान करें। इस अवसर पर समाज के अग्रणी सर्व श्री योगेन्द्र भाई रावल, शैलेष भाई जोशी, भावना बेन जोशी, दीपक भाई दवे और निरंजना बेन भट्ट आदि उपस्थित थे।

Kritika add

Textiles manufacturers show & add

Office # 18,19 plot no.62
Laxmi Nagar,
Lambe Hanuman Road,
Surat- 395006 (Gujrat)

Dinesh m. Nagar

Naresh m. Nagar

Ph. No. off +91261-2540467
Mob.No. +91-9275144932
+91-7567688641

अम्बाजी में सात दिवसीय रात्रि पूजा में सैकड़ों नागरजन जुटे

समग्र गुजरात नागर परिषद महामंडल के तत्वावधान में अंबाजी (गुज.) में 20 से 26.04.14 चैत्र वदी पंचमी से चैत्र वदी 2 तक श्री अंबा माताजी की रात्रि पूजा का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

लगातार तीन वर्ष से इस रात्रिपूजा का लाभ अधिक से अधिक नागरजनों ने लिया है। प्रथम वर्ष चार दिन की पूजा में 700 व्यक्ति, द्वितीय वर्ष पांच दिन की पूजा में 1400 व्यक्ति एवं वर्तमान तृतीय वर्ष में लगभग 1400 नागरजनों ने पूजा का लाभ लिया। इस पूजा का उद्देश्य श्री अंबा माताजी मन्दिर के गर्भगृह में रात्रि 9 से 12 पूजा करने का अधिकार फिर से मिले इस मंशा से किया गया। इस बार समाज की महिलाओं के लिए यह सुनहरा अवसर था, क्योंकि सामान्यतया गर्भगृह में पूजा केवल पुरूष ही कर सकते हैं। इस आयोजन के दरम्यान महिलाओं और बेटियों को भी पूजा का लाभ मिला। इस आयोजन में दोपहर को फलाहार एवं रात को थाल प्रसाद की व्यवस्था बहुत व्यवस्थित तरीके से रखी गई थी। इस व्यवस्था में कई समाजजनों ने सहयोग दिया।

प्रथम दिन फलाहार एवं रात्रिभोजन के यजमान बने स्विफ्ट साल्यूशन्स के श्रीमती वनिता बेन व्यास एवं श्री राकेश भाई व्यास।

द्वितीय दिवस फलाहार श्री नीरव जी व्यास, रात्रि भोजन- श्री तक्सील मेहता, तृतीय दिन- फलाहार-नमन जयेश भाई महाराजा, रात्रि थाल- ऋषभ पिनाकिन भाई याज्ञिक, साबरमती, चतुर्थ दिन- फलाहार जगदीश भाई व्यास, मणीनगर, रात्रिथाल- भावेश रावल कलोल, पंचम दिन फलाहार एवं रात्रिथाल दिनेश भाई हीरालाल परमार, अम्बाजी, षष्टम दिन- फलाहार श्री महेन्द्र भाई मेहता मुंबई, रात्रि भोज- श्री भरतभाई, विष्णु प्रसाद पंडित, मुंबई, सप्तम दिन- फलाहार तथा रात्रिभोज श्री सनत भाई, वासुदेव भाई पंड्या गांधीनगर। सभी यजमानों को संस्था की तरफ से मां अंबा तथा इष्टदेव श्री शिवपार्वती की प्रतिकृति स्मृति चिन्ह के रूप में भेंट की गई। रात्रि पूजन के दरम्यान दूसरे दिन संस्था द्वारा अन्नकूट का आयोजन किया। इस कार्यक्रम के आयोजक संस्था के सदस्य श्री नरेश भाई राजा, रीटा बेन राजा, श्री सुभाष भाई भट्ट, श्री धर्मेश देसाई, श्री राश्मिन भाई भावनगर, श्री जयंती भाई तथा दक्षा बेन रावल आदि मित्रों ने भारी परिश्रम करके कार्यक्रम को सफल बनाया। इस कार्यक्रममें सातों दिन उपवास रखकर निरन्तर कार्यरत रहते हुए सेवा करने वाले नम राजा को बहुत-बहुत धन्यवाद। समग्र गुजरात नागर परिषद के इस कार्यक्रम का आकर्षण ये था कि न सिर्फ गुजरात बल्कि इंदौर, उज्जैन सहित मध्यप्रदेश के अन्य शहरों से भी समाजजन रात्रि पूजा में भाग लेने आए थे। ये आयोजन वर्षों वर्ष होता रहे एवं समाजजनों का सहयोग मिलता रहे ऐसी प्रार्थना है।

यज्ञोपवीत संस्कार एवं गंगाजल कलश यात्रा सम्पन्न

बांसवाड़ा। खान्दू कॉलोनी में स्थित हाटकेश्वर महादेव मंदिर परिसर में विशनगरा नागर ब्राह्मण समाज के श्री महेन्द्र पण्डया एवं श्रीमती मनीषा पण्डया ने अपने सुपुत्र चि. खुश पंडया का यज्ञोपवीत संस्कार उत्साहपूर्वक कराया। इस अवसर पर दादा-दादी श्री चंद्रशेखर पंड्या तथा खुशवन्ता पंडया एवं चाचा श्री देवेन्द्र पण्डया ने बटूक को आशीर्वाद प्रदान किया। परिवार के वयोवृद्ध श्री वासुदेव पण्ड्या ने यज्ञोपवीत संस्कार की महत्ता प्रतिपादित की। इसी क्रम में गंगाजल कलश यात्रा अग्रवाल समाज के नोहरे से हाटकेश्वर महादेव मंदिर तक निकाली गई। कलश यात्रा में बैण्ड की सुमधूर स्वरलहरियों के साथ समाज की 251 बहनों ने भाग लिया। इस सम्पूर्ण व्यवस्था में अशोक पंड्या, नरेन्द्र पंड्या, दिनेश पंड्या, आनंद प्रिय, गौरीशंकर, गजेन्द्र जोशी, हेमन्त जोशी, सुनिता जोशी, उनिता जोशी, भूदेव मेहता, शशिकांत मेहता ने पूर्ण सहयोग दिया। कार्यक्रम की समाप्ति पर भोजन प्रसादी का आयोजन हुआ, जिसमें बड़ी संख्या में समाज जनों की सहभागिता रही। इसी परिप्रेक्ष्य में रात को सुन्दरकांड पाठ श्री उमेश सेवक के निर्देशन में किया गया जिसमें ललित मेहता, उपेन्द्र मेहता, नवनीत जोशी, वीरेन्द्र जोशी, भरत जोशी, गोपाल कृष्ण रावल, रवि मेहता, प्रितेष मेहता ने सहभागिता निभाई। इस कार्यक्रम में भी सैकड़ों की संख्या में महिला एवं पुरूष उपस्थित रहे। आरती एवं प्रसाद वितरण के पश्चात कार्यक्रम हर्षोल्लास के साथ समाप्त हुआ।

- चंचर लाल जोशी, बांसवाड़ा, 9461573566

मातुश्री दिवालीबाई एवं पिताश्री हजारीमलजी

की स्मृति में पुत्र पारसमल एवं अशोककुमार एवं परिवार द्वारा भावभीनी श्रृद्धांजली

नागर परिवार, शिवगंज (बरलुट) राज.

पिता

पिता जीवन है, संबल है, शक्ति है,
पिता सृष्टि के निर्माण की अभिव्यक्ति है।।
पिता उंगली पकड़े बच्चे का सहारा है,
पिता कभी कुछ खट्टा, कभी खारा भी है।।
पिता पालन है, पोषण है, परिवार का अनुशासन है,
पिता धौस से चलने वाला प्रेम का प्रशासन है।।
पिता रोटी है, कपड़ा है, मकान है,
पिता छोटे से परिंदे का बड़ा आसमान है।।
पिता अप्रदर्शित अनन्त प्यार है,
पिता है तो बच्चो को इन्तजार है।।
पिता से ही बच्चो के कई साकार सपने है,
पिता है तो बाजार के सारे खिलौने अपने है।।
पिता से परिवार मे प्रतिपल राग है,
पिता से ही माँ की बिंदी और सुहाग है।।

माँ

संवेदना है, भावना है, अहसास है माँ,
जीवन के फूलो मे खुशबू का वास है माँ।।
रोते हुए बच्चे का खुशनुमा पलना है माँ,
मरुस्थल मे नदी या मीठा-सा झरना है माँ।।
लोरी है, गीत है, प्यारी-सी थाप है माँ,
पूजा की थाली है, मंत्रो का जाप है माँ।।
आँखो का सिसकता हुआ किनारा है माँ,
गालो पर मीठी पप्पी है, ममता की धारा है माँ।।
झुलसते दिनो मे कोयल की बोली है माँ,
मेहंदी है, कुमकुम है, सिंदूर की रोली है माँ।।
कलम है, दवात है, स्याही है माँ,
परमात्मा की स्वयं एक गवाही है माँ।।
त्याग है, तपस्या है, सेवा है माँ,
अनुष्ठान है, साधना है, जीवन का हवन है माँ।।

नागर टी डिपो
शिवगंज (राज.)
09413247214 (पारसमल)

सीमा सिन्थेटिक्स
भिवण्डी (मुंबई)
09322187100 (अशोककुमार)

बांसवाड़ा में

बच्चों से लेकर बुजुर्गों के लिए पांच दिवसीय आयोजन

लहराती धर्मध्वजा, ढोल नगाड़ों के समवेत स्वर के बीच भगवा टी शर्ट धारण किये युवाओं की टोली जो जय-हाटकेश, जय महादेव के नारों से आसमान गूंजा रही थी, महिलाएं पितवर्णी एक-सी साड़ियां पहने बाबा हाटकेश के भजन कीर्तन करती हुई चल रही थी। बाबा भोलेनाथ वर घोड़े में पुष्पहारों से सुसज्जित मन मोह रहे थे। यह दृश्य हाटकेश्वर जयन्ती पर बांसवाड़ा नगर में उस वक्त था जब भगवान आशुतोष सायं 6.30 बजे नगर भ्रमण पर निकले थे। जिधर शोभायात्रा निकलती उधर रास्ते जाम होते, युवाओं, बुजुर्गों, महिलाओं सभी वर्ग के चेहरे उल्लास और उमंग से सराबोर थे। वे भगवान भोलेनाथ के भजनों पर नाच-गा रहे थे। बीच चौराहों पर गरबा नृत्य, आतिशबाजी, पुष्पवर्षा से वातावरण शिवमय हो गया था, महादेव की सवारी 2 घंटे नगर भ्रमण पर के पश्चात पुन: हाटकेश्वर मंदिर प्रांगण में पहुंची जहां महाआरती के पश्चात सामूहिक भोज का आयोजन हुआ, जिसमें समाजजनों ने पिताम्बर पहनकर परम्परागत रूप से प्रसाद लिया। इससे पूर्व दिनांक 09 अप्रैल से ही हाटकेश्वर पाटोत्सव के कार्यक्रमों का शुभारंभ हो गया था। 09 अप्रैल को श्रीकृष्ण महिला मंडल द्वारा भगवान भोलेनाथ को अपने भावपूर्ण भजनों से प्रसन्न किया।

10 अप्रैल को नन्हें-मुन्ने बच्चों व युवाओं के मनोरंजनार्थ फन फेयर का आयोजन किया गया, जिसमें महिलाओं और बच्चों द्वारा विभिन्न व्यंजन बनाकर स्टाल लगाई गई, जिनका सभी वर्गों ने आनंद लिया।

11/04/14 को रात्रि 8.30 बजे श्रृंगार के पश्चात महाआरती एवं बाद में भक्त नरसी मेहता के जीवन चरित्र पर आधारित श्री विजयशंकर पंड्या द्वारा 1942 में सूरबद्ध किये गए भजनों का श्री सुरेश पंड्या द्वारा गायन किया गया, जिनके भावों से उपस्थित जन समूह भक्ति रस में डूब गए।

12 अप्रैल को भव्य श्रृंगार के साथ-साथ प्रदोष होने से रूद्राभिषेक पाठ किया गया। तत्पश्चात महाआरती जय गंगाधर उतारी गई। फिर प्रारंभ हुआ 75 वर्ष पूर्ण हो चुके महानुभावों का स्वागत व सम्मान समारोह अमृत-महोत्सव जिसमें सर्व श्री हीरालाल त्रिवेदी, शंकर प्रसाद पंडया, भद्रशंकर जी, लाभशंकर जी, कन्हैयालाल जी, हरवंसलाल जी, ललित किशोर जी का आचार्य श्री इंद्रशंकर जी द्वारा शॉल ओढ़ाकर, श्रीफल भेंटकर सम्मान किया गया।

इस अवसर पर 365 योजना के कैलेण्डर का विमोचन भी किया गया। अमृत महोत्सव के पश्चात सांस्कृतिक संध्या का आयोजन हुआ, जिसमें नन्हें मुन्ने बच्चों एवं बड़ों ने भी एक से बढ़कर एक कार्यक्रम, नृत्य, गीत सुनाकर श्रोताओं की वाहवाही लूटी। अंत में शैक्षिक सांस्कृतिक, खेल आदि में अव्वल आने वाली प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन उपाध्यक्ष श्री आशीष दवे और आभार समाज के अध्यक्ष श्री दिलीप दवे ने प्रकट किया।

13 अप्रैल को रणछोड़ राय द्वारा रचित दुर्गा सप्तशती आधारित तेरह गरबों का भाई भक्त श्री उपेन्द्र भाई द्वारा गायन किया, जिसमें श्रोताओं ने साथ में गाकर भक्ति रसपान किया। तत्पश्चात महाआरती का आयोजन हुआ। रात्रि 10 बजे से रंगारंग गरबानृत्य का आयोजन किया, जिसमें युवक-युवतियों ने जमकर गरबा खेला।

बांसवाड़ा नगर के बड़नगरा नागर समाज के लिए हाटकेश्वर क्रिकेट विश्वकप सी दिवानगी लेकर आता है, जिसे युवा वर्ग हर वर्ष कुछ नया लेकर आते है और उत्सव हर वर्ष यादगार बना रहता है।

प्रस्तुति: चेतन राय नागर
कुबरिया चौक, नागर वाड़ा बांसवाड़ा राज.
9950646609

CONGRATULATIONS !!!

Mrs.Smriti Mehta
(W/o. Shri Amit Mehta)
and daughter of
Smt. Nirmala & Shri Tej Prakash Rawal
has been conferred Ph.D. in mathematics from Barkatullah University, Bhopal.

Mrs. Smriti, who's working with **Truba Institute of Engineering & Information Technology Bhopal,**
Completed her thesis
"Fixed Point Results in Probabilistic Metric Space & Random Space"
under guide Lt. Cdr. Dr. A.D.singh of MVM-Bhopal and Co-guide Dr. P.L. Sanodia of IEHE-Bhopal. The viva voce was done on 4th February 2014.

Heartiest Congratulations from all of the family, friends, college management, colleagues and everyone on successful completion of doctorate.

के विवाह की 50 वी वर्षगाँठ दिनांक 18 मई 2014 के अवसर पर सभी परिजनों एवं मित्रों ने हार्दिक बधाई दी

बधाईकर्ता - श्रीमती शालिनी-देवेश नागर (पुत्रवधु-पुत्र) श्रीमती अनीता-पंकज चौबे (पुत्री-दामाद), श्रीमती दिव्या-ओमप्रकाश शर्मा (पुत्री-दामाद), श्रीमती स्मिता-पीयूष रावल (पुत्री-दामाद), श्रीमती मुदिता-मनीष नागर (पुत्री-दामाद) एवं आकाश, पलाश, शाश्वत, अवनि, इशिका एवं हार्दिक.

श्री हाटकेश्वर धाम निर्माण में जीवन पर्यन्त दान

पं. जमना प्रसाद पाठक

अपनी पेंशन की राशि में से प्रतिमाह 1111/- रू. जीवन पर्यन्त दान देने वाले दाता पं. जमना प्रसाद जी पाठक उम्र 81 वर्ष जो कि नगर पंचायत शुजालपुर से रिटायर होकर उज्जैन में बड़े गणपति के पास गुरू कॉलोनी में परिवार सहित निवास करते हैं। यहां में इनके बारे में एक रोचक कहानी बताता हूं। श्री हाटकेश्वर धाम का निर्माण कार्य प्रारंभ हुआ था और पीलर के लिये जेसीबी से गड्ढे खोदे जा रहे थे। एक दिन एक अनभिज्ञ बुजुर्ग हाथ में लकड़ी का सहारा लेकर निर्माण कार्य को देख रहे थे। समीप में हम लोग बैठे थे। हमने इनका अभिवादन किया और बैठने के लिय कुर्सी प्रदान कर परिचय हुआ। इसके के बाद वे प्रतिदिन शाम के समय 1-2 घंटे आकर निर्माण कार्य का अवलोकन करने लगे। इनसे हमारा भी स्नेह हो गया। समय बीतता गया। एक दिन इन्होंने हमारे सामने 11000/- रू. दानराशि देने का प्रस्ताव रखा कि मैं इकट्ठी राशि तो दे नहीं सकता, लेकिन यदि आप स्वीकार करें तो मैं प्रतिमाह किश्तों में अपनी पेंशन में से दे दूंगा। हमने इनका आशीर्वाद समझकर यह दानराशि शिरोधार्य की। दूसरे दिन माह जनवरी 2014 से दिसम्बर तक 13332/- किश्तों की राशि प्रदान कर दी। जिस दिन राशि प्रदान की। हम निर्माण कार्य के पास ही बैठे थे ओर इनके एकदम उठने से पांव मुड़ गया बड़ी मुश्किल से इन्हें उठाया, उस समय तो बाबूजी घर चले गये। दूसरे दिन जब नहीं आये तो हमने जानकारी प्राप्त की तो मालूम पड़ा बाबूजी का पैर फ्रेक्चर हो गया तथा पट्टा चढ़ा है, तथा घर पर आराम कर रहे हैं। हम लोग इनके घर गये तथा समय-समय पर इनके अच्छे स्वास्थ्य की भगवान हाटकेश्वर से प्रार्थना करते रहे। एक दिन बाबूजी ने एक पत्र लिखकर हमें निवेदन किया कि मैं यह राशि जीवन पर्यन्त देना चाहता हूं। कृपया स्वीकार करें। हम लोग स्तब्ध हो गये कि एक अन्जान आदमी जो श्री हाटकेश्वर धाम के लिए इतनी श्रद्धा रखेगा। मैं ऐसे दानदाता को नमन करता हूं तथा भगवान हाटकेश से प्रार्थना करता हूं कि उन्हें स्वस्थ और सुखी रखें। श्री पाठक साहब अब ठीक हो गये हैं और पूर्व की भांति प्रतिदिन निर्माण कार्य का अवलोकन कर रहे हैं।

संतोष जोशी-सचिव

श्री हाटकेश्वर धाम निर्माण कार्य प्रगति पर

भगवान श्री हाटकेश्वर की असीम कृपा एवं पूज्य गुरूदेव पं. श्री कमलकिशोर जी नागर महाराज के आशीर्वाद से श्री हाटकेश्वर धाम निर्माण कार्य तेज गति से चल रहा है। प्रथम तल मंजिल पूर्ण होकर दूसरी मंजिल की छत का सेंटिंग एवं बीम-पीलर तैयार हो गए हैं। शीघ्र ही छत भी इसी माह में भर जाएगी।

विनम्र निवेदन

श्री हाटकेश्वर धाम का निर्माण कार्य तीव्र गति से चल रहा है। समाज के उन दाताओं से न्यास मंडल निवेदन करता है कि जितनी राशि की आपने घोषणा की है। वह राशि शीघ्र जमा कर सहयोग प्रदान करें तथा समाजजनों से भी मंडल विनम्र अपील करता हूं कि इस पुनीत कार्य में तन-मन-धन से सहयोग प्रदान करें, ताकि समाज की यह धरोहर सिंहस्थ 2016 से पूर्व तैयार हो जाए।

दान राशि या तो उज्जैन कार्यालय में जमा कर देवें या भारतीय स्टेट बैंक कंढाल शाखा के खाता के क्रमांक 32715150447 नागर ब्राह्मण हाटकेश्वर मंदिर न्यास उज्जैन में जमा कर सचिव संतोष जोशी मो. 9425917541 पर सूचित कर देवें, ताकि आपकी रसीद भेजी जा सके।

शुभम मेहता के शोध का अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशन

शुभम मेहता, सुपुत्र श्री अरुण-उषा मेहता, नरसिंहगढ द्वारा लिखे गए शोध पत्र - "Sociological Analysis of Globalization and ItÓs Impact on Indian Rural Economy" को शोध क्षेत्र के विख्यात अंतर्राष्ट्रीय जर्नल-"International Inde&ed Refereed Research Journal" में प्रकशित किया गया हे। गत वर्ष भी उन्होंने एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मलेन में अपने शोध कार्यों को प्रस्तुत किया था। शुभम मेहता ने B.Tech (Agricultural Engineering) एवं M.B.A. (Rural Management) में अपनी शिक्षा पूरी करने के पश्चात कृषि, जल संसाधन, पर्यावरण प्रबंधन एवं ग्रामीण विकास के क्षेत्र में विशेष योग्यता हांसिल की है। वे GVT-KRIBHCO के गुजरात क्षेत्रीय कार्यालय में वरिष्ठ परियोजना अधिकारी-(जल संसाधन विकास एवं प्रबंधन) के पद पर कार्यरत हैं। समस्त मेहता एवं व्यास परिवार उनकी इस विशेष उपलब्धि पर गौरवान्वित हैं।

- दिव्या मंडलोई, इंदौर

लखनऊ की शिवांगी व्यास की इन्दौर में नियुक्ति

लखनऊ की शिवांगी व्यास की नियुक्ति इन्दौर की काया स्किन क्लीनिक में क्लीनिक मैनेजर के पद पर हुई है। वे इन्टरनैशनल बिसनेस एवं मार्केटिंग में पोस्ट ग्रैजूइट है। यह इससे पहले देव्यानी इन्टरनैशनल के कौस्टा कौफी डिविजन, हिमालयम रिसौर्ट्स और क्लब महिंद्रा रिसौर्ट्स में कार्य कर चुकी हैं। हमारी शुभकामनायें।

महिम्न भट्ट को सुयश

महिम्न भट्ट (सुपुत्र श्री प्रवीण कुमार-सौ. प्रीति भट्ट) ने कक्षा 12वीं सीबीएससी बोर्ड से 92.3 फीसदी एवं पी.सी.एम. ग्रुप में करीब 94 फीसदी अंक प्राप्त कर समाज एवं परिवार को गौरवान्वित किया। इस अवसर पर बहन कुमारी तितिक्षा भट्ट दादी श्रीमती सुमन भट्ट दादाजी श्री सुभाष भट्ट हायकोर्ट एडवोकेट एवं स्नेहीजनों, रिश्तेदारों ने महिम्न को बधाई प्रेषित की है।

482 काटजुनगर, रतलाम
फोन- 07412-222883

भारती त्रिवेदी को पीएचडी

श्रीमती भारती त्रिवेदी को डीडीयू नडियाड द्वारा 9 मई 2014 को पीएचडी की उपाधि प्रदान की गई। भारती त्रिवेदी वर्तमान में बड़ौदा (गुजरात) में निवस करती है एवं डॉ. विजय शंकर त्रिवेदी-स्व. निर्मला देवी त्रिवेदी की पुत्रवधू है। आपके पति श्री अजय त्रिवेदी का स्वव्यवसाय है। भारती त्रिवेदी की माताजी श्रीमती माधुरी मेढ़ एवं पिता स्व. श्री अजीत मेढ़ ऋषिकेष के निवासी रहे एवं माताजी वर्तमान में इंदौर में निवासरत हैं। श्रीमती त्रिवेदी को परिजनों, रिश्तेदारों ने बधाई प्रेषित की है।

कृतिका मेहता को सुयश

कु. कृतिका मेहता (सुपुत्री-श्री नारायण मेहता निवासी मड़ावदा) ने सरस्वती शिशु विद्या मंदिर खाचरोद में नियमित छात्रा के रूप में वर्ष 2014 की कक्षा दसवीं की परीक्षा में 80 फीसदी अंक अर्जित कर तहसील में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त किया। उनकी उपलब्धि से परिवार एवं समाज गौरवान्वित हुए।

-राजेन्द्र रावल

श्रीमती अपूर्वा नागर को विदेश में प्रतिनियुक्ति

श्रीमती अपूर्वा (टीना) दीपक नागर (पुत्रवधू-श्रीमती सरोज-नरेन्द्र नागर(कायथा) जो कि वर्तमान में टीसीएस. पुणे में इन्फरमेशन टेक्नालॉजी एनलिस्ट के पद पर पदस्थ हैं। उनको कंपनी में श्रेष्ठ कार्य के मद्देनजर एक वर्ष हेड न्यूयार्क (यूएसए) में प्रतिनियुक्त किया है। सम्पूर्ण नागर समाज उनके उज्जवल भविष्य की कामना करता है।

-प्रेषक सुरेश चंद्र रमाशंकर मेहता
जवाहर नगर, उज्जैन

फाल्गुनी जोशी को सुयश

नागर समाज खण्डवा के श्री आनंद जोशी की सुपुत्री कु. फाल्गुनी जोशी को सीबीएसई कक्षा 10वीं की परीक्षा में 9.4 सीजीपीए अंक प्राप्त कर 94 प्रतिशत प्रथम रैंक बनाया। फाल्गुनी की इस उपलब्धि पर माता-श्रीमती तनुजा जोशी (प्रभारी प्राचार्य शिक्षा महाविद्यालय खण्डवा) पिता- श्री आनंद जोशी उपाध्यक्ष शिक्षा प्रकोष्ठ भाजपा खण्डवा, प्राचार्य एवं स्टॉफ भण्डारी पब्लिक स्कूल खण्डवा ने बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित की है। फाल्गुनी ने इस उपलब्धि से जोशी परिवार सहित नागर समाज को गौरवान्वित किया है।

अभिषेक मेहता ने किया गौरवान्वित

माध्यमिक शिक्षा मंडल भोपाल द्वारा घोषित हायरसेकण्डरी के परीक्षा परिणाम में कामयाबी हासिल करते हुए एक छोटे से गांव देंदला के कक्षा 12वीं के विज्ञान संकाय के छात्र अभिषेक मेहता ने कड़ी मेहनत के बल पर शासकीय उत्कृष्ट विद्यालय क्र.1 शाजापुर से 85 प्रतिशत अंक हासिल कर अपने विद्यालय का एवं अपने परिवार का और अपनें छोटे से गांव देंदला का नाम जिलें में रोशन किया। उन्होनें गांव देंदला से शाजापुर विद्यालय तक का करीब 30 कि.मी. दूर का रास्ता तय कर दिन रात कडी मेहनत व पूरी लगन के साथ आज यह मुकाम हासिल किया। इन्होनें अपनी उपलब्धि का श्रेय अपनी माता श्रीमती किरन मेहता एवं पिता श्री प्रकाश मेहता और अपने आदरणीय गुरूजनो एवं भाई बहन को दिया। इनका लक्ष्य हैं कि आगे डाक्टर बनना हैं। इनकी इस बेहतर सफलता के लिए परिवारजनों नें हर्ष जताया।

श्री व्यास को बधाइयां

श्री अभिषेक व्यास पिता श्री महेन्द्र व्यास महेश (उज्जैन) ने बी.ई. तथा पूणे से एम.बी.ए. किया है। श्री व्यास, मारूति-सुजुकी इण्डिया लिमि. में मार्केटिंग मेनेजर पद पर विगत एक वर्ष से पदस्थ हैं। श्री व्यास की सफलताओं पर परिवारजनों एवं मित्रों ने उन्हें बधाइयां देते हुए उज्जवल भविष्य की शुभकामना दी। श्री व्यास, गोवर्धन लाल जी व्यास के पौत्र हैं।

प्रेषक- सौ. वीणा सत्यप्रकाश आर्य (इंदौर) 0734-2517845

कु. अवनी रावल, (पुत्री श्रीमती स्मिता रावल एवं श्री पियूष रावल) निवासी हैदराबाद ने CBSE बोर्ड की कक्षा 10 वी में 10 CGPA प्राप्त कर नागर समाज का गौरव बढाया है. बहुत बहुत बधाई एवं उज्जवल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनायें

श्री शाश्वत शर्मा (पुत्र श्रीमती दिव्या एवं श्री ओमप्रकाश शर्मा) निवासी भोपाल ने CBSE बोर्ड की कक्षा 10 वी में 10 में से 8.6 CGPA प्राप्त कर नागर समाज का गौरव बढाया है. बहुत बहुत बधाई एवं उज्जवल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनायें.

ओ.पी. शर्मा, भोपाल, मो- 9826047546

अमृतवाणी: प्रतिभाओं को करें प्रोत्साहित

नागर समाज के जिन विद्यार्थियों ने परीक्षाओं में उपलब्धि अर्जित की गई है उनके विवरण एवं फोटो अवश्य भेजें, सुयशवाणी में निःशुल्क प्रकाशित किए जाएंगे।

वामा™ क्रीम
सेल्समेन चाहिये
हमारे विभिन्न उत्पादकों की बिक्री हेतु पूरे भारत में टूरिंग विक्रय प्रतिनिधियों की आवश्यकता है।
वेतन- योग्यता अनुसार
अनुभव- आयुर्वेदिक दवा या कॉस्मेटिक्स विक्रय का 2 वर्ष का अनुभव अनिवार्य
अपना बॉयोडाटा शीघ्र भेजें
अंजू फार्मास्यूटिकल्स
111/112, अलंकार चेम्बर्स, रतलाम कोठी, ए.बी. रोड, इन्दौर फोन 0731-2527415
मो. +91-98935-62415, (नवीन झा), 94250-62415
Email : navin@anjupharma.com Website : www.anjupharma.com

अकलेरा (राज.) निवासी श्री अम्बालालजी-स्व.श्रीमती शान्तिदेवी नागर की सुपौत्री एवं कुलेन्द्र नागर-श्रीमती गायत्री नागर की सुपुत्री व इंजी. हर्षित की बहन आयुष्मति **हर्षा** का मंगल परिणय राजगढ़ (ब्यावरा) निवासी स्व.श्री लालशंकरजी-स्व.श्रीमती प्रभादेवी व्यास के सुपौत्र एवं श्री संजयजी-श्रीमती प्रीति नागर के सुपुत्र आयुष्मान **सौरभ** के साथ दिनांक 29 मई 2014 को राजगढ़ की होटल संस्कृति पैलेस में पारंपरिक रीति-रिवाजों के साथ संपन्न हुआ। विवाह समारोह में नागर समाजजन, इष्ट मित्रों एवं रिश्तेदारों ने पधारकर नवयुगल हर्षा-सौरभ को शुभाशीर्वाद प्रदान किया। कुलेन्द्र नागर (एडव्होकेट) ने अपने सभी परिवारजनों की ओर से सभी मेहमानों का आभार मानते हुए आगमन पर धन्यवाद प्रेषित किया।

रेखा मिश्रा
भोपाल- 7 जून
वीणा दुबे
अमेरिका - 9 जून
चरित्र मेहता
हैदराबाद- 29 जून
डॉ. भुवनेश मेहता
इंदौर-22 जून
चित्रांग जोशी
इंदौर- 29 जून
कु. शिवानी सत्यम जोशी
(पोर्टलैंड-अमेरिका)
1 जून 14
कु. वंदना पुरूषोतम जोशी
इंदौर, 15 जून 14
डॉ. श्रीमती रेणुका प्रदीप मेहता
इंदौर, 24 जून 14
- पी.आर जोशी
528 उषा नगर,
एक्स. इंदौर

Pt.Mohanlal - Hemlata Sharma
(8 Jun)
All Sharma Family. Rau

DR.RAJENDRA RASHMI NAGAR
10/6/2014
ALL NAGAR FAMILY.
UJJAIN-09926491717

सौ. गायत्री-नरेन्द्र मेहता, इंदौर - 5 जून
सौ. दुर्गा-सुरेश जोशी, इंदौर 12 जून
मो. 9407138599
सुनीता शैलेन्द्र जी रावल
शादी-17 मई
बधाईकर्ता- प्रीति-धीरज रावल उज्जैन

पुत्री रत्न-विगत 14 मई 2014 को सौ. पायल-आयुष दास को पुत्री रत्न की प्राप्ति हुई। दादा-दादी श्री विजय दास- सौ. शक्ति दास एवं नाना-नानी श्री रवीन्द्र पोत्दार-सौ. कामिनी पोत्दार इस अवसर पर फूले न समाए। रिश्तेदारों ने बधाई दी है।

कन्या का जन्म-सरस्वती नागार (इलू)- अशोक नागार, खिलचीपुर के यहाँ कन्या का जन्म दिनांक 10.5.2014 को हुआ। कन्या के नाना-नानी श्री रमेशचंद- श्रीमती मधुबाला नागार,पचलाना से बधाई करते हैं।

मान-उतराई-प्रीति-सतीश नागार, बड़ोदिया (तालाब) के सुपुत्र लक्की नागार की मान-उतराई व भण्डारा किया गया। लक्की के नाना-नानी श्री रमेशचंद-श्रीमती मधुबाला नागार,पचलाना ने बधाई दी।

श्रीमती सुनीता-अनिल नागार
27 जून
शुभेच्छु :- राहुल, दिव्या एवं समस्त नागार परिवार
श्रमिक कॉलोनी राऊ

नेताजी के पेट का आकार

लो हो गये चुनाव
सोचा था होगा कुछ बदलाव
लेकिन वही ढर्रा
अध पके खयाली पुलाव
वही शिक्षा वही शिक्षक
वही जर्जर स्कूल
बढ़ी है तो
केवल फीस सौ प्रतिशत
वही सिकुड़ती गलियां
बदबूदार नालियां
आवारा
गाय बकरियां
बढ़ा है केवल अतिक्रमण
बीमारी संक्रमण
बढ़ी है दवाई की कीमत
पल-पल क्षण-क्षण
बढ़ी है महंगाई
दिनों-दिन
कहा था
घटाने में लगेंगे केवल सौ दिन
वहीं सड़क गड्ढे वहीं
खटारा बसें
वही टक्कर वही लाशें
वही घड़ियाली वही आंसू
कह रहे थे
परिवर्तन लाएंगे धांसू
वही नगर वही पालिका
टेक्स लगेगा अलग- नागार, अलग
मकान फाटक जाली का
वही पुलिस, वही डण्डे
बढ़े है शोर, चोर, गुण्डे,
होते रहेंगे ऐसे ही चुनाव
वही प्रचार
कुछ बदले ना बदले
वोट डालते रहेंगे
इसी प्रकार
मगर बदलेगा जरूर
नेताजी के पेट का आकार

-ईश्वर लाल नागार
छापरी तराना
98964882281

Best wishesh from : smt. Gangadevi-Otmalji Nagar Family (Jalore) Bansilal-Durgadevi Nagar, Hemant-Lalita Nagar, Chetan-Mamta Nagar, Mohan-Manju Nagar, Rameshkumar-Lalitha Nagar, Himanshu(Ipg wala)-Madhuri, Jinal, Yogesh, Gunjan, Yogansh & palak.
Bangalore (Jalore) mob: 09880391116, 09341934941.

जन्मदिवस पर हार्दिक...हार्दिक... बधाईयां

दैनिक चैतन्य लोक परिवार, इन्दौर फोन : 0731-2450018

पुण्य स्मरण

पूज्य पिताश्री
स्व. जोईतारामजी नागर
5 जून
श्रद्धावनत : समस्त स्व. पार्वती देवी स्व. जोईतारामजी नागर परिवार
उम्मेदाबाद (जालोर) राजस्थान
मो. 09480071000 / 09480073000 / 8867406351

दाद, खाज, खुजली से परेशान हैं?
चंद्रश्री
गज़ब
GMP CERTIFIED
लोशन एवं मल्हम लगाइये
A SYMBOL OF QUALITY
CHANDRASHREE LABORATORIES & FARM PRODUCTS P. LTD., RAO (INDORE) 453 331

अधिकृत विक्रेता पम्प डिस्ट्रीब्यूटर
जी-1, बाबादीप कॉम्प्लेक्स, सियागंज, इन्दौर फोन: 9301530015

विवाह योग्य युवक-युवती परिचय

कुसुम पिता दिनेश नागर
जन्म-14.05.1994
योग्यता -12 वी, पिता की आय- 70000
मो. -9926879505

लक्ष्मी स्व. प्रदीप नागर

12.09.1980/12.31ए एम/बनारस
शिक्षा-एमएससी, बीएड
अध्यापिका बनारस
20,000 प्रतिमाह
9839447258

नेहा विजय व्यास
14.08.1985/3.40 एएम (शहडोल)
शिक्षा-पोस्ट ग्रेजुएट एमएससी बायो. बीएड इंदौर के निजी कन्या हाईस्कूल में टीजीटी
इंदौर, 9329430312

आरती सोमदत्त नागर

07.10.1987/7.55एएम (जयपुर) शिक्षा- एमए (संस्कृत एवं पोलि. साइंस) डिप्लोमा- अर्ली चाइल्ड हुड केयर एंड एजु. जयपुर, 9772573380

अर्पिता स्व. श्री दिलीप त्रिवेदी (मांगलिक)

09/09/1989 शाजापुर/ 08.52एएम, एमकॉम, कम्प्यू. एप्ली. एंड एडीसीए, कार्यरत-टीचर शाजापुर
09425084699

निकीता शैलेन्द्र कुमार मंडलोई
(मांगलिक) 24.07.1988/ 4.20सायं
जबलपुर, एम.कॉम, पीजीडीसीए
सम्पर्क-जबलपुर, 9329003583

मनु स्व. एम.एल. तिवारी
पूर्व विधायक इलाहाबाद (नागर में इच्छुक)
01.01.1995, शिक्षा-10वीं
शा.महा. कार्या. कर्मी, प्रा.टीचर, 15000 प्रतिमाह/सम्पर्क-
दिगवाड़ (रायसेन) 09993413635

अभिषेक अवनिन्द्र नागर

जन्म दिनांक- 17.09.1978
समय- 2.26 प्रात:काल
शिक्षा- एम.एस.सी. इन्फर्मेशन
कार्यरत-आयटी कंपनी दिल्ली
वार्षिक आय:- 2.4 लाख
तलाकशुदा (त्वरित तलाक),
सम्पर्क- 09837002517

अभिषेक दिलीप कुमार नागर
(आंशिक मांगलिक)
30-7-1984 02:55 पीएम
लखनऊ राष्ट्रीय बैंक के मेरठ शाखा में कार्यरत।
09415437385, 09454411353

अभिषेक महेन्द्र व्यास

08.01.1988/ 8.55एएम
उज्जैन
शिक्षा- बी.ई, एम.बी.ए
कार्यरत-मार्केटिंग मैनेजर, मारूति सुजुकी इं. लिमि., सम्पर्क- 9826541324

पवन रमेशचंद्र व्यास

09.02.1985/07.15 प्रात:
शिक्षा- बी.कॉम, कद- 165"
व्यवसाय- शासकीय सेवा (संविदा)
आय- 10000/-, 9424832502

वाणी से रिश्ते

गृहस्थ जीवन में पहला कदम

राऊ नगर (इन्दौर) में
1. दिन 18 अप्रैल 2014-
सौ. का. शिवानी तनुजा श्री राजेन्द्र शर्मा सुपोत्री स्व. श्री सुखदेव शर्मा का परिणय संस्कार संग श्री आशीष दुबे आत्मज श्री श्यामलाल दुबे-बोरिया (देपालपुर) गोधूलि की शुभ बेला में पारिवारिक सानंदोलन के साथ सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

2. दिनांक 1 मई 2014
सौ.का. मेघा (मोना) तनुजा श्री शरद शर्मा सुपोत्री स्व. श्री वासुदेव शर्मा का परिणय संस्कार संग श्री योगेश (यश) शर्मा सुपुत्र श्री दिनेश शर्मा सुपोत्र स्व. श्री शिवनारायण जी शर्मा नरसिंहगढ़ गोधूलि शुभबेला में पारिवारिक सानंदोलन के साथ सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

- पी.आर जोशी
528 उषानगर एक्सटेंशन, इंदौर

3. मैं आपका और आपकी पूरी टीम का आभारी हूं। क्योंकि हाटकेशवाणी की मदद से मेरी बेटी का सम्बन्ध तय हुआ है। जिसका विवाह 29 मई को हुआ है।

- कृष्णवल्लभ शर्मा
कुरावर, 9993041480

एक पेड़ से लाखों माचिस की तीलियां बनती है, लेकिन एक तीली लाखों पेड़ों को जला देती है। इसी प्रकार एक नकारात्मक विचार आपके हजारों सपनों को जला सकता है। इसलिये हमेशा सकारात्मक ही सोचें।

समाजसेवा का सबसे अच्छा तरीका

राजनीति के माध्यम से समाजसेवा करने या समाजसेवा करने के लिए राजनीति में आए हैं, ऐसा सुना तो जता है परन्तु इसका मूर्त रूप देखना हो तो मेरे साथ महाराष्ट्र चलिए। सरकारी चिकित्सा सुविधाओं को इसमें जोड़ना उचित नहीं है क्योंकि उसकी सुविधा तो देश के सभी प्रदेशों में है। महाराष्ट्र में राजनीति के माध्यम से समाजसेवा का अलग ही रूप देखने को मिला। वहां के विधायक अपने एक विश्वस्त को चिकित्सा विभाग का प्रभारी ही बना देते हैं। उस प्रभारी की यह जिम्मेदारी है कि उस विधानसभा क्षेत्र के रहवासियों को वह बेहतर चिकित्सा नि:शुल्क या उचित मूल्य पर दिलवाएं। वे प्रभारी जरूरतमंद की पहचान उसके राशन कार्ड के द्वारा करते हैं कि वह उन्हीं के क्षेत्र का निवासी है।

एक बात ओर है कि ये चिकित्सा प्रभारी शहर के सभी नामी गिरामी अस्पतालों और डॉक्टरों के सम्पर्क में रहते हैं, इनका काम ही यह है कि जरूरतमंद मरीजों का इलाज वे सुविधाजनक तरीके एवं कम से कम पैसे में करवाएं। चूंकि सभी बड़े अस्पतालों में शासन ने रियायती दरों पर जमीनें उपलब्ध कराई हैं तो उन अस्पतालों का कर्तव्य है कि वे जरूरतमंद मरीजों को कम शुल्क में श्रेष्ठ इलाज की सुविधा दें, लेकिन महाराष्ट्र के नेताओं का दबदबा भी है कि नामी, गिरामी चिकित्सा संगठन उनसे खौफ खाते हैं तथा भले ही भयवश वे जरूरतमंद मरीजों को नि:शुल्क इलाज मुहैया कराते हैं। यह परिपाटी हमारे राज्य म.प्र. में नहीं है।

इसी के साथ धार्मिक संगठन और मंदिरों के द्वारा भी चिकित्सा संस्थाएं संचालित की जाती है, इंदौर का गीता भवन अस्पताल इसका अपवाद है, परन्तु आज उसकी हालत स्वयं इलाज पाने की स्थिति में है। मुंबई में सुप्रसिद्ध सिद्धिविनायक गणेश मंदिर द्वारा शिक्षा एवं चिकित्सा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया जा रहा है। विद्यार्थियों को वापसी की शर्त पर नि:शुल्क पुस्तकें दी जाती है, तथा छात्रवृत्ति भी प्रदान की जाती है।

मंदिर ट्रस्ट की देखरेख में एक डायलेसिस केन्द्र चल रहा है जहां मात्र 250 रू. में डायलेसिस कराया जा सकता है। ये केवल उदाहरण मात्र है, परन्तु हम गहराई में जाकर देखें तो चिकित्सा ऐसा क्षेत्र है जो लोगों को दिल से जोड़ता है। यह भलने-भुलाने वाली चीज नहीं है। लोगों को यदि अपने प्रति दिल से जोड़ना है तो चिकित्सा सेवा से अच्छा उपाय कोई नहीं है। हमारे यहां (मध्यप्रदेश में) धार्मिक संगठनों तथा प्रवचनकारों का जोर गोशाला के निर्माण पर ज्यादा देखा जाता है। गाय को संरक्षित, संवर्द्धित करना भी अच्छा हैा, जरूरी है, लेकिन शुरूआत इंसान की स्वास्थ्य जरूरतों से की जाए तो ज्यादा लाभप्रद है।

मैंने अपनी मां श्रीमती प्रभा शर्मा को देखा कि वे भी परिचितों, रिश्तेदारों की चिकित्सा सेवा में सदैव तत्पर रहती। गांव शहर के लोग इलाज हेतु इंदौर आते तो उन दिनों वे हमारे घर में ही रहते। श्रीमती शर्मा के देहावसान के पश्चात त्रयोदशा कर्म (पगड़ी) के दिन कुछ रचनात्मक या हटकर करने की प्रेरणा भी शायद उन्होंने ही दी तथा श्रीमती प्रभादेवी शर्मा आकस्मिक चिकित्सा कोष की स्थापना उसी दिन की गई। इस कोष का उद्देश्य है कि भारतभर के किसी भी कोने से चिकित्सा के लिए इंदौर आने वाले समाजजनों को तत्काल आर्थिक सहयोग, मार्गदर्शन मिल सके। अभी तक अनेक समाजजनों ने इस कोष का लाभ लिया है। यही सच्ची समाजसेवा है तथा मेरा मानना है कि महाराष्ट्र मॉडल को हमें भी अपनाना चाहिए, तथा महंगी होती चिकित्सा का लाभ प्रत्येक व्यक्ति को मिले यह सुनिश्चित करना चाहिए। उपरोक्त लेख के सम्बन्ध में अपने विचार 20 जून 2014 तक हमें अवश्य भेज देवें। जुलाई अंक में उन्हें प्रकाशित किया जाएगा।

- **दीपक शर्मा**
94250-63129

जीवंत दिमाग: आनंद का स्रोत

दार्शनिक, विचारक आदि मानतें है कि जीवन का मुख्य लक्षण है गतिशीलता। गति खत्म तो जीवन भी खत्म। इसी तरह यदि हमारा मस्तिष्क भी एक विचार से दूसरे पर दूसरे से तीसरें पर निरन्तर चलायमान रहता है तो ही जीवंत माना जा सकता है। पर आजकल हमारा मस्तिष्क आलसी और निष्क्रिय होता जा रहा है। वास्तविकता जानने के लिए अपने आप से हमें यह प्रश्न करना चाहिए कि क्या हर क्षण हमारे दिमाग में नए विचार आते हैं या हम घूम फिर कर कुछ गिने चुने विचारों के दायरे मे बार-बार अटकते उलझते रहते हैं। वहीं ईर्ष्या-द्वेष, वहीं क्रोध, असंतोष, असहिष्णुता, वही अहंकार, घमंड और उद्दंडता का सैलाब उमड़ता घुमड़ता रहता है। इन विचारों की तीव्रता में कमी बेशी हो सकती है पर मूलतः ये ही विचार दिमाग को आक्रांत करते रहते हैं। रोज एक जैसे विचारों का जुलूस हमारे दिमाग में निकलता रहता है। नवोन्मेष रहित ऐसा मस्तिष्क विचारकों की निगाह में स्थिर आलसी और गतिहीन होता है। विचार या परिचित विचारों के समूह पर ठहरे हुए दिमाग के साथ गतिशील दिमाग का तालमेल नहीं बन पाता है और विकास अवरुद्ध हो जाता है। आनंदित जीवंत और सुखी जिंदगी जीने के लिए अपने मस्तिष्क को जीवंत बनाए रखना जरूरी है। अनचाहे और नकारात्मक विचारो से चिपके रह कर अपने दिमाग को डस्टबीन न बनने दें। दिमाग को बर्डन मुक्त रखें तथा स्वयं को हल्का और आनन्दित अनुभव करें। बादल वही होंगे बरसात की बुन्दे वही होंगी, पेड़-पौधे और पशु- पक्षी वही होंगे, सारा मन्जर वही होगा, पर पाएंगे कि आपका हृदय एक नयी ताजगी से प्रफुल्लित हो रहा है और आप जिंदगी को एक नये नजरिए से देखने लगे हैं।

डॉ. रणवीर नागर,
उज्जैन, फोन-07342521157

अतिथि बाल सम्पादक

पारिवारिक एवं सामाजिक मिलन सारिता की आवश्यकता

मैं कक्षा पांचवीं में चमेली देवी पब्लिक स्कूल में अध्ययनरत हूं। सर्वप्रथम मैं जय हाटकेश वाणी परिवार को धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने मुझे इस अंक में अतिथि बाल सम्पादक के रूप में अवसर दिया। मेरी उम्र के अनुसार मेरा व्यावहारिक अनुभव न के बराबर है, फिर भी मैं अपने साधारण अनुभव के आधार पर विषय के संदर्भ में विचारों की साझेदारी करूंगा।

पहले मैं कभी भी अपने मम्मी-पापा के साथ सामाजिक कार्यक्रमों में नहीं जाता था। घर पर टीवी देखता या मित्रों के साथ खेलना ही पसंद था। कभी-कभी मजबूरीवश ऐसे कार्यक्रमों में जाना भी पड़ता तो मैं बोर हो जाता। मेरे चाहे-अनचाहे सामाजिक कार्यक्रमों में न जाने के कारण एक बार मम्मी-पापा एवं दादा-दादी ने समझाया कि बेटा तुम हमारे साथ कहीं आते-जाते नहीं हो इस कारण तुम्हें कोई पहचानता नहीं एवं इसी कारण समाज में तुम्हारी किसी से दोस्ती भी नहीं है। साथ ही उन्होंने समझाया कि बेटा हर जगह आना-जाना चाहिए, नए दोस्त बनाना चाहिए, कोई आगे रहकर बात न भी करे तो अपनी तरफ से परिचय देकर दोस्ती की शुरूआत की जा सकती है। आने-जाने, मिलने-जुलने से मन की झिझक एवं शर्म खत्म होती है। बार-बार मिलने से मन मिल जाता है। यह बात समझ में आने के बाद अब मैं मम्मी-पापा, दादा-दादी के साथ ज्यादातर पारिवारिक, सामाजिक कार्यक्रमों में आता-जाता हूं तथा मेरे अनेक मित्र बन गए हैं मैं उनसे मिलता हूं तथा बोर नहीं होता। अंततः उपरोक्त लेख से मैं आप सभी बच्चों को बताना चाहता हूं कि आप भी सभी कार्यक्रमों में जाएं बल्कि हमारे घर आने वाले मेहमानों का अभिवादन कर उनसे परिचित अवश्य हों। मैं उम्मीद करता हूं कि मेरा अनुभव एवं लेख आपको जरूर पसंद आएगा। मम्मी-पापा की यह बात मुझे समझ में आ गई है कि बचपन के दोस्त जीवनभर साथ निभाते हैं। आप सब मुझसे वादा करें कि अब अपने परिवार के साथ हर कार्यक्रम में जाएंगे और नए-नए दोस्त बनाएंगे। धन्यवाद सह जय हाटकेश।

आपका
विशेष विवेक दुबे, इंदौर
मो. 98272-30832

बेडरुम में लगे आइने को हटा दो..

पति -(पत्नी से बोला) आज सुबह न मालूम किसका मुंह देखकर उठा था कि दिन का खाना नसीब नहीं हुआ ?

पत्नी बोली - मेरी मानो , बेडरुम में लगे आइने को हटा दो , वरना रोजाना यही शिकायत रहेगी।

मसानिया वैराग्य

लघु कथा- एक पुरुष बड़ा भावुक था। गाँव के एक जवान पुरुष की असामयिक मृत्यु हो जाने पर दाग में गया था, वहां अनेक ज्ञानी विद्वानों के बड़े भावुक भाषण हुए। इन भाषणों से वह पुरुष बड़ा प्रभावित हुआ। घर आया और पत्नी से बोला- संसार बड़ा असार है, जीवन क्षण भंगुर है, दुःख ही दुःख है। मुझे तो अब जल्दी ही साधु बनना है। कहाँ तक संसार से चिपका रहूँगा। मुझे अब आत्म-कल्याण करना है। कम से कम अगला भव तो सुधार लूँ। पत्नी बड़ी चतुर थी। उसने उस समय पति की हाँ में हाँ करना ही ठीक समझा। वह गम्भीरता से बोली- ठीक सोचा है आपने। आप बहुत अच्छा कार्य करने जा रहे हैं। मैं आपको अपनी राय क्यों दूँ? किसी के आत्म-कल्याण में बाधक बनना पाप है। अपने स्वार्थ के लिए मैं आपको कल्याण-मार्ग पर जाते हुए क्यों रोकूँ? पुरुष पत्नी की ओर आश्चर्य से देखने लगा। उसने पूछा- क्या तुम सच कह रही हो? पत्नी ने उसी प्रकार सहज भाव से कहा- हां, सच ही तो कह रही हूँ।

पत्नी ने बड़े स्नेह से कहा- अब आप सब कुछ छोड़कर जाने वाले हैं। संयम ग्रहण करने जा ही रहे हैं, तो आज मेरे हाथ का भोजन तो कर ही लीजिये। फिर ऐसा प्रसंग मुझे कहाँ मिलने वाला है। फिर तो आप भिक्षाचर्या करेंगे। फिर कब आप यहाँ पधारेंगे और कब हमें गोचरी का लाभ मिलेगा? पति ने कहा- ठीक है, भोजन तो करना ही है।

पत्नी ने पति के मनलायक हलवा, पुड़ी व खीर बनाई। थाल परोसकर अपने हाथों से खाना खिलाने लगी। पति खाने के कौर लेते जा रहा है और भाव पलटते जा रहे थे। वह सोच रहा है-कितना प्रेम? कितनी मनुहार? दीक्षा लेने के बाद कौन ऐसा प्रेम करेगा? आखिर व्यक्ति से न रहा गया। वह बोल उठा- तू मुझे कितनी मनुहार करके खिला रही है। दीक्षा लेने के बाद क्या होगा? वहाँ क्या कोई मेरी मां बैठी है, जो इतनी मनुहार करेगी। ना बाबा ना, अब अपना मन दीक्षा लेने का नही है।

पत्नी हंसकर बोली- नहीं लेना हो, तो मत लीजिये। आपको यहां से कौन धक्का देकर निकाल रहा है? मैं तो आपके लक्खण पहले से ही जानती थी। आप आनन्द से घर में रहो। कौन दीक्षा के लिए बिदा कर रहा है?

कैसा है- यह वैराग्य? जरा-सी अनुकूलता-प्रतिकूलता में मोम की भांति पिघल गया। बिना अन्तर्मन और बिना दृढ़ साहस के सच्चा शाश्वत त्याग कभी नहीं हो सकता। जीवन में संन्यास अंगीकार करने का मतलब है - संसार से विरक्ति, स्वयं के जीव को संसार के मायाजाल से मुक्त करना, दावानल से ऊपर करना। संन्यास है- ममत्व का नाश और चैतन्य की क्रान्ति।।

रूपया संग्रह करने में बहादुरी नहीं, संग्रहित रूपयों का सदुपयोग करने में बहादुरी है।

प्रस्तुति- अक्ष त्रिवेदी पीपलरावां

हिंदुओं के लिए भी शुभ है 786

आमतौर पर 786 को मुस्लिमों के लिए शुभ अंक माना जाता है। मुस्लिम परिवारों की गाड़ियों, घरों समेत कई स्थानों पर यह अंक दिखता है, लेकिन यह अंक हिंदुओं के लिए भी शुभ है। 786 का हिंदुओं से भी उतना ही गहरा ताल्लुक है जितना मुस्लिम बंधुओं का।

प्रदेश के ख्याति प्राप्त महादेव (पचमढ़ी) मंदिर के पुजारी गरीबदास ने 786 का विश्लेषण किया है। बाबा गरीबदास ने लिखा है कि जब ईश्वर या अल्लाह हवा, पानी और प्रकाश में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं करते हैं तो 786 के अंक के साथ भेदभाव क्यों? उन्होंने लिखा है कि 786 और भगवान श्रीकृष्ण एक-दूसरे के पूरक हैं, क्योंकि सात छिद्रों और सात स्वरों (7) वाली बांसुरी को देवकी के आठवें (8) पुत्र भगवान श्रीकृष्ण ने अपने दोनों हाथों की छह (6) अंगुलियों से बजाकर सारे संसार को मंत्रमुग्ध कर दिया था। श्री श्री 108 श्री महंत बाबा गरीबदास ने 786 को हिंदुओं के लिए पवित्र बताते हुए कई उदाहरण भी दिए हैं। उन्होंने विश्लेषण में पाया है कि हिंदुओं के पूजा-पाठ, आराधना में जो वस्तुएं, मंत्र, शास्त्र, वगैरह प्रयोग में लाए जाते हैं, वो उन अंकों से काफी मेल खाते हैं, जो 786 में आते हैं। बाबा गरीबदास ने इसके लिए पर्चे भी बांटे हैं ताकि हिंदू भी 786 की पवित्रता को उसी तरह पूजें जैसे मुस्लिम परिवार पूजते हैं।

7-सप्तश्लोकी दुगार्जी के सात लोक। दुर्गासप्तमी के 700 श्लोक। श्रीमदभागवत गीता के 700 श्लोक। विवाह के 7 फेरे, 7 जन्मों तक साथ निभाने का वचन। 7 समुद्र, 7 ऋषि। संगीत के सात स्वर, शरीर के सात नाड़ी चक्र, शरीर के सात धातु, सप्तकाल, सप्ताह के 7 दिन, हिंदुओं के प्रसिद्ध सात तीर्थ स्थल। सात शक्तियां- ब्राम्ही, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, बाराध्यै, चामुण्डा, एन्द्रयै, जिनकी पूजा होती है।

8- देवी- देवताओं की स्तुति के 8 स्त्रोत। हठयोग के अनुसार मूलाधार से ललाट तक शरीर में 8 कमल हैं। सर्पयोनी 8, भगवान कृष्ण के 8 रूप, हवन सामग्री के 8 द्रव्य, अष्टधातु, मां दुर्गा की अष्टभुजा, अष्ट सिद्धि, 8 प्रकार की मंगल द्रव्य वस्तुएं, अष्ट लक्ष्मी- धनलक्ष्मी, यशलक्ष्मीण, आयुलक्ष्मीण, वाहनलक्ष्मी, स्थिर लक्ष्मी, गृहलक्ष्मी, संतानलक्ष्मी, भवन लक्ष्मी।

6- हठयोग में कुंडलिनी के ऊपर 6 चक्र। संगीत के 6 राग, 6 हिंदू शास्त्र, छह कोनों का षटकोण, ब्राह्मणों के 6 काम-यजन, याजन, अध्ययन, दान, प्रतिमाह, भजन, वेदों के अंधभूत छह शास्त्र- शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योषित, छंद। मनुष्य के 6 गुण- ऐश्वर्य, ज्ञान, यश, श्री वैराग्य, धर्म। मनुष्य के 6 अवगुण-काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह, मत्सर।

786- यानी तीन अंक
ब्रह्मा, विष्णु, महेश-3
स्वर्गलोक, मृत्युलोक, पाताललोक-3
भगवान शंकर के नेत्र-3
भूतकाल, भविष्यकाल, वर्तमान काल-3

संकलन-
राजेश नागर, झाबुआ
9425102276

खुशी

एक सेमिनार में लगभग 50 व्यक्ति भाग ले रहे थे। सहसा वक्ता ने लोगों से एक ग्रुप-एक्टिविटी में भाग लेने के लिए कहा। उसने हर व्यक्ति को एक गुब्बारा दे दिया और मार्कर पेन से उस पर व्यक्ति का नाम लिखने के लिए कहा। फिर सारे गुब्बारे एकत्र करके दूसरे कमरे में रख दिए गए। फिर वक्ता ने सभी को कमरे में जाकर दो मिनट के भीतर अपना नाम लिखा हुआ गुब्बारा खोजकर लाने के लिए कहा। यह सुनते ही सभी लोग एक दूसरे में गुत्थमगुत्था होकर अपना गुब्बारा खोज लाने के लिए दौड़ पड़े। उस कमरे में घोर अव्यवस्था फैल गई। वे सभी एक-दूसरे से टकरा रहे थे, एक-दूसरे के ऊपर गिर रहे थे। किसी भी व्यक्ति को दो मिनटों के भीतर अपना नाम लिखा गुब्बारा नहीं मिला। फिर वक्ता ने उनसे कहा कि वे एक-एक करके कमरे में जाएं और कोई भी एक गुब्बारा उठाकर ले आएं और उसे उस व्यक्ति को दे दें जिसका नाम गुब्बारे पर लिखा हो। ऐसा करने पर दो मिनटों के भीतर हर व्यक्ति को उसका नाम लिखा गुब्बारा मिल गया। वक्ता ने कहा, जीवन में भी यही नजर आता है कि लोग पागलों की तरह अपने इर्द-गिर्द खुशियों की तलाश कर रहे हैं लेकिन वह उन्हें नहीं मिल रही.असल में दूसरों की खुशी में ही हमारी खुशी है. आप उन्हें उनकी खुशियां सौंप दें, फिर आपको अपनी खुशी मिल जाएगी।

-अभिषेक नागर, नलखेड़ा 8962359088

बेटे का नाम स्मरण कर भव से पार हुआ अजामिल

बहुत पुरानी बात है। कान्यकुब्ज नामक नगर में अजामिल नामक एक जवान ब्राह्मण रहता था। वह अत्यंत गुणवान, सदाचारी और विद्वान था। वेदों और शास्त्रों का उसने गहन अध्ययन किया था।

एक दिन अजामिल पिता की आज्ञानुसार जंगल में पूजा के लिए पुष्प और फल लेने गया। लौटते समय उसने एक शुद्र को एक वेश्या के साथ प्रेमालाप करते हुए देखा। यह देखकर अजामिल के मन में भी काम वासना जागृत हो गई। वेदों और शास्त्रों के उपदेश को याद करके वह अपने आपको बचाने की कोशिश करने लगा। किन्तु वह अपनी काम-वासना पर काबू ना रख पाया।

वह उस वेश्या को प्राप्त करने की योजना बनाने लगा। कुछ दिनों बाद उसने उस वेश्या को घर में दासी बनाकर रख लिया। इस प्रकार उसने वेश्या से संबंध रखकर अपनी विवेक बुद्धि और संस्कार को ताक पर रख दिया। अपने पूर्वजों की संपत्ति का उपयोग उस वेश्या को कीमती उपहार देने में करने लगा। यहां तक कि उसने अपनी संस्कारी पत्नि को भी घर से बाहर निकाल दिया। अनेक वर्षों तक वह वेश्या के मोह में लिप्त रहा। पूर्वजों की संपत्ति पूरी तरह से नष्ट होने पर वह जुआ खेलने लगा, चोरी करने लगा। धन का प्रयोग वह अपने ऐशो आराम और वेश्या के साथ मनोरंजन के लिए करने लगा। उसका परिवार भी बढ़ने लगा। 88 साल की उम्र में वह वेश्या के दसवें पुत्र का पिता बना। सब से छोटा पुत्र होने की वजह से यह दसवां पुत्र अजामिल का सबसे लाड़ला था। उसका नाम नारायण रखा। अजामिल अपने पुत्र नारायण के साथ खेल में मगन रहता था। नारायण भगवान का नाम है और अनजाने में ही दिन में कई बार अजामिल नारायण यानि भगवान का स्मरण करने लगा। जैसे अनजाने में भी अग्नि का स्पर्श शरीर को जला देता है वैसे ही अनजाने में भी ईश्वर का स्मरण पापों को भस्म कर देता है। नारायण नाम से बार-बार अपने पुत्र को पुकारने की वजह से ईश्वर स्मरण से उसका अंतः करण शुद्ध होने लगा। मौत पास आ रही थी पर अजामिल अपने पुत्र मोह में डूबा हुआ था।

एक बार अजामिल को भयानक चेहरे वाले यमदूत दिखाई दिए। वे उसे यमलोक ले जाने के लिए आए थे। अचानक यमदूतों को देखकर अजामिल भयभीत हो गया अपने प्रिय पुत्र नारायण को पुकारने लगा। असहाय स्थिति में बार-बार नारायण का नाम पुकारने से उसके सामने विष्णुदूत प्रकट हुए।

विष्णु दूतों ने यमदूतों को रोककर अजामिल को प्राण दान दिया। विष्णु दूतों ने यमदूतों से कहा कि अजामिल ने श्री नारायण के नाम का उच्चारण किया है, इसलिए वह पाप से मुक्त हो गया है।

विष्णु दूतों ने अजामिल को प्राण दान देकर भयमुक्त किया। उसमें विवेक बुद्धि जागी। भगवान के नाम के स्मरण की महिमा जानने से वह भक्त बन गया। उसने सोचा कि पूरा जीवन मैंने अपनी इच्छा पूर्ति के लिए अनेक पाप किए हैं अब मैं भगवद्भक्ति में लीन रहूंगा। जब अजामिल की भक्ति परिपक्व हुई तब उसे विष्णु लोक ले जाने के लिए विष्णु दूत पुनः प्रकट हुए। विष्णु दूत को अपने समक्ष देखकर अजामिल ने अपने भौतिक देह का त्याग किया और आध्यात्मिक देह प्राप्त किया। विष्णु दूतों के साथ वह वैकुंठ पहुंचा और वहां लक्ष्मी नारायण की सेवा करने लगा। हो सकता है कि मृत्यु के समय शारीरिक या मानसिक कष्ट की वजह से ईश्वर का स्मरण ना हो पाये। परंतु जिसने छोटी उम्र से ही ईश्वर स्मरण की आदत डाल दी हो उसे मृत्यु के समय भी ईश्वर स्मरण हो सकता है।

अंतिम समय पर अगर जीवात्मा ईश्वर का नाम-स्मरण ना कर पाए तो आस-पास उपस्थित लोगों को उस समय संकीर्तन, नाम स्मरण मंत्र जाप जोर से करना चाहिए, जिससे जीवात्मा शांति से पृथ्वी की यात्रा समाप्त करके वैकुंठ लोक में जाता है।

(इस्कॉन द्वारा प्रकाशित जाउ देवाचिया द्वारा (मराठी) लेख पर आधारित)

संकलन:-
उषा ठाकोर, मुंबई
मो. 9833181575

कारोबारवाणी

महेन्द्र मेटल कॉर्पोरेशन, चेन्नई

विशेषता- सेलम स्टील प्लांट प्रॉडक्ट्स एवं जिंदल स्टेनलेस स्टील नं. 9, रेवेनियर स्ट्रीट चैन्नई का संचालन हमारे समाज बंधु श्री मुरलीधर नागर एवं उनके सुपुत्रों द्वारा किया जा रहा है। ये स्टेनलेस शीट्स, प्लेट्स एवं कॉईल्स के वितरक हैं। यहां सभी साईज के गेसकेट एवं वॉल्वस भी उपलब्ध हैं। ये आयएस एसएस 304, 304 एल, एवं 409, 410, 430, 316, 316एल, शीट्स, प्लेट्स फिनिश, 2 दी, 2डी, नं. 4 पीवीसीबीए साइज 1 वाय 2 एमटी, 4 वाय 8, 5 वाय 10, मोटाई 0.25 एमएम से 6 एमएम के सप्लायर एवं आयातक हैं। ये शासकीय, अर्द्धशासकीय, पब्लिक प्रायवेट कंपनी में नियमित सप्लायर्स हैं। इनकी समय पाबंद सेवा एवं माल की श्रेष्ठ क्वालिटी से सभी ग्राहक खुश हैं। ये हर तरह से आर्डर को पूर्ण करने में सक्षम है। देशभर के किन्हीं भी नागरजनों को उपरोक्त माल की आवश्यकता हो तो वे सम्पर्क कर सकते हैं।

मो. 09381025805
09381025810

पुरानी मां, नई मां

आठ साल के एक बच्चे की मां का स्वर्गवास हो गया तो उसके पापा ने कुछ दिनों बाद दूसरी शादी कर ली।

एक दिन उसके पापा ने पूछा बेटा, तुझे अपनी नई मां और पुरानी मां में क्या फर्क लगा ? लड़का बोला, मेरी नई मां सच्ची है और पुरानी मां झूठी थी। सुनकर उस व्यक्ति को झटका सा लगा और बोला, क्यों बेटा, ऐसा क्यों लगता है? बेटे ने जवाब दिया, जब मैं मस्ती करता था तब मां कहती थी, अगर तू इस तरह मस्ती करेगा तो तुझे खाना नहीं दूंगी। मैं फिर भी बहुत मस्ती करता रहता और मुझे पूरे गांव से ढूंढ कर लाती। अपने पास बैठा कर, अपने हाथों से खाना खिलाती थी। और ये नई मां भी कहती है, अगर तू इसी तरह मस्ती करेगा तो तुझे खाना नहीं दूंगी और सच में उसने मुझे तीन दिन से खाना नहीं दिया।

मां तब भी रोती थी जब बेटा पेट में लात मारता था,
मां तब भी रोती थी जब बेटा गिर जाता था,
मां तब भी रोती थी बेटा बुखार में तड़पता था,
मां तब भी रोती थी जब बेटा खाना नहीं खाता था,
और मां आज भी रोती है जब बेटा खाना नहीं देता।
इतना तो करो कि
कोई मां कभी भूखी ना सोए,
और उसके आंख से एक कतरा पानी ना आए...
वो भी क्या दिन थे मम्मी की गोद और पापा के कंधे...
ना पैसे की सोच, ना लाईफ के फण्डे...
ना कल की चिन्ता, ना फ्यूचर के सपने...
मुड़कर देखा तो बहुत दूर हैं अपने...
मंजिलों को ढूंढते कहां खो गए हम,
आखिर इतने बड़े क्यों हो गए हम...!!
दिन भर काम के बाद पापा पूछते हैं कि...
कितना कमाया...?
धर्मपत्नी पूछेगी...?
कितना बचाया...??
बेटा पूछेगा...
क्या लाया...??
लेकिन मां ही पूछेगी...
बेटा कुछ खाया...????

– गायत्री मेहता इंदौर
मो. 9407138599

मां शब्द नहीं सृष्टि रचयिता हैं

मां इस एक सम्बोधन में सम्पूर्ण सृष्टि समाहित है। ठीक उसी प्रकार जैसे माता यशोदा ने छड़ी दिखाकर बालकृष्ण का मिट्टी से सना हुआ मुँह खुलवाया तो यह देखकर स्तब्ध रह गयी कि उस मुँह में पूरा ब्रह्माण्ड समाया है। वैसे ही मां शब्द भी गरिमामय एवं अलौकिक है। एक अंग्रेजी लेखक मेडिसन टेलर ने अपनी पुस्तक में मां के बारे में लिखा है– मां प्रजनन, स्थायित्व, सृजन, त्याग और सहनशीलता का प्रतीक होती है। मां का हम पर उपकार है कि वह हमें जन्म देती हे, एवं जीवन मूल्यों से परिचय कराती है। मां हमारी उपलब्धियों को उजागर करती है उनकी तारीफ करती है। मां हमारी छोटी–छोटी गलतियों को अनदेखा करती है। मां अपने बच्चों को शिक्षित करती है, उन्हें गलत कर्मों से बचाती है। अपने आँसू छिपाते हुए हंसने, मुस्कराने का प्रयास करती है ताकि उसके बच्चे सदा मुस्कुराते हुए उसके साथ रहें। मां अपने बच्चों के दु:खों को बांटने का प्रयास करती है एवं उनके घावों (दुखों) पर मल्हम का काम करती हैं मां चाहती है कि उसके बच्चे सदा खुश रहें। हर मां अपना निश्चल, निर्मल, स्नेह, प्रेम अविरल अपने बच्चों पर बराबरी से लुटाती रहती है यह जानते हुए कि एक दिन उसके जाये उसे छोड़कर चले जायेंगे। लेखक ने कहा है कि धरती भी हमारी मां है। हमारी धरती मां अपनी छाती पर कितने आघात प्रहार सहती है पर सदैव असीमित उपकार हम बच्चों पर करती रहती है। धरती मां मौन रहकर सब कुछ सहती है ताकि संसार के सभी सजीव प्राणियों का जीवन चलता रहे।

मां और धरती मां सहनशीलता, प्रेम और समानता का प्रतीक है। एक मां की कोख से जन्म लेकर समयावधि पूर्ण कर इस धरती मां की कोख में समाहित हो जाते हैं।

सच मां से महान कोई नहीं।

– चन्द्रज्योति दवे जयपुर, 9414921986

भारतीय नारी का परिचय

उन वीरों की दुहिता हूं जो हंस-हंस झूल गए,
उन शेरों की माता हूं जो रण-प्रांगण में जूझ गए।
मैं जीजा की अमर सहेली, पन्ना की प्रतिछाया हूं,
हाडी की हूं अमिट निशानी मैं जसवन्त की माया हूं।
कृष्णा के कुल की मर्यादा, लक्ष्मी की शमशीर हूं,
मेरा परिचय इतना कि मैं भारत की तस्वीर हूं।
हल्दीघाटी की रज का सिंदूर लगाया करती हूं,
अरिशोणित की लाली से मैं पांव रचाया करती हूं।
पद्मावत हूं रत्नसिंह की, चूड़ावत की सेनानी,
मैं जौहर की भीषण ज्वाला, रणचंडी हूं पाषाणी।
मां की ममता, नेह बहन का और पत्नी का धीर हूं,
मेरा परिचय इतना कि मैं भारत की तस्वीर हूं।
कालिदास का अमर काव्य हूं, मैं तुलसी की रामायण,
अमृतवाणी हूं गीता की, घर-घर होता पारायण।
मैं भूषण की शिव-बावनी, आल्हा की हुंकार हूं,
सूरदास का मधुर गीत मैं मीरा का इकतारा हूं।
वरदाई की अमरकथा मैं रणगर्जन गम्भीर हूं,
मेरा परिचय इतना कि मैं भारत की तस्वीर हूं।

प्रस्तुति-डॉ. (श्रीमती) मधु व्यास, धार, 9425491336

देखो...

कभी जिन्दगी से गुजर कर तो देखो, आप अपने भीतर उतरकर तो देखो, बहुत अपनी मैं को है तुमने संभाला जरा टूट कर उसमें बिखर कर तो देखो दुनिया के नक्शे बहुत देख डाले, मगर आप खुद को जी भर के, देखों औरों के दिल में जगह क्यों ढूंढते हो, तो देखो अपने ही दिल में समाकर तो देखो क्यों दर-ब-दर तुम उसे ढूंढते हो, जरा उसको खुद में ही पाकर तो देखो कि हर एक शै में वही तो बसा है, जहां दिल करे सर झुकाकर तो देखो,

एक बार आओ मनमोहन...

(राधे विरह)
तर्ज (शहर-शहर ओर गांवन में)
ढूंडू रे तोहे वन-वन में, वन-वन में रे तोहे मधुबन में।
ढूंडू रे तोहे मधुवन में, मधुवन में रे तोहे कुंजन में।
ढूंडत-ढूंडत तोहे रे सांवरिया, छाला पड़ गया पांवन में।
अजहुं ना आयो मोरे आंगन में, बाट निहारूं तोरी सावन में।
देर करी रे काहे आवन में, ढूंडत-ढूंडत तोहे रे सांवरिया
छाला पड़ गया पांवन मेरा ढूंडू...

1. मथुरा ढूंडी वृंदावन ढूंडा नंद गांव बरसानो रे।
बेदर्दी तोसे प्रीत लगाके, आज पडयो पछतानो रे।
कबहुं न आयो मोरे आंगन में, बाट निहारूं तोरी सावन में।
देर करी रे काहे आवन में, ढूंडत-ढूंडत तोहे रे सांवरिया
छाला पड़ गया पांवन में। ढूंडू.....

2. चंदा से मिलने, चली चांदनी तारों से मिलने रात चली।
में बेरिन रह गई अकेली, तरस-तरस बरसात चली
कबहुं न आयो मोरे सपनन में, बाट निहारूं तोरी सावन में।
देर करी रे काहे आवन में, ढूंडत-ढूंडत तोहे रे सांवरिया
छाला पड़ गया सांवन में। ढूंडू.....

3. सावन गरजे भादों बरसे, उठी घटा घनघोर रे।
चम-चम चम-चम चपला चमके, इन्द्र मचावे शोर रे।
मन मोरा घबराये रे, चेन न मन को आये रे, ढूंडत-ढूंडत तोहे
रे सांवरिया छाला पड़ गया पांवन में। ढूंडू.....

4. जो मैं ऐसी जानती मोहन, प्रीत किए दुख होई रे।
नगर ढिंडोरा पीट के कहती, प्रीत न करियो कोई रे।
ऐसी आवे मोरे मन में, खाय कटारी मरूं रे पल में।
ऐसी आवे मोरे मन में, कूंद पडूं रे जमुना जल में।
ढूंडत-ढूंडत तोहे रे सांवरिया, छाला पड़ गया पांवन में।
ढूंडू.....

5. मथुरा तुम तो गए कन्हाई, कुब्जा से प्रीत लगाई रे।
ओ निर्मोही दया न आई, मोहे दई बिसराई रे।
दया नहीं आई तोरे मन में, छोड़ गयो रे कदली बन में।
ढूंडत-ढूंडत तोहे रे सांवरिया, छाला पड़ गया पांवन में।

6. नागर की तो से यही विनय है, मन मोहन घनश्याम रे।
एक बार आओ मनमोहन, आओ वृन्दावन धाम रे।
तोरे कारण मैं तो सांवरिया हो गई हूं बदनाम रे।
रहने न दूंगी कुब्जा के संग में, बंद करूं रे तो हे पलकन में
रहना मोरे मन मंदिर में, रास रचाना इन अंखियन में।
ढूंडत-ढूंडत तोहे सांवरिया, छाला पड़ गया पांवन में।

प्रस्तुति- सुमनलता नागर, मोहन बड़ोदिया (म.प्र.)

ऐसा प्रेम किस काम का जो जिंदगी बिगाड़ दे...?

चौंकिये मत, विचलित न हो, यह कोई शर्कराजन्य होने वाला रोग नहीं, अपितु मूढ़ता, मूर्खता एवं हठवादिता जन्य आत्मघाती संक्रमण है। जैसे गेंगरीन में अंगूठा काट कर शेष शरीर को बचा लिया जाता है ठीक उसी प्रकार सयाने, समझदार और दूरदर्शी व्यक्ति मूर्खो से अपना पल्ला छुड़वाकर अपने जीवन को बचा कर श्रेयसता और बुद्धिमानी का परिचय देते है।

जागरूक पाठकों, आजकल इस भौतिक युग में विकृता इतनी गहरे पैठ गयी है कि विज्ञ व्यक्ति भी अपनी संतानों की कारगुजारियो से अनभिज्ञ होकर और समय पर न चेतने के कारण न सिर्फ अपना बल्कि अपनी संतान का भी भविष्य अंधकार पूर्ण बना देते है। प्रायः निम्न और अशिक्षित जगत में, समाज में तो ऐसा परिलक्षित होता है लेकिन यह विडम्बना ही है कि उच्च शिक्षित और वह भी ब्राम्हण जाति में अपना पैर पसार गयी है जो कालांतर में ब्राम्हण जाति के पतन का सूत्रधार साबित होगी अपवाद स्वरुप ऐसा देखने में आया है कि आजकल की कलयुगी माताएं संतान का हित न देख कर अपनी स्वार्थपरता एवं ब्याहता बेटी के जीवन में हस्तक्षेप कर उसका जीवन बर्बाद कर देती है और पति को अँधेरे में रख कर बच्चों की जन्मकुंडली पर चोपड़ खेलती रहती है वे रुपयों के चंद टुकड़ों की खातिर संतान को दांव पर लगा देती है, इज्जत, आबरू, नैतिकता, सामाजिकता को जमीदोज कर देती है और फिर रह जाता है सिर्फ विनाश, तबाही और पश्चाताप जो न सिर्फ संतान को अपितु माँ-बाप को भी ताउम्र सालती रहती है।

लेखक आज के अभिभावको से गुजारिश करता है कि वे अपना दायित्व समझे और असमय अपनी संतान का अहित न करे। इज्जत के आगे रूपया गौण है। प्रतिष्ठा के समक्ष धन विष्टा है। मानसिक कुंठा, संतान के प्रति अति भावुकता आत्मनिर्णय की कमी व वैचारिक अस्थिरता के कारण अभिभावक औचित्य-अनौचित्य का अंतर नहीं कर पाते और आदमी स्वयं पंगु होकर संतान का भविष्य दाँव पर लगाने में तनिक भी नहीं हिचकिचाते।

अपने निहित स्वार्थ के चलते माँ-बाप लगाव, अनुराग, प्रेम, सामिप्य, समर्पण संधि तो नहीं अपितु अधिपत्य जमाने की नाकाम कोशिश एवं षड्यंत्र रचते है और अपनी संतान का परिणय बंधन शर्तो की रेत पर खड़ा करना चाहते है, मसलन बेटी खाना नहीं बनाएगी, सेवा नहीं करेगी, संयुक्त परिवार में नहीं रहेगी, नौकरी ही करेगी, परम्परा और शिष्टता बाध्य नहीं होगी, वगैरा वगैरा...और समान अधिकार की शर्त पर सौदे बाजी कर माएँ संतान नहीं संताप को जन्म देती है। लोग पश्चिमी सभ्यता को अंगीकार कर अलगाव, कुसंस्कार, बिखराव, धन की लालसा और पतन विरासत में लाकर संतान को सौपते है। यहाँ यह ध्यान देने योग्य है कि विवाह आदि में व्यक्ति शर्तो के बगैर यदि समर्पण, आत्मीयता, और जोड़ने की नीति अपनाये तो सभी आकांक्षाये स्वतः प्राप्त हो जाती है कयास नहीं लगाने पड़ते है। इसमे कोई संशय नहीं, न ही कोई अतिशयोक्ति । नवजात बच्चा जन्म लेने के साथ ही माँ से अपनी परवरिश, देखभाल का संकल्प अथवा अनुबंध नहीं करवाता है यह एक ऐसी देवी प्रेरणा, उपादान, अनुग्रह है जो स्वतः रगों में घुलता है इसमे कोई लीज नहीं लगती, पंजीकरण नहीं होता। समझदार व्यक्ति दिये का उपभोग करता है, जबकि पतंगा भोग बन जाता है। प्रत्येक माँ-बाप का यही प्रयत्न होता है लड़की अपने घर जाकर सुख पूर्वक रहे न कि दुःख देने का यत्न करे। प्रायः माँ-बाप मोहान्ध होकर विवाहित लड़की के जीवन में दखल देकर उसका भविष्य अंधकारमय बना देते है, स्त्री का हठी होना विनाशक है और जो विचारते नहीं वह जीवन भर विचरते है। बीमार व्यक्ति करवट बदल कर आराम महसूस करता है जो उसका भ्रम है मृग मरीचिका है। विवेकहीन निर्णय लेने पर भविष्य में पश्चाताप के अलावा कुछ हाथ नहीं लगता, वह वास्तविकता से परे हटकर काल्पनिक सपने संजोते रहता है और सुखद अनुभव करने की कोशिश करता है इसीके फलस्वरूप वह मिथ्या एवं अनर्गल आरोप लगाने से भी बाज नहीं आते एवं रूपया हड़पने की अनैतिक चेष्टा करते है जो कालांतर में उसी का काल बनकर सबक देता है। अभिप्राय यही है कि व्यक्ति को जोश में होश नहीं खोना चाहिए अवसाद की स्थिति में कोई निर्णय एवं खुशी की स्थिति में कोई वादा नहीं करना चाहिए। रस्सी को सांप समझ कर मूढ़ अल्पज्ञ,न सिर्फ अपना बल्कि अपनी संतान को भी बर्बाद कर देते है और समाज में तिरस्कृत भी होते है। लेखक समाज के प्रबुद्धजन से यही अपेक्षा करता है कि यह गेंगरीन ब्राम्हण जाति में जाने अनजाने कैंसर, नासूर का रूप न ले ले, असाध्य व कलंक न बन जाए और भविष्य में इसकी पुनरावृत्ति न होने दे ताकि समाज की, कुल की, परिवार की छवि को धूमिल होने से बचाया जा सके।

- अशोक डी. नागर, वापी (गुजरात)

सुविचार

हम उन्हें रूलाते हैं, जो हमारी परवाह करते हैं। हम उनके लिये आंसू बहाते हैं जो कभी हमारी परवाह नहीं करते हैं, जो कभी हमारे लिये नहीं रोयेंगे।

यही जीवन का सच है, अजीब है पर सच है। जब भी आपको यह अहसास हो। आप बदल जायें, क्योंकि बदलने के लिये कभी देरी नहीं होती।

अब वफा की उमीद भी किस से करें भला। मिट्टी के बने लोग कागजों में बिक जाते हैं।

डॉ. तेज प्रकाश व्यास
प्रभुकुंज, 135 सिल्वरहिल धार।

शब्द भेदी बाण

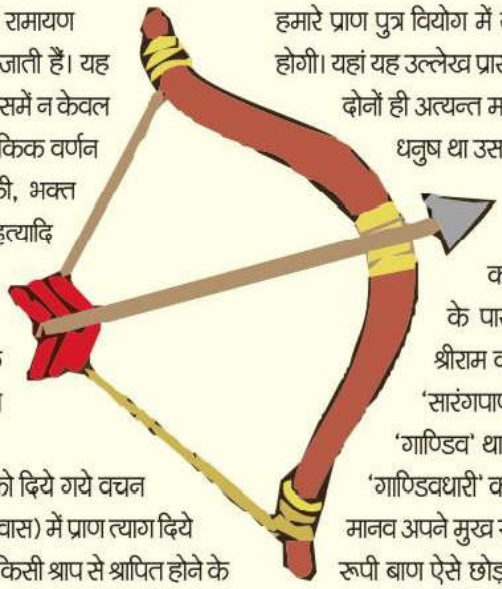

हिन्दू धर्म के आध्यात्मिक ग्रंथों में रामायण रामचरितमानस की गणना श्रेष्ठ ग्रंथों में की जाती हैं। यह ग्रंथ मानव मात्र के कल्याण हेतु रचा गया है जिसमें न केवल भगवान श्रीराम के चरित्र का अनुपम एवं अलौकिक वर्णन हैं वरन् इसके अन्य पात्रों जैसे-माता जानकी, भक्त हनुमान, लक्ष्मण, भरत, जटायु, शबरी, केवट इत्यादि के जीवन चरित्र का अत्यन्त ही मार्मिक एवं अनुकरणीय ज्ञान समाहित है। इसी कड़ी में भगवान श्रीराम के पिताश्री राजा दशरथ के जीवन चरित्र से भी हमें ज्ञान एवं शिक्षा प्राप्त होती हैं।

अयोध्या के राजा दशरथ ने पत्नी कैकई को दिये गये वचन के कारण पुत्र श्रीराम के वियोग (14 वर्ष का वनवास) में प्राण त्याग दिये थे। राजा दशरथ का पुत्र वियोग में प्राण त्यागना किसी श्राप से श्रापित होने के कारण था। कथानक हैं कि एक बार जब राजा दशरथ आखेट हेतु वन में गये थे काफी परिश्रम के पश्चात भी उन्हें कोई शिकार प्राप्त नही हुआ था अतः थककर वे एक पेड के नीचे विश्राम करने लगे तभी उन्हें दूरस्थ स्थित किसी सरयू में पानी के हलचल की आवाज सुनाई दी। राजा दशरथ को ऐसा आभास हुआ कि कोई मृग सरयू में पानी पी रहा हैं उन्होनें इस विचार से अपना 'शब्द भेदी बाण' तरकश से छोडा। वहीं दूसरी ओर पितृ भक्त श्रवणकुमार अपने दृष्टिहीन माता-पिता को कावड़ में बैठाकर तीर्थाटन हेतु ले जा रहा था। रास्ते में माता-पिता ने प्यास से व्याकुल हो पुत्र श्रवणकुमार से जल की अभिलाषा व्यक्त की। श्रवणकुमार वृद्ध माता-पिता को एक पेड़ के नीचे छोडकर जल की तलाश में सरयू के पास पहुंचा। मिट्टी के पात्र में जब वह पानी भर रहा था तभी राजा दशरथ द्धारा छोडा गया 'शब्द भेदी बाण' उसे सीने में लगा। राजा दशरथ जब सरयू के पास पहुंचे तो उन्होनें देखा कि वहां मृग के स्थान पर एक व्यक्ति घायल अवस्था में पडा अंतिम सांसे गिन रहा हैं। राजा दशरथ विस्मित भाव से व्यथित हो अपने इस अनजाने कृत्य के लिये श्रवणकुमार से क्षमा याचना करने लगे। श्रवणकुमार ने कहा कि वह अपने वृद्ध माता-पिता के लिये पानी लेने सरयू पर आया था। आप यह जल मेरे वृद्ध माता-पिता को प्रदान करने की कृपा करें! इतना कहकर उसने अपने प्राण त्याग दिये। जब राजा दशरथ जल से भरा कलश लेकर श्रवणकुमार के माता-पिता के पास पहुंचे तथा जल देने के पश्चात कुछ न बोल पाने के कारण व्यथित मन से घटना की जानकारी देने पर असहाय निशक्त माता-पिता के श्रवणकुमार की मृत्यु का समाचार सुन प्राण पखेरू उड़ गये। उन्होंने अपने अंतिम समय में राजा दशरथ को यह श्राप दिया कि जिस प्रकार हमारे प्राण पुत्र वियोग में जा रहें हैं उसी प्रकार तुम्हें भी यही दशा प्राप्त होगी। यहां यह उल्लेख प्रासंगिक होगा कि अनादिकाल से शस्त्र और शास्त्र दोनों ही अत्यन्त महत्वपूर्ण रहे हैं। सतयुग में जो अद्वितीय, अजेय धनुष था उसका नाम था 'पिनाक'। यह धनुष भगवान शंकर के पास था इसलिये उन्हे 'पिनाकस्वामी' भी कहा जाता हैं। त्रेतायुग में दूसरा इसी प्रकार का धनुष था- 'सारंग'। यह धनुष महर्षि परशुराम के पास था जो कि उन्होनें प्रसन्न होकर भगवान श्रीराम को प्रदान किया था इसलिये भगवान श्रीराम को 'सारंगपाणी' भी कहा जाता हैं। तीसरा धनुष द्वापर युग में 'गाण्डिव' था जो कि पाण्डु पुत्र अर्जुन के पास था इसलिये वे 'गाण्डिवधारी' कहलाए। वर्तमान कलयुग में कोई धनुष नहीं हैं, मानव अपने मुख रूपी धनुष से जिव्हा रूपी प्रत्यंचा चढ़ाकर शब्द रूपी बाण ऐसे छोड़ता हैं कि व्यक्ति जीवन भर घाव को सहलाता रहता हैं. किसी शायर ने भी कहा है- कुदरत को ना मंजूर है, सख्ती जुबान में...इसलिये नही दी खुदा ने, हड्डी जुबान में... परन्तु व्यक्ति शब्द रूपी बाण से किसी की भी हड्डी तोड देता हैं।

चिकित्सा विज्ञान की दृष्टि से भी कहा गया हैं कि जिव्हा पर लगी चोंट शरीर के किसी अन्य भाग पर लगी चोंट की अपेक्षा स्वतः ही ठीक हो जाती हैं परन्तु जिव्हा से लगी चोंट जीवन भर का घाव कर जाती हैं। संदेश :-1 व्यक्ति को चाहिये कि वह आवेश पर नियंत्रण रखे क्योकि आवेश का कोई वेश नही होता हैं जिससे वो पहचाना जा सकें। आवेश में ही व्यक्ति अपनी वाणी का नियंत्रण खो बैठता हैं।

2 कुछ बोलने से पहले विचार कर लेना चाहिये फिर बोलना चाहिये .क्रोध में व्यक्ति पहले बोलता है , विचार बाद में करता हैं.क्रोध मूर्खता से प्रारंभ होकर पश्चाताप पर खत्म होती हैं.

3 किसी भी बात पर अपना मत व्यक्त करने से पहले उसका पूर्ण संज्ञान लेना आवश्यक हैं.कम बोलें मीठा बोलें .

सन्त कबीर ने कहा हैं:-

ऐसी बानी बोलिये मन का आप खोई .
औरन को सीतल करै आप हुँ सीतल होई ..
पहले शब्द पहचानिये पीछे कीजै मोल .
पारखी परखे रतन को शब्द का मोल न तोल ..

प्रो. राजेन्द्र नागर (मुमुक्षु)
बी - 40; चन्द्रनगर (एम आर 9)
इन्दौर 452011 (म प्र)

मुक्ति.... या पति के सहयोग से उन्नति की युक्ति

भारतीय संस्कृति में स्त्री को गृहलक्ष्मी, शक्ति, विद्या और माता के रूप में पूजा है। हमारे समाज ने प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तक स्त्री को उच्च स्थान पर ही आसीन किया है। पश्चिमी जगत में जब स्त्री के अस्तित्व को भी स्वीकार नहीं किया गया था, उससे कई वर्ष पूर्व हमारी संस्कृति, हमारे समाज में नारी पुरूषों के मध्य शास्त्रार्थ करती थी। सतयुग में भी नारी (कैकई) पुरूष (दशरथ) के साथ युद्ध में सारथी बनकर युद्ध स्थली में जाती रही है। महाभारत में दुर्योधन को शक्ति प्रदाता स्त्री (गंधारी) ही थी। कई उदाहरण स्त्री की क्षमता, दक्षता और वर्चस्व को दर्शाने के लिए मिल जाएंगे।

किन्तु इन दिनों स्त्री विमर्श शब्द का साहित्य जगत में प्रचुर मात्रा में प्रयोग दिखाई दे रहा है। स्त्री विमर्श बौद्धिक जुगाली का बहुत ही अच्छा माध्यम बना हुआ है। इस विमर्श ने एक लुभावना नारा दिया है-स्त्री मुक्ति। भला ये मुक्ति क्या बला है? हमारे समाज में तो सदा से ही स्त्री मुक्त अर्थात्, स्वतंत्र चिंतन मनन करने वाली रही है, तो मुक्ति कैसी?

इस पूरी प्रक्रिया के पीछे पश्चिमी जगत का घातक षडयंत्र है। बुद्धु बक्से के माध्यम से हमारे पूरे परिवार के विचारों को दूषित करने का कार्य बहुत ही तेज गति से हो रहा है। धारावाहिकों के पात्रों के चरित्र जिस प्रकार से प्रस्तुत हो रहे हैं, वे आम समाज से भिन्न है। कुछ अपवाद या कुछ प्रतिशत सम्भव है, किन्तु जो प्रतिशत दिनभर के धारावाहिकों में परोसा जा रहा है, वह तो कतई नहीं है।

मेरी और मुझसे पूर्व की एक दो पीढ़ी पहले के पाठकों से मैं प्रश्न करना चाहूंगी कि पहले स्त्री पुरूष थे? आप कहेंगे क्यों नहीं। जब परिवार थे, तो स्त्री-पुरूष तो रहे ही होंगे। मैं मानती हूं कि नहीं। यहीं हम धोखा खा गए। अरे भाई! आज से 20-25 वर्ष पहले हमारे परिवारों में दादा-दादी, ताऊ-ताई, काका-काकी, मामा-मामी, बुआ, भाई-बहन, भतीजे, भतीजी, भानजे-भानजी होते थे। ये स्त्री-पुरूष जैसी बला समाज में प्रचलित नहीं थी। हम समाजशास्त्र पढ़ते हैं, जो पितृ सत्तात्मक और मातृ सत्तात्मक परिवार का अध्ययन करते थे। आज पुरूष और स्त्री में सत्ता का यह संघर्ष कहाँ से आ गया? स्त्री स्वातंत्र्य के नाम पर स्त्री को मात्र कपड़ों से आजाद किया गया। स्त्री को आत्मा के देह बना देने के षड्यंत्र में स्वयं स्त्रियां ही भागीदार बन गई।

इस देश में अर्द्धनारीश्वर की कल्पना की गई। यहां देव युगलों के नाम स्मरण में देवियों के नाम ही पहले लिए जाते हैं। आधुनिक युग के नारी स्वतंत्रतावादी उस काल को स्त्री बंधन का काल घोषित करते हैं। क्या ये अति स्वातंत्र्य प्रिय बुद्धिजीवी वास्तव में स्त्री जगत के हितचिंतक हैं?

भारत का पुरातन समाज कितने बड़े दिलवाला रहा है, जिसने सूर्यपुत्र कर्ण को विवाह पूर्व जन्म देने वाली कुन्ती को सती माना। पांच पतियों वाली द्रोपदी को सती की संज्ञा दी खैर....। वर्तमान की चर्चा की जाए तो भी हमारी ये मध्यमवर्गीय और निम्नवर्गीय बहू-बेटियों और माताओं को चार दीवारों में कैद, अनपढ़ और गंवार स्त्रियां कहते हैं, वे कान खोल कर सुन लें। वैश्विक वित्त सर्वेक्षण के ताजा आंकड़े बता रहे हैं कि भारत के बचत प्रतिशत का तिहाई भाग हमारे ये ही गांव की बहनें कर रही है।

अभी-अभी ताजा उदाहरण सभी ने सुना या पढ़ा होगा, निशानेबाज तेजस्विनी सावंत का। उसके पिता ने रिश्तेदारों से चंदा मांग-मांगकर बेटी के लिए रिवाल्वर खरीदी। ये पुरूष ही था, जो स्त्री की सफलता का प्रथम सोपान बना। सुनीता विलियम्स अंतरिक्ष में अपने पिता का हिन्दी में लिखा पत्र लेकर गई, तो अब हमारा पाठक वर्ग क्या कहेगा? आप कहेंगे ये तो पिता थे जो किया लेकिन समाज के अनेक रिश्तों के उदाहरण हमारे सामने हैं। कई पतियों ने अपनी पत्नियों की सफलता में उनकी उन्नति, प्रगति में भरसक योगदान दिया हैं। बड़े उद्योगपति नारायण मूर्ति में अपनी पत्नी सुधा मूर्ति को अपने साथ-साथ उन्नति के उस मुकाम तक पहुंचाया जो सर्वविदित है। तो भला ये कैसी आजादी, ये कैसी मुक्ति ?

समाज में पुरूषों के लिए जो नकारात्मक वातावरण का निर्माण किया जा रहा है। वह घातक सिद्ध होगा। अपने ही अपनों की उन्नति कर सकते हैं, किन्तु साथ मिलकर न कि मुक्ति पाकर। इसी में हमारे परिवार, समाज और राष्ट्र का भविष्य सुरक्षित रह सकता है। तो फैसला आपके हाथ है परिवार का साथ परतंत्रता है या वास्तविक स्वतंत्रता जिस भ्रम के पीछे आज का स्त्री जगत दौड़ रहा है। वह आजादी भला कैसी आजादी ?

40, संवाद नगर, इन्दौर

कटोरी लेकर खडा रहता है..

लडका अपनी गर्लफ्रेंड से - अमीर से अमीर आदमी भी मेरे पिताजी के आगे कटोरी लेकर खड़ा रहता है।
गर्लफ्रेंड - फिर तो तुम्हारे पिताजी बहुत अमीर होंगे।
लडका - नहीं वह गोलगप्पे बेचते हैं।

गंगोत्री-जमनोत्री

गंगोत्री जमनोत्री दो बहनें थी। बड़ी बहन का नाम गंगोत्री तथा छोटी बहन का नाम जमनोत्री। बड़ी बहन गंगोत्री को अपनी पवित्रता तथा स्वच्छता पर बहुत गर्व था। छोटी बहन जमनोत्री को अपने हर काम में इस्तेमाल होने पर गर्व था। इस बात पर दोनों का हमेशा झगड़ा होता था।

एक दिन दोनों की बहस हो गई, जमनोत्री अपनी बड़ी बहन गंगोत्री को यह बताती है कि मेरे बिना तेरा कोई आधार नहीं, मैं हर काम के लिये इस्तेमाल होती हूं, मगर गंगोत्री को अपने ऊपर गर्व होता है, वह कहती है कि मैं पवित्र हूं, उज्जवल हूं। साफ हूं! मैं पवित्र स्थान पर रहती हूं, मेरा जल पूजा के लिये इस्तेमाल होता है। तू तो मैली है तेरा इस्तेमाल पवित्र स्थान पर नहीं किया जाता। तो जमनोत्री कहती है, कि मैं मैली हूं, तभी तू पवित्र तथा साफ दिखती। तभी गंगोत्री बोली मैं तो साफ तथा निर्मल जल के समान हूं, इसलिए मैं ऊपर बहती हूं और तू मैली है इसलिये तू नीचे बहती है।

इस बात को लेकर दोनों में झगड़ा बढ़ता रहा। आखिर में जमनोत्री कहती है अगर यही बात है तो ह्यतू अपनी गंगोत्री में रह और मैं अपनी जमनोत्री में। गंगोत्री इस बात से सहमत हो गई, और सुबह होते ही, दोनों बहनें नहाने जाती है। पहले जमनोत्री नदी में जाकर नीचे गंगोत्री में डुबकी लगाने लगती है। तभी गंगोत्री अपने गर्व को महसूस करती हुई, लहराती तथा बलखाती हुई नहाने आती है और कहती है कि आज तो मैं अपनी गंगोत्री में ही रहूंगी। तभी जमनोत्री नीचे से बोलती है, गंगोत्री तुम ऊपर ही नहाना, नीचे मत आना। गंगोत्री कहती है तू चिंता मत कर, आज से गंगोत्री मेरी है, और तेरी जमनोत्री में कभी नहीं आऊंगी।

तभी वह गंगोत्री में जाती है नहाने, और तैरती रहती है अचानक जब वह थक जाती है तो खड़ी हो जाती हैं तभी जमनोत्री बोली गंगोत्री तू जमनोत्री में क्यों आ गई तभी गंगोत्री कहती है मैं कहां जमनोत्री में आई, मैं तो गंगोत्री में खड़ी हूं।

जमनोत्री कहती है नहीं तू जमनोत्री में खड़ी है, तभी गंगोत्री को अपने आप में शर्म महसूस हुई। तभी जमनोत्री ने कहा देखा मेरे ऊपर सारी दुनिया खड़ी है, मेरे से सब कामकाज सम्पन्न होते हैं, तभी गंगोत्री महसूस करती है कि जमनोत्री सही है, और चिल्लाती है कि जमनोत्री तू जीत गर्म मैं हार गई, आज तूने मेरी आंखें खोल दी, तेरे बिना मैं खड़ी नहीं हो सकती, आज से हम दोनों का मेल, उस दिन के बाद से दोनों का झगड़ा खत्म हो जाता है। दोनों बहनें प्रेम से रहती हैं।

लेखिका :-
रजनी नागर

गुरू महिमा पर आधारित होगा जुलाई अंक

मासिक जय हाटकेश वाणी का जुलाई २०१४ अंक गुरू पूर्णिमा के अवसर पर गुरू महिला को समर्पित होगा। ब्राह्मण समाज के गुरूओं, प्रवचनकारों के बारे में इस विशेषांक में विवरण प्रकाशित किया जाएगा जो न केवल प्रवचनों, सद्वचनों के द्वारा समाज में आध्यात्मिक ऊर्जा का प्रसार कर रहे हैं बल्कि समाज सुधार एवं समाज सुविधा पर भी वे अपनी गतिविधियों से योगदान दे रहे हैं। इस विशेषांक हेतु आपके लेख, रचनाएं सादर आमंत्रित हैं।

– सम्पादक

पुष्प जैसी मेरी मां – पुष्पा

सन् 1930 की फाल्गुन मास की 30 मार्च को देवास जिले के ग्राम इकलेरा में जन्म, दुआ पिता थे पं. अनोखी लाल जी नागर। मात्र 12 साल की बाल्यावस्था में ही चांचौड़ा जिला–गुना के पं. चतुर्भुज जी नागर के पुत्र प्रेमनारायण नागर से विवाह हुआ। विवाह के कुछ ही समय पश्चात चांचौड़ परिवार पर दु:खों का पहाड़ टूट पड़ा। बड़ी ननद बाई व माता तुल्य सास मां का कुछ ही अन्तराल में निधन होने के पश्चात, इतनी छोटी सी उम्र में ही इतने बड़े परिवार की जिम्मेदारी उठाना शुरू कर दिया– प्रेम, त्याग, व तपस्या तो उनमें कूट–कूट कर भरी थी जो जीवन पर्यन्त कायम रही– परिवार के सभी सदस्यों को उन्होंने भरपूर प्यार व स्नेह दिया। लगभग 72 वर्षों को सुखी वैवाहिक जीवन उन्होंने जिया, जो एक विलक्षण बात है।

स्त्री मां के रूप में बच्चे की गुरू है। बच्चा जन्म के बाद जब बोलना सीखता है तो सबसे पहले जो शब्द बोलता है वह होता है, मां। बच्चे के मुख से निकला हुआ वह शब्द मात्र शब्द नहीं, सुफल है उस माता द्वारा नौ महिने बच्चे को अपनी कोख में पालने व उसके बाद होने वाली प्रसव पीड़ा का।

माताका कर्तव्य केवल लालन–पालन व स्नेह दान तक ही सीमित नहीं है। बालक को जीवन में विकसित होने, उत्कर्ष की ओर बढ़ने के लिए मां ही शक्ति प्रदान करती हैं उसे सही प्रेरणा देती है। अपने सभी दायित्वों का निर्वाह करते हुए वे स्वस्थ जीवन जी रहीं थी पर पिछले 2–2/1 वर्षों से उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं चल रहा था। पर वो पूर्ण सचेत थीं व पारिवारिक समारोहों में भाग लेती थीं। अपने जीवन में उन्होंने कई सद्कार्य किए– अपने भतीजों, भान्जों को उन्होंने शिवपुरी में रखकर शिक्षा प्रदान करवाई।

पिछले कुछ महीनों से वो अधिक बीमार थीं व उज्जैन में मेरे बड़े भाई डॉ. मनमोहन नागर के घर थीं व 7 मई को उन्होंने उन्हीं के निवास पर अन्तिम सांस ली।

आपकी अन्तिम यात्रा में उज्जैन नगर का लगभग पूरा नागर समाज व नगर के कई गणमान्य नागरिकों ने भाग लिया।

वे अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गई हैं। ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

ए मां तेरी सूरत से अलग भगवान की सूरत क्या होगी।
मां को शत–शत नमन।

प्रेषक–सोहन नागर
मनोरमा गंज, इन्दौर
मो– 9827007872

सप्तम पुण्य स्मरण
22 जून 2014
जीवंत व्यक्तित्व
स्व. डॉ. श्री सूर्यप्रकाश नागर
आत्मिक शांति हेतु आस्थापूर्ण सादर श्रद्धावत पुष्पांजलि अमनावत समर्पित
श्रीमती जया नागर/कुमार अपूर्व नागर
54 प्रकाश नगर, इंदौर

तृतीय दया–जयंती
26.06.2014
स्व. श्री डॉ. दयाशंकर ओ. जोशी
जोशी, नागर, जाधव, तिवारी परिवार पी.आर. जोशी, उषा नगर, इंदौर

श्री प्रभाकर लक्ष्मीनारायण दीक्षित, खण्डवा

नागर समाज के प्रतिष्ठित दीक्षित परिवार के वरिष्ठ समाजसेवी एवं नगर के प्रसिद्ध गणित विषय के शिक्षक श्री प्रभाकर–लक्ष्मीनारायण दीक्षित का 80 वर्ष की आयु में रतलाम में दिनांक 29 अप्रैल को देहावसान हो गया। उनका अंतिम संस्कार खण्डवा के राजा हरीशचन्द्र मुक्तिधाम में ज्येष्ठ पुत्र श्री प्रदीप दीक्षित द्वारा किया गया। सचिव– नागर समाज खण्डवा श्री प्रेमनारायण व्यास द्वारा स्थानीय रामेश्वर धारम पर आयोजित शोकसभा में उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व की व्याख्या करते हुए समस्त समाजजनों द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए मौन रखकर ईश्वर द्वारा मृतात्मा की चिर शांति हेतु प्रार्थना की गई एवं दीक्षित परिवार को इस सहन करने की प्रार्थना की गई।

–सरोज कुमार जोशी
खंडवा

श्री लक्ष्मणराम जी नागर, कोलकाता

जो चेतन कहे जड़ करई जड़हि करई चैतन्य अस समर्थ रघुनाथ काहि भजहि जीव ते धन्या। को चरितार्थ करने वाले श्री लक्ष्मणराम जी नागर (कोलकाता वासी) सफल व्यक्तित्व के स्वामी, सच्चे समाजसेवी, जन–जन के हृदय में वास कर कुटुम्ब को एक सूत्र में पिरोने का यश प्राप्त परम श्रद्धेय का बैकुण्ठवास 10 अप्रैल 2014 को हो गया।

वे सदैव अपने परिवार के प्रेरणास्त्रोत एवं मार्गदर्शक बने रहेंगे, समस्त नागर समाज उनके सराहनीय कार्यों के माध्यम से अपनी स्मृति में सजीव रखेगा।

कर्मयोगी श्री स्वाधीन मेहता की चिर विदाई

भ्रष्टाचार के प्रखर विरोधी एवं अपने मूल सिद्धान्तों, विचारों पर दृढ़ स्व. श्री स्वाधीन मेहता हमारे काका (पिताजी), अपने नाम के अनुरूप ही निर्भीक, साहसी, जोशीले, दृढ़ इच्छाशक्ति पूर्ण, सकारात्मक सोच एवं प्रभावशाली वाणी के धनी थे। 23 फरवरी, 2014 को उनके स्वर्गवास पर न सिर्फ हमारे मेहता परिवार को अपूर्णीय क्षति हुई है बल्कि उनके अनेकानेक प्रियजन, मित्र एवं समाज के लोग बड़ी कमी महसूस कर रहे हैं।

काका के दुर्लभ व्यक्तित्व का वर्णन करना वैसे तो संक्षिप्त लेखन मे संभव नहीं है, क्योंकि उनकी अनगिनत खूबियां व यादें अभी कल की बात जैसे आँखों में तैरती रहती है। फिर भी अपने इस रियल लाइफ हीरो अर्थात पिताजी के बारे मे, मैं अपने परिवारजनों की तरफ से लिखने की कोशिश कर रहा हूँ। राजस्थान (बूँदी) के अग्रणी स्वतंत्रता सेनानी परिवार के ऋषिदत्त मेहता व सत्यभामा मेहता के इस कनिष्ठ पुत्र का जन्म 20 फरवरी, 1932 को ब्यावर जेल में हुआ था। देश की स्वतंत्रता की परिकल्पना संजोए माता पिता ने अपने पुत्रों का नाम स्वतंत्र एवं स्वाधीन रखा। देशभक्ति व समाजसेवा के गुण तो इन्हें मां की कोख से ही प्राप्त हुए थे। विभिन्न सामाजिक/पारिवारिक विषमताओं/संघर्षों के बीच अपना बचपन गुजारने के बाद सन् 1955 में जोधपुर में इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी करके काका ने 35 वर्षों तक राजस्थान सरकार के सिंचाई विभाग की अनेक महत्वपूर्ण योजनाओं (माही डैम, चम्बल डैम, राजस्थान नहर इत्यादि) में अपनी सेवाएं प्रदान की। काका ने राजकीय सेवा पूर्ण इमानदारी, निष्ठा, मेहनत, कुशलता एवं सजगता से की। बचपन से अपने आखिरी समय तक खादी वस्त्र ही धारण किए। काका ने सदैव व्यवस्था में रहते हुए भ्रष्टाचार के विरूद्ध निर्भीकता से संघर्ष किया।

इस कारण सदैव आपको अपने नौकरशाहों व राजनेताओं से दिक्कतें आई पर अभूतपूर्व आत्मविश्वास पूर्ण काका कभी भी हतोत्साहित या परेशान नजर नहीं आए। बहुआया प्रतिभा के धनी काका ने अपने जीवन को सिर्फ सरकारी नौकरी तक सीमित नहीं रखा। काका अपने सार्वजनिक एवं सामाजिक जीवन में बहुत सक्रिय थे।

समाज सेवा एवं दूसरों की हर तरह से मदद करना तो मानो इनको जन्मघूटी में दिया था। बॉसवाडा में अपने एक दशक से ज्यादा के कार्यकाल (1973-1975) में आपने समाज के एवं अन्य युवक-युवतियों को सरकारी रोजगार प्रदान कराया। अनेक गरीब कर्मचारी (चतुर्थश्रेणी) जो अस्थायी नियुक्ति भी थे उन्हें स्थायी नियुक्ति प्रदान कराई। मुझे अच्छे से याद है कि उस समय भी सरकारी नौकरी दुर्लभ थी तथा सिफारिश/रिश्वत का बोल बाला था पर काका इन सबसे दूर थे। उन्हें किसी की भी मदद करने पर आत्मिक प्रसन्नता होती थी।

काका ने बूँदी - बाँसवाड़ा नागर समाज के बीच एक सेतु का कार्य किया तथा कई वैवाहिक संबंध तय कराने में इनकी मुख्य भूमिका रही। सिंचाई विभाग में काका ने सदैव अपने सहयोगियों विशेषकर कनिष्ठ कर्मचारी एवं मजदूर वर्ग की बहुत मदद की।

माही केयर नाम के एनजीओ के मुख्य प्रभारी होते हुए आपने बाँसवाड़ा के राजकीय अस्पताल में रक्तदान केंद्र की स्थापना सन् 1978 में की थी। इस संस्था के द्वारा आपने अस्पताल में कूलर एवं अन्य सुविधाऐं प्रदान कराई। काका ने अपनी राजकीय सेवा मुख्यतः बूँदी-कोटा (1955-73), बाँसवाडा (1973-75) एवं फलौदी (1975-90) तक की। हर स्थान पर वो सार्वजनिक जीवन में बहुत सक्रिय रहे तथा समाज सेवा के अनेक कार्य किए जिसमें नौकरी दिलवाना उनका मानो पैशन था।

1990 में फलौदी से अधीक्षण अभियंता के पद से सेवानिवृत्त होकर काका ने अपनी मातृभूमि बूँदी में निवास करने का निश्चय किया। आमतौर पर आदमी सेवानिवृत्ति के बाद विश्राम करना चाहेगा पर हमारे इस 58 वर्ष के नौजवान की तो अभी सेकण्ड इनींग्स बाकी थी। काका सरकारी नौकरी से बेदाग सेवानिवृत्त होकर सौद्धेश्य जीवन जीते हुए बूंदी के विकास के लिए समर्पित रहे। काका इंश्योरेंस सर्वेयर एवं अप्रूव्ड वेल्यूर की तरह 1990-2011 तक सक्रिय जीवन में रहे। एक उच्चपद से निवृत्त अधिकारी को सामान्यतः इस तरह के कार्य के लिए बहुत ज्यादा मानसिक दृढ़ता, परिश्रम व एडजस्टमेंट की जरूरत रही होगी। पर काका ने वर्क इज वर्शिप को चरितार्थ करते हुए दोनों क्षेत्रों में बहुत ख्याति अर्जित की तथा बूँदी शहर के विभिन्न वर्गों से जुड़े रहे। इन्होंने इस क्षेत्र में भी अपने सिद्धान्तों एवं विचारों से समझौता नहीं किया तथा बड़ी ईमानदारी एवं मेहनत से काम को निर्वाह किया। बूँदी के बार कोंसिल ने उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए उनके उत्कृष्ट रिपोर्टर की सराहना की।

कर्मयोगी काका ने काकी (हमारी स्व. माताजी) के वर्ष 1999 में निधन के बाद पूर्ण रूप से अपने को कार्य में समर्पित कर दिया। जिससे शायद पत्नी वियोग के अहसास को कुछ कम कर सके। सन् 2005 में आपने काकी के स्मरण में संतोषी माता के मंदिर की स्थापना की, जिसमें आज भी नियमित पूजा होती है।

काका सदैव बूँदी जिले के राजनैतिक एवं विकास की अपेक्षा से चिंतित रहे तथा अपने विचार समय-समय पर समाचार पत्रों एवं विभिन्न सार्वजनिक मंचों पर उठाते रहे। वह शुरू से अंत तक एक सच्चे कांग्रेसी रहे पर वर्तमान गिरते राजनैतिक स्तर पर क्षुब्ध रहे। पिछले दो दशकों तक वह बूँदी में सक्रिय जन प्रतिनिधि के रूप में

सक्रिय रहते हुए टाउन प्लेनिंग कॉमिटी, पेंशन समाज, बूंदी को-ऑपरेटिव बैंक, बार कोंसिल इत्यादि संस्थाओं में अग्रणीय रहे।

कर्म करना ही उनकी एक मात्र रूचि थी या तो वो प्रोफेशनल काम में, या पारिवारिक, सामाजिक कार्य में व्यस्त रहते थे। नहीं शब्द उनके शब्द कोष में नहीं था तथा सदैव समाधान पूर्ण विचार रखते थे।

चूंकि काका का जीवन बहिर्मुखी था इसलिए पारिवारिक जिम्मेदारी हमारी काकी ही संभालती थी। पर काका का वसुधैव कुटुंबकम में अटूट विश्वास रहा तथा अंत तक हमें मिलजुल कर रहने की शिक्षा देते रहे। स्वयं अपने भ्राता श्री स्वतंत्र मेहता (बड़े काका) के साथ राम-लक्ष्मण जैसे रहे। जहाँ बड़े काका अपने छोटे भाई की छोटी से छोटी चीज का ध्यान रखते थे वही छोटा भाई परिवार के बाहरी कार्य को निभाता था।

दोनों भाईयों का प्रेम देखते ही बनता था। काका को परिवार के हर बच्चे पर अटूट विश्वास था। परिवारजनों की फोटो खींचना काका का मुख्य शौक था। इंश्योरेंस सर्वेयर के फोटो में दुर्घटनाग्रस्त वाहन, ऑब्जेक्ट की फोटो खींचते-खींचते, फोटोग्राफी इनकी आदत हो गई और इस दीपावली पर उन्होंने प्रोफेशनल फोटोग्राफर को बुला कर परिवार की ग्रुप फोटो खिचवाई, मानो कहना चाहते थे यह मेरी आखिरी दीपावली है।

काका ने अपने माता-पिता की बड़ी श्रद्धा से सेवा की एवं उन्हीं संस्कारों का अनुसरण करते हुए मेरे भाई साहब (राकेश मेहता) एवं विशेषत: भाभी श्री (कुन्तल मेहता) ने उनकी सेवा की। वैसे तो उनके बारे में बहुत कुछ लिखने और कहने का मन है है पर अंत में यह भी कहूंगा काका-चाहे आज आप हमारे बीच नहीं है, पर आपका जीवन हमारे लिए अनुकरणीय है। हम आपसे प्रेरणा लेकर आगे जीवन में प्रगतिशील रहेंगे। जीवन के हर कठिन क्षण में आपका नेवर गिव अप एटीट्यूड और फाइटिंग स्पिरिट हमें एक पॉजिटिव एनर्जी प्रदान करेगी।

- रोहित एस. मेहता (मुंबई)
सम्पूर्ण परिवार की ओर से

पुण्य स्मरण

मातृ-पितृ देवो भव:

स्व. श्री जटाशंकर व्यास पुत्र स्व. श्री उमाशंकर व्यास माता स्व. श्रीमती गजराबाई व्यास का निधन दिनांक 8 मई 1983 को हुआ आपकी प्रेरणा एवं मार्ग दर्शन हम लोगों का संबल रहा। आप कायस्थ समाज खंडवा के कुल पुरोहित रहे आपकी सादगी एवं व्यवहार कुशलता से निमाड़ मालवा के अनेकों कायस्थ परिवार आज भी बाबू महाराज के नाम से उन्हें याद करते हैं। उनका शुभाशिष पाकर हमारा परिवार उनकी 31वीं पुण्यतिथि पर सादर नमन करता है।

स्व. श्रीमती दुर्गा बाई व्यास धर्मपत्नी स्व. श्री जटाशंकर व्यास का निधन 8 मई 1979 को हुआ आप नागर ब्राह्मण समाज के प्रतिष्ठित परिवार स्व. श्री विजयशंकर पन्नि स्व. श्रीमती गीता बाई की द्वितीय पुत्री थी आपकी मिलन सारिता मृदुभाषिता व्यवहार कुशलता के शुभाशीर्वाद से सम्पूर्ण परिवार उनकी 35वीं पुण्य तिथि पर सदा याद करते हुए कोटि कोटि प्रणाम

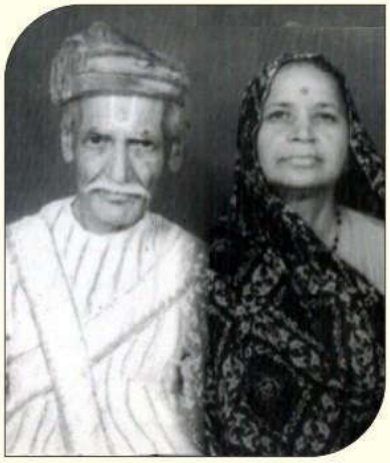

करते हैं।

परिवर्तिनि संसारे मृत: को वा न जायते
स जातो येन जातेन याति वंश शमुन्नतिम

प्रेषक
गिरिजा शंकर व्यास
एवं परिवार
खंडवा

प्रभावशाली बाबूजी को शत-शत प्रणाम

मेरे बाबूजी स्व. श्री गजेन्द्र नाथ नागर (सुपुत्र स्व. श्री रघुनाथ दवे) लखनऊ का जन्म 1912 में होली के अवसर पर हुआ था। उनका व्यक्तित्व बहुत सीधा सच्चा था। इसे विधाता का संयोग ही कहा जाएगा कि उनके पौत्र विक्रम दवे की पत्नी अ.सौ. पूर्वी दवे का जन्म भी होली के दिन ही हुआ। हमारे घर में प्रतिवर्ष होली के दिन बाबूजी के पसन्द के व्यंजन श्रीखंड और कचौड़ी बनते हैं। होली के दिन बाबूजी शाम को सफेद कुर्ता पायजामा पहनकर मोहल्ले में होली मिलने जाते तो सब लोग बहुत खुश होते। लोगों से जब बाबूजी की सहृदयता एवं मिलनसारिता की प्रशंसा सुनता हूं तो मन ही मन बहुत खुश होता।

बाबूजी का बचपन आगरा में अपने आदरणीय मामजी स्व. कन्हैयालाल नागर के सानिध्य में गोकुलपुरा की गलियों में बीता। हम सब परिजन उनकी एक सौ एकवीं वर्षगांठ पर शत्-शत् प्रणाम करते हैं।

अ. सौ. रजनी सुधीर नागर
(पुत्रवधू)

मौलेश नागर

को 7 वीं कक्षा में 89 % से पास होने पर हार्दिक बधाईयाँ

शुभेच्छु- कविता नगर, धर्मेश नागर,
दादा-दादी, नाना-नानी, समस्त नागर परिवार
उज्जैन (म.प्र.)

तृतीय पुण्य स्मरण...

ममता, प्यार, त्याग और शिक्षकीय आदर्श की प्रतिमूर्ति
जो सदैव हमारी यादों के सागर में समाहित रहती है।
तुम्हारे स्नेह की आकांक्षा में दर्शनरत नैन
जो कभी आंखों से ओझल नहीं होने देते।

श्रीमती प्रमिला बालकृष्ण मेहता

अवसान - दि. 19 जून 2011

तुम्हें शत-शत नमन

बालकृष्ण मेहता (पूर्वअध्यक्ष नागर परिषद भोपाल) राजेश मेहता (पुत्र), हंसा मेहता (पुत्रवधू), सुनीता मेहता (पुत्री), प्रदीप मेहता, (दामाद) सुनंदा मेहता (पुत्री), ऋचा मेहता (नाती), आशुतोष मेहता, अनुराग मेहता (पौत्र), अंकित मेहता (नाती), नेहा मेहता (पौत्री)।

14 वां पुण्य स्मरण

अंगुली थामे आपकी, हुई जिंदगी की शुरुआत
सफलता उन्नति जो भी पाई सब आपका आशीर्वाद...

कर्म, स्नेह, सेवा और समर्पण की प्रतिमूर्ति

डॉ. शरदचंद्रजी झा

अवसान : 26 जून 2000

श्रद्धावनत : समस्त झा परिवार, राऊ-इन्दौर

A SYMBOL OF QUALITY CHANDRASHREE LABORATORIES

CHANDRASHREE LABORATORIES & FARM PRODUCTS P. LTD., RAO (INDORE) 453 331
"CHANDRASHREE BHAWAN" 13, JANKI NAGAR INDORE, Mo. 98260-46013

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक मनीष शर्मा द्वारा श्री दीपक प्रिंटर्स
20,जूनी कसेरा बाखल, इन्दौर से मुद्रित एवं यहीं से प्रकाशित
सम्पादक : सौ.संगीता शर्मा

मो. 99262 85002